गीता मैत्री

JANUARY - JUNE 2024









॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

अध्यक्ष

प.पू. स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज

कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय जी मालपाणी, संगमनेर

अन्तर्राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

डॉ. आशू जी गोयल, लखनऊ



उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण व्यास, हैदराबाद

कोषाध्यक्ष

श्री सिद्धार्थ हवेलिया



गीता मैत्री

A Learngeeta Six-MonthlY Newsletter



मुख्य सपादक

डॉ. आशू गोयल

सह सम्पादक

सुश्री कविता वर्मा

लेखक एवं संकलनकर्ता

- डॉ. विभा देशमुख - नागपुर
- श्रीमती विनोद बत्रा - दिल्ली
- श्री सुनील कापड़ी - मुम्बई
- श्रीमती पौषाली घोष - बेंगलुरु
- सौ. मंजुषा गिरीश वरुडकर - हिंगोली
- श्रीमती निशा अजय शर्मा - भोपाल
- डॉ. अपर्णा होलकुंडकर - भोपाल
- श्रीमती डॉ. अरुणा के. आर - बेंगलूरु
- श्री सुरेश दाधीच - मुंबई

मुख्य पृष्ठ

सुश्री कश्मीरा, ठाणे

ई-बुक डिजाइनर

सुश्री शिप्रा सिंह

एक्सेल इलेक्ट्रोस्टेट, लखनऊ



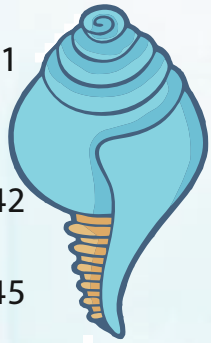
अनुक्रमणिका





- संत उद्गार 03
- स्वे स्वे कर्मण्यभिरत: 04 - 05
- सम्पादकीय - पृच्छामि त्वाम् 06 - 07
- विभिन्न शुभारम्भ समारोह 08 - 26
- आओ गीता सेवी बनें 27 - 29
- गीता चिन्तनिका सत्र 30 - 46
- चरण पादुका सेवा - अयोध्या धाम 47 - 49
- गीता भक्ति अमृत महोत्सव 50 - 60
- रजत(25वाँ) सम्पूर्ण गीता परायण 61 - 63
- गीता स्नेह मिलन - UAE, कर्नाटक 64 - 66
- Overview of Geeta Pariwar USA 67 - 69
- NPS Trainning For Faculties 70 - 97
- Linguistic Kaleidoscope 98 - 128
- Soulful Stanzas 129 - 131
- Pondering Pages of Geeta Maitri For Curious minds.... 132 - 142
- Volunteer's Brigade 143 - 145
- गीताव्रती साधक सूची 146 - 151
- गीता विचक्षण साधक सूची 152 - 158
- आँकड़ों की नज़र में ... 159







प.पू स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज
संस्थापक अध्यक्ष गीता परिवार, कोषाध्यक्ष रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास

सन्त वाणी

आज सप्तम संस्करण के प्रस्तुतिकरण पर मैं अत्यंत आह्लादित हूँ। गीता परिवार के इस पुण्य कार्य को हम सेवा के रूप में श्रीकृष्ण भगवान के प्रिय होने हेतु कर रहे हैं। यह साधना है, अनेक सेवाभावी काल की चुनौती स्वीकार कर इस सेवा मे रत हैं। देश बदल रहा है, वातावरण बदल रहा है, लोग गीताजी पढ़ने के लिए लालायित हैं, चक्र घूम रहा है, इस गीता शब्द राशि का संरक्षण होना चाहिये। जिस गीता को हम वैदिकों से सुनते आ रहे हैं वह गीता प्रशिक्षण में आ गयी तो राष्ट्र का उत्थान होगा। शिवाजी महाराज कहते थे, 'राज्य व्हावे ही तर श्रींची इच्छा' उसी प्रकार यह राष्ट्र ईश्वर इच्छा से प्रबल होने वाला है। गीता परिवार का राष्ट्रोत्थान में सूक्ष्म अंश होगा, यह मेरा आशीर्वाद है।

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व, जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव, निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥11.33॥

अर्जुन को भगवान ने जिस प्रकार से धर्म की स्थापना हेतु उत्साहित किया, उसी प्रकार अमृतकाल का शुभारम्भ हो रहा है। चारों ओर नयी जागृति दिखाई दे रही है। सभी कार्यकर्ता कम से कम एक घंटा नियमित कार्य कर रहे हैं। हमारे कार्यकर्ताओं ने ये श्लोक अपने सामने रखा- "य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति" - हम यह जो कार्य कर रहे हैं, भगवान की सेवा के रूप में कर रहे हैं। स्वयं गीता का अध्ययन करना, औरों को गीता पढ़ाना और गीता को अपने जीवन में लाने का प्रामाणिक प्रयास करना यह साधना श्रीमद्भगवद्गीता एवं श्रीकृष्ण की दृष्टि से सर्वोच्च साधना है। भगवान को प्रिय होने का इससे उपयोगी और सरल कोई मार्ग नहीं ऐसा स्वयं भगवान कहते हैं।

चार वर्ष पूर्व 23 जून 2020 को स्थापित लर्नगीता रूपी घुटनों पर रेंगने वाला शिशु अब मैराथन रेस में सहभागी होने जा रहा है। इस महत्कार्य का श्रेय राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष व अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष के कुशल नेतृत्व को प्रदान कर मैं अपना आचमन श्रीकृष्ण भगवान को अर्पित करता हूँ।



स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।





डॉ. संजय मालपाणी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार

भगवद्गीता विजय का शास्त्र है। रणांगण में दुविधा से हतप्रद अर्जुन का गिरा हुआ गाण्डीव पुनः उसे उठाने की प्रेरणा देने हेतु तथा उसे युद्ध में विजय प्राप्त हो इस कारण से ही गीता का उद्भव हुआ।

जून - जुलाई में अनेक छात्रों से मेरा वार्तालाप होता है। कौन से महाविद्यालय में तथा किस कोर्स में प्रवेश लेना है इस दुविधा से घिरे अनेक छात्र एवं अभिभावक मुझे मिलने पहुँचते हैं। किसी छात्र को भाषा विषय में रूचि होती है परंतु अभिभावक उसे विज्ञान और अभियांत्रिकी करने की सलाह देकर एवं जबरदस्ती करने हेतु मेरे पास ले आते हैं।

पिछले दिनों ऐसे ही एक छात्र ने ११वीं की परीक्षा नहीं दी और घर पर वह अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ है ऐसा बताया। जब घर वालों को सच्चाई का पता चला तो बालक घर से भाग गया। पुलिस की सहायता से बालक का पता चला तो उसे पकड़कर घर लाया गया। अगले दिन पिता बालक को लेकर मेरे पास पहुँचे। मैने उससे अकेले में बात की तो पता चला कि उसे कला शाखा में भाषाओं का अभ्यास करना था, परन्तु पिता ने उसे जबरदस्ती से विज्ञान शाखा में दाखिला करवाया। छात्र आरम्भ में कुछ दिन महाविद्यालय गया परंतु उसे रसायन शास्त्र, पदार्थ विज्ञान आदि विषयों में बिलकुल भी मजा नहीं आयी तो उसने कॉलेज में जाना ही बंद कर दिया। परिणामस्वरुप वह अनुत्तीर्ण हुआ। अब उसे ११वीं की परीक्षा पुनः देकर 12वीं में कला शाखा में प्रवेश देने का आश्वासन दिया गया। परिजनों को भी अपनी गलती समझ में आयी और मुझे यह विश्वास है की यह छात्र भाषा शास्त्र में निश्चित ही बहुत आगे पहुँचेगा।

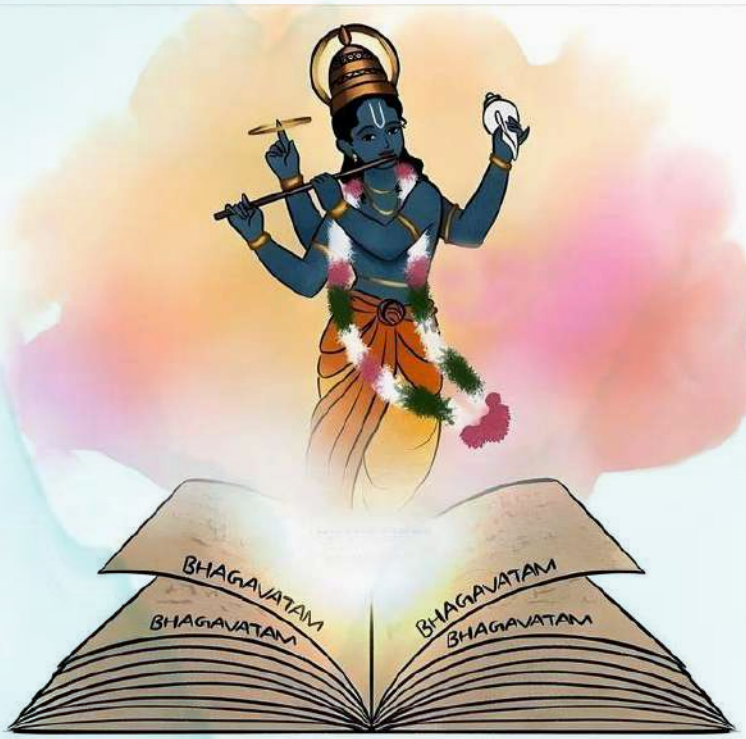
अमरीका में डॉ. हॉवर्ड गार्डनर नामक एक संशोधक ने 1982 में अपना एक संशोधन प्रकाशित किया। उन्होंने आठ प्रकार की मूलभूत बुद्धिमत्ताओं के मस्तिष्क में केंद्र कहाँ हैं यह सिद्ध किया। इसमें भाषिक, तार्किक, सांगीतिक, अंतर व्यक्तिगत, परस्पर व्यक्तिगत, शारीरिक, प्राकृतिक तथा अवकाशीय बुद्धिमत्ता इन 8 मूलभूत बुद्धिमत्ताओं का समावेश है। एक बहुत बड़ा बदलाव इस संशोधन के पश्चात् शिक्षा क्षेत्र में आया। हर छात्र की कौनसे प्रकार की बुद्धिमत्ता अधिक है यह जानकर उसे उससे संबंधित क्रियाकलापों में आगे बढ़ने से छात्र अपनी क्षमता का सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सकता है, यह सिद्ध हुआ। सारे विश्व के शिक्षा क्षेत्र में इस संशोधन के आधार पर बडे परिवर्तन किये गये। परंतु गीता में यह बात भगवान श्रीकृष्ण ने हजारों वर्ष पहले अर्जुन को कही। भगवान कहते है

कि जो अपने अंदर छिपी क्षमता को अपना कर्म बना लेता हैं उसे उस क्षेत्र में सिद्धि याने यशस्विता प्राप्त हो जाती है।

अर्जुन श्रेष्ठ धनुर्धर एवं योद्धा है। अर्जुन कर्म एवं गुणों से सर्वोत्तम क्षत्रिय है। अतः उसका धर्म सज्जनों की रक्षा एवं दुर्जनों का विनाश करना हैं। उसे सन्यास या अन्य विचार का त्याग कर युद्ध करना चाहिए। भगवान तो यह भी कहते हैं "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।" अर्थात् स्वधर्म का पालन करते हुए मृत्यु भी हो जाए तो ठीक है परंतु परधर्म भयावह होता हैं।

भगवान का "स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः" यह निर्देश हम सभी के लिए जीवन बदलने वाला हो सकता है। हमारा सहज स्वभाव क्या है इसकी खोज करने के पश्चात् हम उसी कार्य को अंगीकृत करते है तो जीवन आनंदमय बनता है। वह कार्य हमें बोझ नहीं लगता अपितु उस कार्य में हमें रस प्राप्त होता है। और उस कार्य में हम महारथ प्राप्त करके यशस्विता के शिखर पर पहुँचते है। अतः इस श्रीकृष्ण वचन को हमें सदैव याद रखकर उस पर मार्गक्रमण करना चाहिए।

- डॉ. संजय मालपाणी





सम्पादकीय



पृच्छामि त्वाम् !



डॉ. आशू गोयल
अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार
एवं कार्यक्रम निदेशक, लर्नगीता

मनीषियों ने कहा है कि अज्ञान का कोई अस्तित्व नहीं होता है, प्रत्युत ज्ञान का अभाव ही अज्ञान है। अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तित करने हेतु मन में जिज्ञासा का प्रादुर्भाव होता है जिसे भगवद्गीता में भगवान ने तीसरी प्रकार की भक्ति बताया। " आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥ 7.16॥" आर्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु और ज्ञानी यह चार प्रकार के मेरे भक्त हैं, ऐसा भगवान ने कहा। जिज्ञासाओं के निवारण से ही ज्ञान की प्राप्त होती है। शास्त्रों एवं उपनिषदों का प्राकट्य जिज्ञासा के गर्भ से हुआ है। उपनिषद् का अर्थ है गुरु के समीप बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। केनोपनिषद् का आरम्भ प्रश्न से ही हुआ - 'केनेषितं पतति प्रेषितं मनः' "किसके द्वारा प्रेषित यह मन अपने लक्ष्य पर जाकर गिरता है।" बृहदारण्यकोपनिषद् में मैत्रेयी ने याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछा - "सा होवाच मैत्रेयी येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्यां यदेव भगवान्वेद तदेव मे ब्रूहीति ॥" नचिकेता ने यम से अति गोपनीय काल के विषय में प्रश्न पूछें - "मृत्यो यस्मिन् महति साम्पराये यत् इदं विचिकित्सन्ति नः तत् ब्रूहि।" सारे उपनिषद् जिज्ञासा और समाधान से ही भरें हैं।

रामचरितमानस में भी पार्वती जी ने भगवान शंकर के सामने अपनी जिज्ञासा प्रकट की - "अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया॥" भारद्वाज जी ने याज्ञवल्क्य के सामने भी रखा - "रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही। कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही॥" इसी प्रकार गरुड़ जी ने काकभुसुंडि जी से कहा - "नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी॥"

इसी प्रकार सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय में ये गुरु शिष्य संवाद सर्वत्र व्याप्त है। वास्तव मे जिस जिज्ञासा का आरंभ स्वयं से स्वयं में होता है अर्थात् आरम्भ में 'त्वां पृच्छामि' के स्थान पर 'स्वामेव पृच्छामि' की स्थिति होती है किन्तु जब साधक को उसका उत्तर नहीं प्राप्त होता है तो वह आप्त पुरुष, संत, ज्ञानी अथवा शास्त्र की शरण में जाता है एवं 'पृच्छामि त्वां' का आविर्भाव होता है।

स्वामी दयानन्द जब ज्ञानप्राप्ति हेतु प्रथम बार विरजानंद जी के घर पहुँचे तथा दरवाजा खटखटाया तो विरजानन्द जी ने भीतर से पूछा - 'कौन?'

इसका उत्तर दयानन्द जी ने दिया - 'बहुत दिनों से इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ रहा हूँ किन्तु मिल नही पाया अतः यही

जानने हेतु आपके द्वार पर आया हूँ।'

विरजानन्द जी ने दरवाजा खोल दिया और कहा- 'मैं तुम्हारे जैसे जिज्ञासु की ही प्रतीक्षा में था।'

परम पिता परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से हमें सद्गुरु के रूप में प.पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज जैसे शुद्ध सन्त का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। अब हमारा कर्तव्य है कि हम दयानन्द जी के समान बनें एवं हम अब जिज्ञासा के साथ बस इतना बोलना है - 'पृच्छामि त्वां....'। भगवान ने भी अर्जुन को गीता के चतुर्थ अध्याय के 34वें श्लोक में यही कहा है -

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥4.34॥

आज विश्व को जो यह गीता जैसा महान ग्रंथ प्राप्त हुआ है वह अर्जुन के 'पृच्छामि त्वां' से ही अवतरित हुआ है, और यह भाव श्रीकृष्ण व अर्जुन के पचास वर्षों के सम्बन्ध में कभी नहीं आया किन्तु जब कुरुक्षेत्र के समरांगण में अर्जुन मोहग्रस्त हुआ तो आगे का मार्ग दृष्टिगोचर न होने के कारण अर्जुन भगवान की शरणागत हुए और उनके मुख से गीता का जन्म देने वाला यह श्लोक साकार हुआ -

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥2.7॥

एक सन्त के श्रीमुख से सुना कि जब जीवन में कभी अर्जुन जैसी दयनीय दशा हो जाये तथा कर्तव्य एवं अकर्तव्य के मध्य संशय उत्पन्न हो जाये तो गीतामाता को हाथ में रखकर 108 बार इस श्लोक का अनुष्ठान करने से भगवान किसी न किसी रूप में समाधान कर देते हैं।

'पृच्छामि त्वां' अर्थात् जिज्ञासु की वृत्ति हम सबमें जागृत हो और किसी तत्त्वज्ञानी महात्मा से उसका समाधान पाकर हम अपने मानव जीवन का कल्याण कर सकें, यही प्रभुचरणों में प्रार्थना।

गीता मैत्री के इस सप्तम संस्करण में प्रति संस्करण की भांति विशेष उत्सवों, गीता मैत्री मिलन एवं विभिन्न भाषाओँ के लेख तथा साथ में न्यूजलैटर को आकर्षित बनाने हेतु कविताओं एवं खेलों का भी समावेश किया गया है। इस बार के संस्करण में गीता भक्ति अमृत महोत्सव एवं फैकल्टी NPS ट्रेनिंग के सत्रों को भी सचित्र लिखा गया है। आशा है पाठकों को पिछले छह महीनो में लर्नगीता में सम्पन्न हुई सभी क्रियाओं कि जानकारी सुलभता से मिल पायेगी।

आप सभी पाठकों को भी आवाहन करता हूँ कि अपने लेख, कवितायें, चित्रादि सामाग्री newsletter.geetamaitri@gmail.com पर अवश्य भेजें।

- डॉ. आशू गोयल



विभिन्न शुभारम्भ समारोह

L1 Opening Ceremony

30th Batch - Jan24

05/01/24

https://www.youtube.com/live/1493Rtvkfrw?si=Zxv9C8Icx2Ev-5Tc



परम श्रद्धेय स्वामी श्री गोविंददेव जी महाराज को भावपूर्ण नमन करते हुए हमारे गीता परिवार के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ. आशू जी गोयल भैया ने सभी को प्रेम एवं उत्साह से संबोधित करते हुए एवं स्तर 1 के साधकों का आनन्दपूर्वक अभिनन्दन करते हुए कहा कि हमने गीता जी को नहीं चुना अपितु गीता जी ने हमें चुना है। भगवान वेदव्यास जिन्होंने स्वयं गीता जी के श्लोकों का संपादन किया एवं अनेकों ग्रंथ लिखे वे स्वयं गीताजी की महिमा में कहते हैं- "गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनि:सृता॥" अर्थात् गीता जी को पढ़ लिया तो अन्य शास्त्र के अध्ययन की क्या आवश्यकता? गीता तो स्वयं भगवान कृष्ण के मुख से उद्भासित हुई है अपने आपमें परिपूर्ण हैं। गीता जी के 18वें अध्याय के 68वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है - "य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशय:॥" अर्थात् 'मुझमें पराभक्ति से आश्रय करके जो इस परम गोपनीय संवाद (गीताग्रंथ) को मेरे भक्तों में कहेगा, वह मुझे ही प्राप्त होगा इसमें कोई संशय नहीं है।'

यह ईश्वर की कृपा है, हमारे पुर्नजन्म के सुकृत हैं अथवा हमारे पूर्वजों का आशीर्वाद है जो हमें गीता पढ़ने का सौभाग्य मिला। निश्चय ही हमारे पुण्योदय हुए हैं। परम श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविंददेव गिरिजी के आशीर्वाद से 1986 में गीता परिवार की स्थापना हुई जो आज विशाल वट-वृक्ष का रूप लेता जा रहा है। आदरणीय आशू भैया ने गीता परिवार की संपूर्ण कार्य प्रणाली के विषय में साधकों को बताया। अमेरिका से गीताव्रती हेतल पटेल दीदी ने

प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय संजय मालपाणी भैया ने आज के विशेष अतिथि पूज्य संत श्री सुधांशु जी महाराज के चरणों में वंदन निवेदन किया। हमारे गीता परिवार के संस्थापक एवं लर्नगीता प्रकल्प के प्रेरक मार्गदर्शक तथा राम जन्मभूमि न्यास के कोषाध्यक्ष एवं कृष्ण -जन्मभूमि



न्यास के उपाध्यक्ष परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज भी पधारें हैं। सन्तों की उपस्थिति तो साक्षात् आशीर्वाद स्वरूप होती है। गुरुजनों के स्वागत वंदन में संगमनेर महाराष्ट्र के ध्रुव ग्लोबल स्कूल के छात्र छात्राओं द्वारा सुंदर गुरु योग वंदना प्रस्तुत की गई।

आदरणीय संजय भैया ने लर्न गीता प्रकल्प की अद्भुत सफलता का श्रेय गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ. आशू भैया जो कि लखनऊ उत्तर प्रदेश में निवास करते हैं एवं बड़े उद्यमी भी हैं, को देते हुए उनका परिचय दिया।

आ. आशू भैया ने स्वामी जी महाराज एवं परम पूज्य सुधांशु जी महाराज के चरणों में वंदन निरुपित किया। आशू भैया ने बताया कि 1986 से 2020 तक अर्थात् लगभग 34 वर्षों तक गीता परिवार द्वारा गीता जी की ऑफलाइन कक्षाएं ली जाती थीं। किंतु संत कृपा कब किस रूप में हो जाये पता नहीं।

2019 नवम्बर-दिसम्बर में स्वामी जी का गीता परिवार के कार्यकर्ताओं को यह निर्देश हुआ कि गीता जी के प्रसार - प्रचार पर विशेष ध्यान देने का समय आ गया है उसी समय स्वामी जी ने ध्येय वाक्य दिया - 'घर घर गीता, हर कर गीता'। इस निर्देश के साथ ही वरिष्ठ गीतासेवियों ने योजना बनाने का कार्य आरंभ ही किया था कि कोविड की आपदा ने जीवन की गति को विराम देना प्रारंभ कर दिया, आपात स्थिति थी, सब कुछ थमने लगा था। चहुँ ओर नैराश्य एवं भय व्याप्त हो गया था तब स्वामी जी का पुन:



निर्देश हुआ कि इस आपदा को चुनौती के रूप में लेना है गीता परिवार के इस कार्य को गति दीजिए।

संतों की कृपा होती है तो कार्य फलित होते हैं; आ. संजय भैया, आ. आशू भईया एवं गीता परिवार के वरिष्ठ सेवियों ने मिलकर योजना को मूर्त रूप देना प्रारंभ किया एवं कोविड काल में Learngeeta.com का आरंभ हुआ।

ऑनलाइन कक्षाओं का फॉर्मेट जिस प्रकार से तैयार

किया गया था कि 500 - 700 साधक जुड़ेंगे किन्तु फॉर्म जब नामांकन हेतु WhatsApp, Facebook इत्यादि पर भेजे गये तो अनुमान से कहीं अधिक 2500 लोगों के नामांकन हो गये। उसके उपरांत तो यह यात्रा चल निकली, द्वितीय वर्ग में 4000, तृतीय में 7000 फिर 11000, 20000.....और ये उत्तरोत्तर बढ़ती जाने लगी। संतों का संकल्प एवं भगवान की कृपा ही ऐसा अद्भुत कार्य करती है।

पूज्य सुधांशु महाराज को संबोधित करते हुए आशू भैया ने कहा कि आज से प्रारंभ होने वाले 30वें बैच में आपके आशीर्वाद के साथ 82 देशों से 47000 से भी अधिक साधक 13 भाषाओं में सुबह 5 बजे से रात्रि 2 बजे तक 19 समय सत्रों में गीता जी सीखना प्रारंभ करेंगे। भैया ने कहा गीता पर भाष्य, टीकायें प्रवचन तो अनेकों संतों, महापुरुषों के उपलब्ध हैं किन्तु



इतने शुद्ध उच्चारण के साथ गीता जी पढ़ पाना इतना सुलभ कभी भी नहीं था वह भी पूर्णतः निःशुल्क। अब तक ज़ूम कक्षाओं में 180 देशों से 19 समय सत्रों पर 13 विभिन्न भाषाओं में अलग - अलग देशों से प्रांतों से के 8 लाख, 6 हजार, 932 साधक गीता जी सीख चुके हैं एवं अपने - अपने सुविधा जनक समय पर अपने - अपने स्थान पर सीख भी रहे हैं तथा यह अनवरत बढ़ते रहने वाला है।

इस अवसर पर आशू भैया ने रामचरित मानस की चौपाई उद्धृत करते हुए कहा कि-

गरल सुधा रिपु करही मिताई
गोपद सिंधु अनल सितलाई
गरुड़ सुमेरू रेणू सम ताहि
राम कृपा करि चितवा जाहि

अर्थात् जिस पर राम जी की कृपा होती है उसके लिए समुद्र भी मीठा हो जाता है अग्नि भी शीतल हो जाती है एवं विष भी अमृत समान हो जाता है। आप पूज्य सुधांशु जी महाराज जो स्वयं ही सुधा के सागर स्वरूप हैं इस अमृतमय वातावरण में आपसे निवेदन है कि गीता के सभी साधकों को अपना आशीर्वाद प्रदान कीजिए।

भैया ने 82 देशों से जुड़ रहे साधकों को संबोधित करते हुए उनका हार्दिक स्वागत अभिनंदन एवं उत्साह वर्धन किया एवं साधकों की उत्सुकता के निवारण हेतु बताया कि कक्षाओं का स्वरूप कैसा होता है। आदरणीय संजय भैया ने आशू भैया का धन्यवाद करते हुए गीता प्रात्यक्षिक प्रारंभ किया। साधक गीता के श्लोक किस प्रकार कंठस्थ करते हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करने हेतु भैया ने श्रद्धेय स्वामी जी से निवेदन किया कि वे साधकों से श्लोक पूछें।

अलवर राजस्थान से 39 वर्षीय गीताव्रती सोनिया विजय दीदी ने स्वामी जी द्वारा पूछे गए श्लोक सुनाये। गीताव्रती रिचा पटेल दीदी ने भी गीता प्रात्यक्षिक में श्लोकांक से पूछे गए श्लोक सुनाये। सुन्दर आश्चर्य रहा

गीता पथिक की तैयारी कर रहीं 82 वर्षीय प्रेरणा दीदी मेहता, इन्हें 8 अध्याय कंठस्थ हैं एवं 12 अध्याय कंठस्थ करके पथिक की परीक्षा देने की तैयारी कर रही हैं। दीपक भैया अमेरिका से हैं इन्होंने श्लोक तो कंठस्थ किये ही हैं साथ में उनके अर्थ भी बता कर सभी को आनंदित कर दिया।

आज के शुभारम्भ समारोह में गीता विचक्षण साधकों का विशेष सम्मान किया गया। अब तक 86 साधकों ने श्लोकांक के साथ गीता जी कंठस्थ कर ली है एवं अब वे श्लोकार्थ कक्षामें प्रवेश ले चुके हैं। आदरणीय संजय भैया ने साधकों को परम सौभाग्यशाली बताया कि आज के सत्र में उन्हें आशीर्वाद देने हेतु परम पूज्य संत श्री सुधांशु जी महाराज भी विद्यमान हैं। पूज्य स्वामी श्री सुधांशु जी महाराज का परिचय देते हुए कहा कि वे विश्व जागृति मिशन के अंतर्गत विगत 31 वर्षों से भारत में 90 सेवा केंद्र चल रहे हैं, जिसमें कथायें सत्संग के अतिरिक्त कई प्रकार की सेवाएँ दी जाती हैं। संत के लक्षण होते हैं मानव सेवा।

सुधांशु जी महाराज के निर्देशन में फरीदाबाद में करुणा सिन्धु चिकित्सालय चलता है जिसका लाखों लोगों को लाभ हुआ है। इसके अतिरिक्त अनाथालय, वृद्धाश्रम, गौशाला इत्यादि देश विदेशों में वेद संस्कृति गुरुकुल के आप परिवाहक हैं। श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी ने संत श्री सुधांशु जी महाराज के विश्व जागृति मिशन की प्रशंसा की एवं संत श्री से निवेदन किया कि वे अपनी मधुतुल्य वाणी से सभी साधकों को अपना अमूल्य आशीर्वाद देकर कृतार्थ कीजिए। पूज्य स्वामी जी ने संत श्री सुधांशु जी महाराज को बारम्बार प्रणाम निरुपित किये। उन्होंने कहा -

'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे संतु निरामया।'

इसी को चरितार्थ करता है यह श्लोक। हम सभी अत्यंत भाग्यशाली हैं कि हमारे देश में संत धार्मिक शिक्षा के साथ समाज की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु भी कार्यशील हैं। परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज वेदों के ज्ञाता हैं एवं भारत में आपके 37 वेद गुरुकुल चल रहे हैं जिनमें छात्रों को वेद, उपनिषद, ब्रह्मसूत्र की शिक्षा के साथ साथ व्यावहारिक शिक्षा



भी दी जाती है। स्वामी जी वेद संस्कृति की पुनर्स्थापना हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

श्रद्धेय स्वामी जी ने गीता- परिवार के सभी कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए अनेक आशीर्वाद दिये आपने कहा कि गीता परिवार की सफलता का श्रेय सभी सेवी कार्यकर्ताओं को है जो सतत सेवा में लगे रहते हैं ये रुकना ही नहीं चाहते दिन-रात निरंतर सेवा हेतु तैयार रहते हैं। पूज्य स्वामी जी ने कहा कि मैं अत्यंत दृढ़तापूर्वक कहना चाहता हूँ कि सभी कार्यकर्ता नम्रतापूर्वक सेवा में लगे रहते हैं इसलिए ऐसा लगता है कि यही कारण है कि भगवान

श्रीकृष्ण की कृपा इस गीता प्रकल्प पर है।

आदरणीय आशू भैया ने परमश्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के अनुग्रह को साष्टांग प्रणिपात करते हुए कहा कि स्वामी जी का सूक्ष्म आशीर्वाद सदैव ही हमारे साथ रहता है जो हमें सहस्रों हाथियों का बल प्रदान करता है। गीता परिवार ने लर्न गीता कक्षाओं के साथ अन्यान्य सेवायें भी आरंभ की हैं जिसमें गीता मैत्री नामक षण्मासिक पत्रिका भी है।

आज के विशिष्ट समारोह में संत श्री सुधांशु जी महाराज की उपस्थिति में गीता मैत्री न्यूजलैटर का प्रकाशन भी किया। आदरणीय आशू भैया ने बताया कि इस पत्रिका में "जुलाई 2023 से लेकर दिसम्बर 2023 तक" के विभिन्न कार्यक्रमों का उल्लेख है। जिसमें कि साधकों के आलेख, साधकों की विभिन्न गतिविधियाँ, गीता परिवार से जुड़ने के उपरांत साधकों के जीवन में आये अद्भुत परिवर्तन, कार्यक्रमों की प्रतिक्रियायें, विभिन्न भाषाओं में लेख-आलेख, गीता - प्रश्नोत्तरी, गीता-ज्ञान वर्ग पहेली इत्यादि प्रकाशित किये गये हैं।

साधकों हेतु श्रद्धेय स्वामी जी एवं आदरणीय संजय भैया के संदेश भी प्रकाशित किये गए हैं। आदरणीय आशू भैया ने बताया गीता परिवार द्वारा विभिन्न धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें 10 भाषाओं में सरल पठनीय गीता, त्रिरत्नीय गीता जिसमें गीता जी, श्रीविष्णुसहस्रनाम एवं श्रीरामरक्षा स्तोत्र इसप्रकार 25 पुस्तकें न्यूनतम मूल्य पर उपलब्ध करा रहे हैं।

श्रद्धेय स्वामी जी द्वारा प्रदत्त ध्येय वाक्य '**घर घर गीता, हर कर गीता**' को सार्थक करने की ओर गीता परिवार का यह ३० वाँ वर्ग एक और सफल कदम हो गया।

आदरणीय डॉ. आशू जी गोयल भैया ने योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में प्रार्थना वंदन करते हुए परम पूज्य स्वामी जी एवं संत श्री सुधांशु जी महाराज के आशीर्वाद की अभिलाषा करते हुये साधकों को वर्ग के शुभारम्भ के अवसर पर अनेकानेक शुभकामनायें देते हुए आज का कार्यक्रम पूर्ण किया।





L1 Opening Ceremony

31st Batch - Mar24

01/03/24



https://www.youtube.com/live/3UkwbNM-FAM



1 मार्च 2024 को गीता जी के चार धाम की यात्रा के स्तर -1 का शुभारंभ समारोह आयोजित किया गया। सर्वप्रथम गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय डॉ. आशू गोयल जी ने साधकों को सम्बोधित किया। उन्होंने बताया कि लर्नगीता संथा विश्व की सबसे बड़ी गीतासंथा है। उन्होंने कहा कि यह हम सब पर भगवान की असीम कृपा है कि हम सब गीता कक्षा के लिए चुने गए हैं। हमनें गीता जी को नहीं चुना वरन् गीता जी ने हमें चुना है। महर्षि वेदव्यास जी लिखते हैं 'गीता सुगीता कर्तव्या, किमन्यै शास्त्र विस्तरै:' अर्थात् गीता सब ग्रंथों का सार है। जब सार प्राप्त हो जायें तो विस्तार की क्या आवश्यकता। भगवान गीता के 18वें अध्याय में कहते हैं:-

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः॥

जो भी इस गीता शास्त्र को पढ़ेगा, श्रवण करेगा अथवा मेरे भक्तों को सुनाएगा वह मनुष्य मुझे ही प्राप्त होगा। आदरणीय आशू भैया ने गीता कक्षाओं की रूपरेखा के विषय में विस्तार से समझाया। गीता कक्षाओं में साधक सप्ताह में पांच दिन शुद्ध उच्चारण करना सीखते हैं तथा शनिवार व रविवार के दिन विवेचन सत्र आयोजित किये जाते हैं, जिसमें साधकों की शंकाओं का भी निवारण किया जाता है। साधक गीता श्लोक कण्ठस्थ कर जीवन में आत्मसात कर सकते हैं। मानव जीवन अनमोल है। मानव शरीर देवताओं को भी दुर्लभ हैं।

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथनि गावा।।

हमें भगवत्कृपा से मानव जीवन मिला है। आवश्यकता है जीवन का उद्धार करने की। जिसके लिए हम सब गीता परिवार में सम्मिलित हुए हैं। यहाँ विश्व के 195 देशों में से 180 देश गीता परिवार से जुड़ चुके हैं। प्रातः 5 बजे से रात्रि 2 बजे तक ऑनलाइन कक्षायें सुचारू रूप से चलती हैं। परमपूज्य गुरुदेव

स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज का उद्देश्य है "घर घर गीता, हर कर गीता" इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु 8000 से अधिक गीतासेवी निःस्वार्थ सेवा कार्य में आनंद की अनुभूति से सराबोर रहते हैं। आदरणीय आशू भैया ने बताया कि गीता पठन - पाठन की साम्रगी निःशुल्क प्रदान की जाती है। उन्होंने कक्षा में अनुशासन के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

इसके पश्चात् गीता प्रवीण सुश्री कविता वर्मा दीदी ने श्रीमती रेखा झंवर दीदी को योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण जी की प्रार्थना के लिए आमंत्रित किया। मधुर वाणी में प्रार्थना करके रेखा झंवर दीदी ने वातावरण को सकारात्मकता से भर दिया। प्रार्थना के पश्चात् ग्लोबल एकेडमी के छात्रों ने भगवान शंकराचार्य जी द्वारा रचित गुरु अष्टकम् स्तोत्र पर योगमय दीप प्रज्ज्वलन की मनमोहक प्रस्तुति दी। जिसके बोल इस प्रकार हैं:-

शरीरं सुरुपं तथा वा कलत्रम्,
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम्।
मनश्चैन लग्नम गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं, ततः किं, ततः किं, ततः किम्॥

अर्थात् यदि यह मन गुरुचरणों में नहीं लगता है तो अन्य ऐश्वर्यों से क्या प्रयोजन।

इसके पश्चात् गीताव्रती व गीता विचक्षण प्रात्यक्षिक आमंत्रित किए गए। बेंगलुरु से चौदह वर्षीय गीताव्रती अर्जुन राव भैया ने अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। मुंबई से 89 वर्षीय श्री रामचन्द्र कुलकर्णी जी ने उम्र के पड़ाव में गीताव्रती परीक्षा उत्तीर्ण कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। गीता विचक्षण अर्चना शर्मा दीदी ने तीन व पांच के पहाड़ा के क्रम से श्लोक सुनाकर अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। जयपुर से दिव्यांग दीपिका मनधानिया दीदी जिन्हें वाणी की समस्या थी अब गीता अभ्यास से शुद्ध बोलने लगी हैं। गीता जी का शुद्ध उच्चारण व कंठस्थीकरण कर सबको आश्चर्यचकित कर दिया। दीदी अब गीता परिवार में कॉलिंग व माइग्रेशन की सेवाएं दे रही हैं। भगवत् कृपा से सबकुछ संभव है।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम्॥

समारोह में भगवत् स्वरूप विशेष अतिथि पूज्य स्वामी श्री जितेन्द्र नाथ महाराज जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि आज भगवान कृष्ण अवश्य प्रसन्न होगें। उन्होंने बताया कि महाराष्ट्र में एवं देश में अन्य स्थलों पर कई वेद के विद्वानों को ऋग्वेद पूर्णतः कण्ठस्थ है और वे किसी भी अंतराल से बोल सकते हैं वही प्रतिभा आज इस मंच से साधकों में दिखाई दे रही है। परम पूज्य गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरिजी ने आशीर्वचनों से सभी प्रात्यक्षिक देने वाले साधकों का उत्साहवर्धन किया।

आदरणीय आशू भैया ने परम पूज्य गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरिजी के चरणों में वंदन करते हुए साधकों को सम्बोधित करने की प्रार्थना की। परम पूज्य गुरुदेव ने सर्व प्रथम प्रभु राम जी की वंदना की।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥

परम पूज्य गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरिजी ने

बताया कि हमारे देश का अमृतकाल उस दिन आया जिस दिन प्रभु रामलला जी की प्राण प्रतिष्ठा अयोध्या में हुई। आज वातावरण परिवर्तित हो रहा है। पहले हम गीता जी के श्लोक वैदिकों से सुनते थे। आज जब गीता प्रशिक्षण में आ गई है तो देश का उत्थान निश्चित है। हम सौभाग्यशाली हैं कि भगवान कृष्ण ने इस शुभकार्य के लिए हमें चुना है। परम पूज्य जितेन्द्र नाथ महाराज जी का परिचय देते हुए बताया कि स्वामी जितेन्द्रनाथ जी जिस गद्दी पर पीठासीन है वह 600 वर्षों की पीठ परम्परा है। स्वामी जी ने मातृशक्ति को संगठित कर सुसंस्कृत करने का जो प्रण लिया है वह अपने आप में अद्भुत है। उन्होंने स्वामी जी से साधकों का मार्गदर्शन करने का अनुग्रह किया।

परमपूज्य स्वामी जितेन्द्र नाथ महाराज जी ने लर्न गीता संथा के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि गीता मात्र पढ़ने का नहीं अपितु जीवन परिवर्तन का मार्ग है। यह साधना है राष्ट्रोत्थान की, आत्मकल्याण की। गीता भगवान कृष्ण से प्रेम सम्बन्ध बनाने की विधि है। उन्होंने कहा कि राष्ट्ररक्षा की सेना तो सबने देखी है परन्तु आध्यात्मिक, सांस्कृतिक नीति मूल्यों व सिद्धांतो के रक्षण हेतु विराट सेना निर्माण करने वाले महान सेनापति गुरु गोविंददेव जी को मैं प्रणाम करता हूँ। जो ज्ञान भगवान कृष्ण ने अपनी मधुर वाणी से अर्जुन को दिया वही ज्ञान पूरे विश्व को देने के लिए भगवान ने परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी को चुना है।

तत्पश्चात् आदरणीय सुवर्णा मालपाणी काकी जी ने अध्याय 12$^{वें}$ अध्याय के कुछ श्लोक अपनी मधुर वाणी में गाकर हम सब को अनुगृहीत कर दिया। इसके पश्चात् धन्यवाद ज्ञापन देकर समापन प्रार्थना व हनुमान चालीसा पाठ कर कार्यक्रम को विराम दिया गया।



L3 Opening Ceremony

16th Batch - Sep23

12/01/24

https://www.youtube.com/live/wdkaquwDXu0?si=CYdRuYDVYLOsWTiV

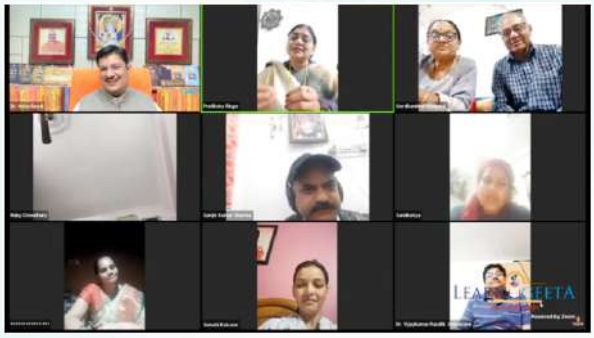


गीता परिवार के पारम्परिक भक्ति गीत एवं हरि-नारायण संकीर्तन के साथ ही श्री हनुमान चालीसा गायन के पश्चात् सुश्री गायत्री सिंह दीदी के सुन्दर सूत्र संचालन के साथ स्तर-3 के 16वें बैच का शुभारंभ समारोह आरम्भ हुआ। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना से उडुपी से कस्तूरी के. दीदी ने अपने मधुर स्वर में की। सुंदर दीप प्रज्ज्वलन जामनगर से विजय के. पण्ड्या भैया द्वारा किया गया।

गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आदरणीय आशू गोयल भैया ने दो धामों की यात्रा पूर्ण करने पर स्तर 2 के साधकों को अनेकानेक शुभकामनायें दीं। भैया ने स्तर 3 में प्रवेश करने पर साधकों को अत्यंत प्रेरणादायक मार्गदर्शन देते हुए उनका स्वागत किया। आदरणीय आशू भैया ने 12 जनवरी को शुभारम्भ समारोह के सुअवसर पर बताया कि अब से 161 वर्ष पूर्व 12 जनवरी ईस्वी सन् 1863 को मकर संक्रांति के दिन भारतवर्ष की देवभूमि पर बंगाल में स्वामी विवेकानंद जी का अवतरण हुआ था। उनके ओजपूर्ण व्यक्तित्व का युवाओं पर बहुत प्रभाव पड़ा। आदरणीय आशू भैया ने बताया कि परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज ने जब 36 वर्ष पूर्व गीता परिवार की स्थापना की उस समय उन्होंने गीता परिवार हेतु 5 सीमायें निर्धारित कीं, जिन्हें पञ्चसूत्री कहा जाता है।

प्रथम सूत्र भगवद्भक्ति क्योंकि भगवान की मौलिक भक्ति जब हमारे किसी भी कार्य के मूल में रहती है तो वह कार्य सेवा बन जाता है। द्वितीय सूत्र भगवद्गीता

अर्थात् अर्जुन की भांति समरांगण जैसी कठिन परिस्थिति आ जाने पर निर्णय लेने हेतु जैसा भगवान श्रीकृष्ण ने गीता जी में अर्जुन को उपदेश किया था। उस प्रकार निर्णय ले पाने हेतु विस्तृत दृष्टिकोण



निर्माण हमारे युवाओं में कर पाने की क्षमता विकसित करना गीता परिवार की स्थापना का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा।

तृतीय महत्वपूर्ण सूत्र भारतमाता। हमारे प्रत्येक कार्य के निरूपण का उद्देश्य यही हो जिससे देश विदेश में भारत की गौरव पताका लहराये। देशभक्ति सभी कार्यों का आधार होनी चाहिये।

चतुर्थ सूत्र है विज्ञानदृष्टि। गीता परिवार अंधविश्वास को समाप्त करने की प्रेरणा करता है।

पंचम सूत्र 'स्वामी विवेकानंद जी के आदर्श' है। जिनके जीवन के मूल में गीता जी, श्वासों में भारत माता का गौरव, ओजपूर्ण वाणी में सदैव भारत माता के युवाओं को जगाने की गूँज रही ऐसे सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी को गीता परिवार का पाँचवा सूत्र मानकर गीता परिवार के सभी कार्यों का निर्धारण किया जाता है। स्वामी विवेकानंद जी के साथ श्रीमद्भगवद्गीता सदैव रही। उन्होंने एक बार एक पत्र में लिखा -

"Please read the Gita every day to the best of your opportunity."

शिकागो 1893 के धर्म-सम्मेलन का मौलिक उद्देश्य ईसाई धर्म की प्रतिस्थापना करना था। विश्व के सभी धर्मावलम्बियों को बुलाकर उनके सम्मुख ईसाई धर्म को सभी धर्मों से श्रेष्ठ प्रतिपादित करना इस धर्म सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य था। किन्तु अद्भुत घटना ऐसी हुई कि शिकागो की विश्व धर्म सभा में जैसे ही



स्वामी विवेकानंद जी का भाषण प्रारंभ हुआ संपूर्ण कार्यक्रम का परिदृश्य ही परिवर्तित हो गया। जब तक स्वामी विवेकानंद वहाँ रहे तब तक मात्र स्वामी जी के ओजस्वी भाषण एवं स्वामी जी का तेजस्वी व्यक्तित्व ही विश्व धर्म सभा का मुख्य आकर्षण बन गया तथा पश्चिम में सनातन का सूर्य उदय हो गया।

स्वामी विवेकानंद जी का प्रिय वाक्य जो कठोपनिषद् से लिया गया है :

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत'

स्वामी विवेकानंद जी कहते थे गीता जी वीरों का शास्त्र है तथा शौर्य का शास्त्र है। वे कहते थे -

"Arise, awake, and stop not till the goal is reached."

आज के समय में कितनी प्रासंगिक बात है जब समय है लगभग 500 वर्षों के अनगिनत बलिदानों के उपरांत भव्य राम मंदिर के पुनर्स्थापना भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा का हम बहुत भाग्यशाली पीढ़ी हैं जो इस गौरवशाली क्षण के साक्षी बनेंगे जब अयोध्या जी में रामलला विराजेंगे।

आज स्तर 3 में प्रवेश के सुअवसर पर आप सभी यह ध्यान रखिये कि गीता जी केवल पारायण का शास्त्र होकर न रह जाए अपितु प्रत्येक व्यक्ति उसका विवेचन सुनें उसे ग्राह्य करें एवं श्रीमद्भगवद्गीता जी में योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के दिये सूत्रों को समझें तथा जीवन में उतारने का प्रयत्न करें। आज स्वामी



विवेकानंद जी के जन्म दिवस पर यह सुनिश्चित करें कि गीता परिवार के इस निष्काम यज्ञ में अपनी नि:स्वार्थ सेवा की आहुति निरंतर देते रहेंगे।

आदरणीय आशू भैया ने आज स्तर 3 के शुभारम्भ पर अपने स्वागत संभाषण में साधकों से निवेदन किया कि वे गीता परिवार के 5 मूल सूत्रों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। गायत्री सिंह दीदी ने आदरणीय आशू भैया के अत्यंत रोचक एवं प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् आज के प्रात्यक्षिक कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ जिसका सुंदर आकर्षण रहा साधकों के द्वारा गीता का शुद्ध कंठस्थीकरण एवं गीता विचक्षण के साधकों की विलक्षण प्रतिभा श्लोकांक से श्लोक गायन!

गीता पथिक 13 वर्षीय कुमारी यशिता आनंद चाणक्य दीदी ने अपनी कंठस्थीकरण प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया।

पुणे महाराष्ट्र से गीताव्रती 82 वर्षीय हेमलता नागर दीदी सभी के लिए प्रेरणा हैं इन्होंने सुंदर उच्चारण के साथ श्लोक सुनाकर सभी को आनंदित कर दिया। मैंगलोर कर्नाटक से 9 वर्षीय आराध्या एवं 13 वर्षीय अभिज्ञा दोनों गीताव्रती बहनें भी समारोह में उपस्थित रहीं, इन्होंने भी कंठस्थीकरण का सुंदर प्रदर्शन किया। कैंटन यू.एस.ए. से इंदु शर्मा दीदी गीताव्रती होकर विचक्षण की तैयारी कर रही हैं। इन्होंने श्लोकांक से श्लोक सुनाकर सभी श्रोताओं को



हतप्रभ कर दिया।

अनेक साधकों ने गीता परिवार से जुड़ने के पश्चात् उनके जीवन में आये सुखद परिवर्तन एवं अनुभव साझा कर सभी को आनंदित कर दिया। आदरणीय आशू भैया ने अत्यन्त महत्वपूर्ण आनंददायक सूचना दी जो कि फरवरी में दिनांक 4 से दिनांक 11 तक पुणे में श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज के 75$^{वें}$ जन्मदिवस के निमित्त आयोजित किये जाने वाले अमृत महोत्सव के निमित्त थी।

हमारी गीता कक्षाओं में प्रतिदिन नये सोपान जुड़ते जाते हैं इसी विषय में आदरणीय आशू भैया ने सुखद बात बतायी कि हमारे लर्नगीता कार्यक्रम में इस बैच में 20% साधक तेलुगु भाषा के हैं। इस प्रकार हिन्दी व अंग्रेजी के पश्चात् तेलुगु भाषा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

सभी साधकों ने अपने - अपने मनोगत एवं उनके जीवन में हुए अद्भुत अनुभव साझा कर आनंद का अनुभव किया। इसके पश्चात् गायत्री सिंह दीदी ने धन्यवाद ज्ञापन हेतु अनुपमा पाटिल दीदी को आमंत्रित किया जो कि फरवरी 2020 से गीता परिवार से जुड़ी हैं एवं विविध सेवायें भी प्रदान कर रही हैं। इनके द्वारा अत्यंत हर्षपूर्वक परम श्रद्धेय स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किये गये। उन्होंने गीता परिवार के विश्वस्तरीय प्रकल्प की नानाविध विशेषताओं का वर्णन करते हुए गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. श्री संजय भैया मालपाणी जी का, अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री डॉ. आशू जी गोयल भैया का एवं प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से गीता परिवार की सेवा में लगे सभी साधकों का हार्दिक अभिनन्दन किया।

कार्यक्रम का समापन प्रार्थना के साथ राजस्थान बीकानेर से सुश्री राधिका विजय दीदी द्वारा हुआ।

॥ ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥



L4 Opening Ceremony

7th Batch - Apr23

23/01/24

https://www.youtube.com/live/TD1jJ0Azrl0?si=tl91SqszpttHsC6i



2020 में आरंभ हुआ यह लर्नगीता आज विश्वभर में गीता को अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से विस्तारित कर रहा है एवं आज 7वें स्तर 4 बैच का शुभारम्भ हो रहा है। कार्यक्रम के आरंभ में बीना चौहान दीदी जी ने परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में वंदन करते हुए दिल्ली से श्री पवन अंचल भैया जी को आरंभिक प्रार्थना के लिए आमंत्रित किया। अंचल भैया जी ने अपनी मधुर वाणी से प्रार्थना करते हुए साधकों का हृदय भक्ति से परिपूर्ण कर दिया। इसके पश्चात् ममता सोमानी दीदी जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर वातावरण को सकारात्मक बना दिया।

22 जनवरी 2024 को अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह संपन्न होने पर पूरे भारतवर्ष में आनन्द की लहर दौड़ रही है। सभी साधक भाव-विभोर होकर मनोगत साझा करने को उत्सुक थे अत: आज का कार्यक्रम साधक संवाद अर्थात् साधकों के मनोगत से ही आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम गणेश कुमार भैया ने अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने बताया कि हम रामजी को मानते हैं परन्तु रामजी की नहीं मानते। भगवान राम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान है हम उनके आदर्शों पर चलकर अपने जीवन को सफल बनायें।

अश्विनी जानी भैया जी ने बताया कि उन्होंने 6 दिसम्बर को कार सेवा में हिस्सा लिया था। अब अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण से उनका वह बहुप्रतीक्षित स्वप्न साकार हो गया। श्री करम चंद भैया जी 25 सालों से रामलीला में हनुमानजी की भूमिका निभा रहे हैं। अपने इष्ट प्रभु राम जी के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव पर उनकी नयनों में आनंदाश्रु

भरे हुए हैं।

काठमांडू से देवा जी ने बताया कि नेपाल में भी पूर्ण उल्लास के साथ दीपावली मनाई गई। जनकपुर धाम से अयोध्या धाम में बैना भी भेजा गया।



विनोद बत्रा दीदी ने कहा कि गीता हमें जीवन में अनुशासन सिखाती है। अनुशासन के बिना जीवन ऐसे है जैसे नाविक के बिना नाव। गीता मानव मन को अवसाद से आह्लाद की ओर ले जाती है। गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. आशू गोयल भैया अभी अभी अयोध्या से लौट कर आए हैं। अविलम्ब भैयाजी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर साधकों को सम्बोधित किया। उनके मुख पर अद्भुत प्रसन्नता व उत्साह के भाव थे। उन्होंने संक्षेप में अयोध्या यात्रा का वर्णन कर साधकों को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने प्रभु के विग्रह की भाव भंगिमा का वर्णन जिस प्रकार किया, ऐसा लग रहा था मानो प्रभु के साक्षात् दर्शन कर रहे हैं। भारत में इस अवसर पर घर घर में दीपावली का त्योहार मनाया गया। उन्होंने गीता परिवार द्वारा संचालित पादुका सेवा के बारे में भी बताया। इतने कम समय में इतना बड़ा कार्य कठिन अवश्य था परन्तु असम्भव नहीं। प्रभु राम जी के आशीर्वाद और परम पूज्य गुरुदेव जी के निर्देशन में कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हुआ और माननीय अतिथियों द्वारा गीता परिवार द्वारा उत्कृष्ट व्यवस्था की अत्यंत सराहना की गई।

उन्होंने गीता जी के श्लोक कण्ठस्थ करने पर बल देते हुए कहा कि जब हम गीता के श्लोक कण्ठस्थ करते हैं तो हम कभी भी कहीं भी गीता पाठ कर सकते हैं। इस शुभ अवसर पर गीता विचक्षण साधकों के प्रात्यक्षिक हुए। 8 वर्षीय हरिप्रिया दीदी, जो गीता विचक्षण हैं, ने अपनी मधुर वाणी से श्लोकांक से श्लोक वाचन कर सभो को आश्चर्यचकित किया। इसके साथ ही अमेरिका से 67 वर्षीय इंदु शर्मा दीदी, जयपुर से 68 वर्षीय घनश्याम शर्मा भैयाजी ने श्लोकांक से श्लोक



उच्चारण किये। विजयवाड़ा से सुनीता सोमानी दीदी ने श्लोकार्थ के साथ श्लोक वाचन किये और अपने आप में अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया।

अंत में आशू भैयाजी ने नए सत्र में प्रवेश पाने वाले सभी साधकों को शुभकामनाएं दी। इसके पश्चात् ममता सोमानी दीदी ने प्रार्थना से समापन किया और पूरे कार्यक्रम की सूत्रधार बीना चौहान दीदी व साधकों का हृदय से आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया।

Gītā Vicakṣaṇa

Opening Ceremony

Shlokartha Classes

01/01/24

https://www.youtube.com/live/kty0dFCrfyY?si=5eeVOlZMZ8y3i3Nh



लर्नगीता प्रकल्प नित नवीन आयामों को जन्म दे रहा है एवं इसी क्रम में गीता के अर्थ को भी कंठस्थ करके समझने हेतु नवीन वर्ग का आरंभ किया जा रहा है। इस वर्ग में जिन साधकों ने श्लोकांक से गीता को कंठस्थ कर लिया है उन्हें प्रवेश दिया जा रहा है।

श्रीमती रचना मुकेश टंडन दीदी ने परम पिता परमेश्वर एवं परम श्रद्धेय स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज के चरणों में वंदन करते हुए श्लोकार्थ कक्षा के सभी साधकों का स्वागत व अभिनंदन किया। रचना दीदी ने बहुत सुन्दर बात कही कि हम प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर से अपनी प्रत्येक बात साझा कर सकते हैं एवं अपने मन में समाधान भी प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना के साथ श्री सुधीर भैया ने किया। सुधीर भैया गीता परिवार में विभिन्न प्रकार की सेवाएँ दे रहे हैं एवं भैया ने गीता विचक्षण परीक्षा उत्तीर्ण की है। बैंक ऑफ इंडिया से सेवानिवृत्त सुधीर भैया वर्धा महाराष्ट्र से हैं।

जीवन में प्रकाश आता है दीपों से, हमारी संस्कृति में सदैव ही दीप प्रज्ज्वलन की परम्परा रही है तो उसी प्रकार गीता परिवार में भी। आज का दीप प्रज्ज्वलन मुंबई महाराष्ट्र से वैशाली दीदी ने किया। दीदी 2021 से गीता परिवार में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रही हैं।

इसके साथ ही अमेरिका से 67 वर्षीय इंदु शर्मा दीदी, जयपुर से 68 वर्षीय घनश्याम शर्मा भैया ने श्लोकांक से श्लोक

उच्चारण किये। जिस आयु में मनुष्य रोजमर्रा की बातें भूलने लगते हैं आप ने श्लोकांक से श्लोक वाचन कर अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया। विजयवाड़ा से सुनीता सोमानी दीदी ने श्लोकार्थ के साथ श्लोक वाचन किये जो अपने आप में अद्भुत था।

श्लोकार्थ की कक्षाओं के विषय में जानकारी देते हुए ख्याति दीदी ने बताया कि गीताव्रती के पश्चात् गीता विचक्षण अर्थात् श्लोकांक से गीता जी कंठस्थीकरण



के उपरांत हमें श्लोकार्थ की कक्षा में प्रवेश मिलता है। आप सभी अत्यंत भाग्यशाली हैं कि यह श्लोकार्थ की प्रथम ही बैच है तथा इस प्रथम बैच में आपका चयन हुआ है।

ख्याति दीदी ने सभी का पुनः अभिवादन करते हुए आगे बताया कि श्लोकांक की प्रथम बैच 5 कक्षाओं के साथ 20 मार्च से प्रारंभ हुई थी। श्लोकांक की द्वितीय बैच 12 कक्षाओं के साथ प्रारंभ हुई जिसमें लगभग 270 साधक थे जो गीता पथिक एवं गीताव्रती थे। इस समय श्लोकांक के 15 समूह, 6 समय सत्रों में लगभग 370 साधकों के साथ चल रहे हैं।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि अब हमारी गीता कक्षाओं में श्लोकार्थ कक्षा का एक रत्न और भी जुड़ने जा रहा है। ख्याति दीदी ने बताया कि गीताव्रती में मूल गीता कंठस्थ करनी होती है गीता विचक्षण में अंकों से श्लोक स्मरण रखने होते हैं श्लोकार्थ की विलक्षण बात यह है कि इसमें गीता जी के श्लोकों के अर्थ का विस्तार से अध्ययन किया जाता है।

यह चिंतन की नहीं अपितु अर्थ की कक्षायें हैं। श्लोकार्थ समझने एवं कंठस्थीकरण हेतु हमें गीता प्रेस गोरखपुर की अन्वय गीता का प्रयोग करना होगा।

गीता प्रात्यक्षिक में गीता विचक्षण अशोक भैया ने 12वें अध्याय भक्तियोग के श्लोकों का पदच्छेद करते हुए सुन्दर अर्थ समझाया। इसी क्रम में उषा सुब्रह्मण्यम दीदी ने भी सुंदर श्लोक का गायन किया।

लर्न गीता कार्यक्रम के कार्यक्रम निदेशक एवं गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष आ. आशू गोयल भैया ने श्लोकार्थ कक्षाओं के शुभारम्भ वर्ग में साधकों का उत्साहवर्धन करते हुए बताया कि 18$^{वें}$ अध्याय के 14$^{वें}$ श्लोक भगवान श्रीकृष्ण क्या कह रहे हैं-

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथक्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥18:14॥

भगवान ने इस श्लोक में ऐसा सूत्र दे दिया है कि जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, चाहे ज्ञानार्जन अथवा धनार्जन, आध्यात्म हो अथवा भगवत्प्राप्ति, इहलौकिक हो अथवा पारलौकिक सभी क्षेत्रों में विजय प्राप्त करने हेतु कर्म सिद्धि के पाँच अचूक कारक हैं :

किसी भी कार्य की सिद्धि निम्न बातों पर निर्भर करती है :-

1) अधिष्ठान -

उद्देश्य हमें अपने कर्म का मूल उद्देश्य पता होना चाहिए अन्यथा कर्म सिद्धि नहीं होगी।

2) कर्ता -

कार्य करने वाला कौन है पूर्ण समर्पित है अथवा नहीं! क्योंकि कोई भी कार्य पूर्ण समर्पण चाहता है।

3) करण -

किसी भी कार्य की सिद्धि के लिए आवश्यक है विभिन्न प्रकार के साधन।

4) चेष्टा -

साधन तो उपलब्ध हो गये किन्तु पर्याप्त प्रयास नहीं किया।

5) दैव -

सब कारक उपलब्ध हैं किन्तु परमात्मा की इच्छा नहीं है तो कार्य सिद्धि नहीं हो पाती।

किसी एक साधन की कमी हो तो दूसरे साधन को अधिक प्रयोग करके कार्य सिद्धि का प्रयत्न करने से सफलता की संभावना बढ़ जाती है। इसी क्रम में भैया ने बताया कि गीता जी का प्रत्येक श्लोक अपने में कई गूढ़ अर्थ समेटे हुए है अतः श्लोकार्थ कक्षा में अध्ययन हेतु महान संतों की लिखी हुई टीकायें उपलब्ध हैं। गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित स्वामी रामसुखदास जी महाराज की साधक संजीवनी, अन्वय गीता, गीता प्रबोधिनी के अतिरिक्त परम श्रद्धेय सेठजी श्री जयदयाल जी गोयन्दका जी की तत्त्व विवेचनी, अद्वैत मत पर आदि शंकराचार्य जी का शांकरभाष्य, संत ज्ञानेश्वर महाराज की ज्ञानेश्वरी, द्वैतभाव में स्वामी रामानुजाचार्य जी का श्रीभाष्य, कर्मयोग पर आधारित मूल मराठी में आदरणीय तिलक जी की गीतारहस्य, श्रीधर टीका, मधुसूदन शास्त्री जी का भाष्य इसप्रकार अनेक सुन्दर टीकायें उपलब्ध हैं जो आपको गीता जी में निहितार्थ को समझने में सहायक होंगी। इसके अतिरिक्त आधुनिक अथवा पाश्चात्य अर्थ में गीता जी को समझना चाहते हैं तो ओशो गीता जो कि 8 वॉल्यूम में है उसे भी पढ़कर देखिए किन्तु उस पर रुकिए नहीं वापस लौटकर साधक संजीवनी, ज्ञानेश्वरी, गीताई, तत्त्व विवेचनी पर आइए एवं पाश्चात्य उन्मुक्तता भौतिक वाद एवं मूल सनातन के अंतर का अनुभव



कीजिए एवं अपने विचार साझा करें।

परम श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का सूत्र गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें तभी सार्थक होगा जब हम अर्थ समझेंगे क्योंकि जब हम अर्थ समझेंगे तभी जीवन में प्रयोग कर सकेंगे।

इसी सन्दर्भ में IITK (IIT कानपुर) के छात्रों एवं प्रोफेसर्स ने श्रीमद्भगवद्गीता पर एक बहुत उपयोगी website बनाई, 'gitasupersite' उसका नाम है। उस पर कई विद्वानों के भाष्य हैं। उपरोक्त में से आपको जो भी भाष्य सुलभता से उपलब्ध हो सके

अपने श्लोकार्थ अध्ययन में उनसे पढ़ने का प्रयास अवश्य करें। परम श्रद्धेय स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज द्वारा गीता भाष्य अनन्य शोध के साथ सर्वथा निरपेक्ष भाव से लिखा जा रहा है जिसपर श्लोकार्थ कक्षा के स्वाध्यायी साधकों के विचार आमंत्रित किये जायेंगे। अत: आप सभी से निवेदन है



कि स्वाध्याय कीजिए एवं इस विषय में अपने विचार अवश्य दीजिए।

आशू गोयल भैया ने श्लोकार्थ वर्ग के शुभारंभ के अवसर पर बताया कि आज हरिद्वार की पावनभूमि एवं पतित पावनी गंगा जी के तट से सभी साधकों को संबोधित करने में उन्हें बहुत आनंद का अनुभव हो रहा है। उन्होंने सभी साधकों को गीताव्रती, गीता-विचक्षण होने पर अनेकानेक शुभकामनायें दीं एवं श्लोकार्थ कक्षा में प्रवेश हेतु स्वागत किया।

उन्होंने कहा कि गीता जी के ज्ञानमय प्रकाश से विश्व को आलोकित करने में गीता परिवार के साथ-साथ चलें। वैदिक ऋषियों ने 'चरैवेति-चरैवेति' कहा है। जीवन गति का नाम है, प्रगति है, आगे बढ़ने का नाम ही जीवन है तथा एक क्षण भी बिना कर्म किये नहीं रहना।

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ 3:5॥

डॉ. आशू जी गोयल भैया ने अत्यन्त भावपूर्ण होते हुए परमात्मा से निवेदन किया कि वे हम सभी पर अपनी कृपा-वृष्टि करें जिससे हम सभी इस गीता ज्ञान यज्ञ में अपनी अपनी आहुतियाँ डालते हुए इसकी ज्ञान रूपी अग्नि के दिव्य तेज को अखिल विश्व में प्रसारित करने एवं प्रकाशित करने में निरन्तर सेवारत रहें। समारोह की सूत्रधार श्रीमती रचना मुकेश टंडन दीदी ने आशू भैया को उनके स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन करने हेतु हार्दिक आभार निवेदित किया।

गीता विचक्षण छवि दीदी, परभणी महाराष्ट्र से शिल्पा राठी दीदी, पुणे से ज्योति हेमंत जोशी दीदी, वडोदरा गुजरात से ओमप्रकाश भैया, अहमदनगर महाराष्ट्र से विद्या भालेराव दीदी, ठाणे मुंबई से डॉक्टर रमेश चक्षौता भैया, मीनल दानी दीदी, विष्णुकांता दीदी, कोलकाता से बबीता दीदी, नागपुर महाराष्ट्र से अनुश्री दीदी, जलगांव महाराष्ट्र से अर्चना पाटिल दीदी आदि सभी ने गीता विचक्षण किया हैं एवं अब श्लोकार्थ की कक्षा में प्रवेश लिया है। सूरत गुजरात से नीरु दीदी विचक्षण की तैयारी कर रही हैं, गीताव्रती राजश्री दीदी सांगली महाराष्ट्र से हैं एवं ऑफलाइन गीता क्लास लेती हैं। अहमदाबाद से गीता पथिक विनीता बाघेला दीदी ने बहुत सुंदर बात कही कि परिवार में वृद्ध जनों का जिस प्रकार आशीर्वाद मिलता है गीता परिवार में वैसी ही छत्रछाया प्रतीत होती है।

आ. आशू भैया ने गीता परिवार की प्रथम गीता

विचक्षण रूपा दीदी का विशेष आभार व्यक्त किया। गीता विचक्षण कक्षाओं के निर्माण में रूपा दीदी की विशेष भूमिका रही। उपस्थित सभी साधकों ने अपने-अपने मनोगत व्यक्त किये। इसके पश्चात् पुणे से C.A. मृदुला दीदी ने प्रभाव पूर्ण शब्दों में इस गीता यात्रा में अब तक जितने भी सहयात्री मिले उन सभी का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित किया।

समापन प्रार्थना गाजियाबाद से डॉ. किरण दीदी ने ली। रचना दीदी ने पुन: धन्यवाद करते हुए हनुमान चालीसा के पाठ के साथ इस सुंदर कार्यक्रम की पूर्णाहुति की।



आओ गीता सेवी बनें

Be a Geeta Volunteer

28/01/24

https://www.youtube.com/live/2B8YJkaNPVc?si=-kKDoyuBtgcr2olz

मराठी

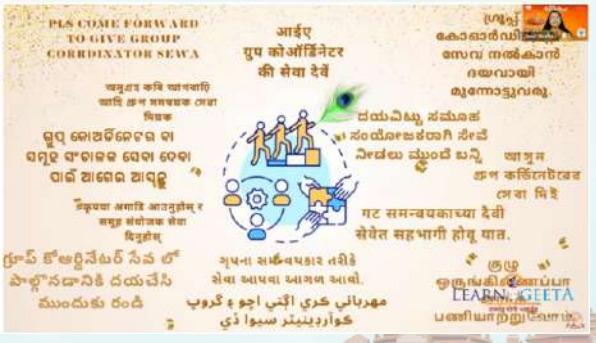


'स्वयंसेवक होऊनी मानवतेची सेवा करू! दैवीय संधी आली दारी भगवंताचे स्वागत करू!!'

दिनांक 28 जानेवारी 2024 रोजी गीता परिवाराने "चला गीता सेवी बनू या" या वेबिनार चे आयोजन केले होते. या मध्ये गीता परिवारातील विविध प्रकारच्या सेवांचा परिचय करुन देण्यात आला.

1. कॉलिंग सेवा: ही सेवा नवागत साधकांचे गीता परिवारात फोन करून स्वागत करते. या सेवेसाठी एका दिवसात किमान वीस ते पंचवीस मिनिटे लागतात. गीता संथा वर्गात उपस्थिती वाढविण्यासाठी आणि साधकांना वर्गात उपस्थित राहण्यासाठी नवी ऊर्जा मिळते.

2. तांत्रिक सहाय्यक आणि दळणवळण सेवा(टेक्निकल असिस्टंट): या सेवेसाठी इच्छुक सेविना आधी मूलभूत प्रशिक्षण दिले जाते. SMS प्रक्रिया समजून घेण्यासाठी त्यांच्या कार्यशाळा घेण्यात येतात. संथा वर्गात प्रशिक्षकांना स्पॉट लाईट करावे



लागते. साधकांना mute/unmute करून स्क्रीन शेअरिंग केले जाते. व्हॉट्स ॲप समूहात नियोजित वेळेत दोनदा झूम लिंक पोस्ट करावी लागते आणि श्लोकांचे ऑडिओ क्लिप्स, अर्थांचे इमेजेस, श्लोक



पोस्ट करणे या जबाबदाऱ्या पार पाडाव्या लागतात.

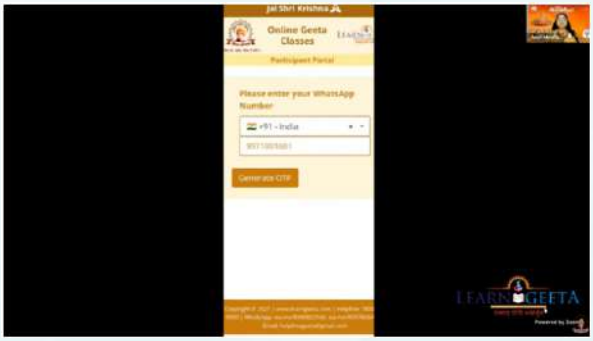
3. समूह संचालक: पडद्या मागे राहून समूह संचालक प्रशिक्षक, तंत्र सहाय्यक आणि गीता परिवारा चा दुवा असतो. व्हॉट्स ॲप समूहावर लक्ष ठेवून वेळेत संथा वर्गाची लिंक पोस्ट केली जाते का नाही, संबंधित अध्यायाचे साहित्य शेअर केले जाते का नाही याची नोंद घेण्याची ही सेवा आहे. "जिथे कमी तिथे मी" या उक्तीनुसार समूह संचालका ला तत्पर रहावे लागते. अडीअडचणी च्या वेळी झूम वर्ग सुरू करणे, तांत्रिक सेवा देणे,साहित्य,लिंक शेअर करणे या सेवा देण्यासाठी तयार राहावे लागते. प्रशिक्षक,तंत्र सहायक यांची सुट्टी असेल तर बदली सेवा उपलब्ध करून द्यावी लागते. दररोज झूम वर्गात किमान दहा मिनिटे उपस्थित रहावे लागते. याचे नेमून दिलेल्या संथा वर्गावर नियंत्रण असते. या सेवेसाठी किमान वय पंचवीस वर्षाचे असावे.

4. प्रवेश विभाग: या विभागात नोंदणी केलेल्या साधकांना त्यांनी निवडलेल्या वेळेत प्रवेश दिला जातो.या सेवीना दोन उपविभागात कार्य करावे लागते. प्रवेश देणे आणि संपर्क साधणे. या साठी उपयुक्त कौशल्य आत्मसात करण्यासाठी प्रशिक्षण दिले जाते.सेवी ला स्मार्ट फोन चे ज्ञान असावे लागते. किमान वय सोळा वर्षे.

5. सृजनात्मक लेखन विभाग: या विभागात दर शनिवारी आणि रविवारी जे विवेचन सत्र होतात ती ऐकून त्यांचा सारांश साधकांपर्यंत पोहोचविण्यासाठी समर्पक भाषेत लिखाण करावे लागते. हे लिखाण वेगवेगळ्या भाषेत असते.या साठी साप्ताहिक सुट्टीचा दिवस नेमून दिला जातो.

6. ग्राफिक डिझायनिंग आणि ॲनिमेशन विभाग: गीता परिवाराकडून साप्ताहिक विवेचन सत्र, अन्य काही ऑफलाईन कार्यक्रम आयोजित केले जातात.त्या साठी विशिष्ट ॲप मधून दक सूचना, ग्राफिक्स तयार करावे लागतात.सोशल मीडिया वर पोस्ट करावे लागतात. नवीन सेवी ना ही कला शिकण्यासाठी सहाय्य केले जाते. श्लोकांचा अर्थ दाखविणारे JPEG इमेज तयार करावे लागतात. या साठी ग्राफिक डिझायनिंग चे कौशल्य असणे आवश्यक आहे.

7. माहिती तंत्रज्ञान आणि सॉफ्ट वेअर विभाग: लर्न गीता च्या यशस्वी वाटचालीत या विभागाचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. ही वेबसाईट सहजतेने सर्वांना



उपलब्ध होण्यासाठी हा विभाग कार्यरत असतो. या साठी संकेतांकनिर्माण करणे, नवीन डिजिटल पानांची निर्मिती, डाटा बेस तयार करणे, नवीन ॲप्स बनविणे या सेवा देण्यासाठी हा विभाग तत्पर असतो.

8. ऑफलाईन स्टोअर विभाग: भगवद्गीतेतील विचार आणि शिकवण देश विदेशातील साधकांपर्यंत जागतिक पातळीवर पोहोचण्यासाठी वेगवेगळ्या भाषेतून संबंधित साहित्य, पुस्तके ऑनलाईन शिवाय ठीक ठिकाणी ऑफलाईन उपलब्ध करून दिले आहेत.त्या साठी विविध शहरात ही ऑफलाईन स्टोअर्स उपलब्ध आहेत. आपण रहातो त्या ठिकाणच्या जवळ असलेल्या स्टोअर्स शी संपर्क साधून पुस्तके किंवा गीता परिवारातील इतर साहित्य विकत घेता येते. या माध्यमातून गीता परिवार



समाजाशी जोडला गेला आहे.

9. बाल सखा विभाग: सोळा वर्षा खालील मुलांना गीता परिवारात सहभागी करून घेण्यासाठी ही सेवा उपलब्ध आहे.मुलांना भगवद्गीता शिकण्यासंबंधी प्रेरित करणे,प्रसार आणि प्रचार करणे हे या विभागाचे उद्दिष्ट आहे.

10. गीता प्रचारक विभाग: या विभागाद्वारे समाजाशी गीता परिवार जोडला गेला आहे.बॅनर्स, पत्रके, इतर



प्रसारक साहित्य सोशल मिडियावर पोस्ट करणे, ऑफलाईन कार्यक्रमात जन जागृती करण्यासाठी वाटप करणे हे याचे ध्येय आहे.

11. प्रशिक्षक विभाग: गीता संथा वर्गात भगवद्गीता शिकविण्यासाठी मुख्य प्रशिक्षक हवा. या साठी स्पष्ट उच्चार, उत्तम आवाज,व्याकरणाचे ज्ञान आणि शिकविण्याचे कौशल्य असावे लागते. प्रशिक्षकासाठी नोंदणी केल्यानंतर निवड प्रक्रियेचे काही निकष असतात त्या द्वारे प्रशिक्षणाची निवड केली जाते, योग्य प्रशिक्षण दिल्यानंतर सुरुवातीला इंटर्नल ट्रेनर म्हणून अनुभवी प्रशिक्षाकडून मार्गदर्शन घ्यावे लागते.सगळ्या पायऱ्या पार केल्यानंतर ही सेवा मिळते.

या सेवां व्यतिरीक्त अन्य काही सेवा आहेत. जसे ऑनलाईन कार्यक्रमांचे सूत्र संचलन. आपल्या आवडी नुसार आणि वेळेच्या उपलब्धतेनुसार आपण सेवा देऊ शकतो.

चला तर मग "सेवाभाव मनी ठेवूनी, भगवंत चरणी लीन होऊ या" भगवान श्रीकृष्णा चा भक्तिभाव अंतःकरणी विराजमान करण्यासाठी गीता सेवी बनू या.

गीता चिन्तनिका

10, 11, 12वाँ अध्याय

06/02/24



https://www.youtube.com/live/dxA3Y9uILfs?si=SYnwW_qmoi0sJ7aO



शेट्टीला एकादशी चे औचित्य साधून या विवेचन सत्रात भगवद्गीतेतील दहावा, अकरावा आणि बाराव्या अध्यायावर चिंतन झाले.

या कार्यक्रमाचे सूत्र संचालन किरण जी मुंदडा यांनी केले. सुरुवातीला त्यांनी गीता परिवाराचे संस्थापक अध्यक्ष परमपूज्य स्वामीजी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज यांच्या जन्मदिनी अमृत महोत्सवाचे आयोजन तीर्थ क्षेत्र आळंदी येथे होणार असल्याचा उल्लेख केला.त्यांच्या परम पवित्र चरणकमलाला साष्टांग वंदन करून आशीर्वाद देऊन या सत्राची सुरुवात होत असल्याचे त्यांनी सांगितले.

'घरोघरी गीता प्रत्येकाच्या हाती गीता'

असा संदेश देणारे आदरणीय पूज्य स्वामीजी यांच्या मुळे आपल्या हातून भगवान श्रीकृष्णाची सेवा घडण्याची ही संधी आपल्याला प्राप्त होत आहे. त्यांना कोटी कोटी वंदन.असा त्यांचा आशीर्वाद मागून कमलेश जी मित्तल दीदी ने आरंभ प्रार्थना घेतली.पुन्हा एकदा आळंदीच्या कार्यक्रमाची उद्घोषणा झाली. त्या नंतर दीप प्रज्ज्वलन डिम्पल जी रूपेरिया यांनी केले. गीता परिवाराचे मेरुमणी राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ.संजय जी मालपाणी आणि अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. आशू जी गोयल यांच्या संदेशाचा उल्लेख केला गेला. हा जगन्नाथाचा रथ पुढे

नेण्यासाठी हे दोघे सारथी आहेत. दोन आधारस्तंभ आहेत.

प्रमुख कार्यक्रम पुढे नेत असताना किरणजी मुंदडा यांनी अध्याय दहावा, अकरावा आणि बारावा यांचे पठण करणाऱ्या गीताव्रती

रिचा जी पटेल,अहमदाबाद. जी बारा वर्षाची



बालिका आहे रूपा जी झरिया बँकॉक येथे राहणाऱ्या आणि सरस्वती मुंदडा जयपूर मध्ये वास्तव्य असलेल्या यांचा परिचय करून दिला.

10$^{व्या}$ अध्याया चे सारांशपर प्रस्तुतिकरण जबलपूर च्या निलिमाजी चिंचोलकर यांनी केले. दहावा अध्याय म्हणजे विभूती योग. नवव्या अध्यायातिल गोपनीय रहस्याचे दर्शन घडविल्या नंतर दहाव्या अध्यायात भगवान श्रीकृष्णाने अर्जुना ला त्याच्या हिताच्या गोष्टी समजावून सांगितल्या.

श्लोक 1 ते 7 : या श्लोकात भगवान श्रीकृष्णांनी स्वतः च्या अस्तित्वाचे विश्लेषण केले आहे. भगवान म्हणतात, त्यांची उत्पत्ती ना देव जाणतात ना महर्षी. कारण श्रीकृष्ण म्हणजे सगळ्यांचे मूळ रूप. आदि स्वरूप.

जो भगवंता चे स्वरूप जाणतो तो मनुष्य ज्ञानी आहे सर्व पापांपासून तो मुक्त होतो.

अशी व्यक्ती भगवंता च्या ईश्वरी विभूतीला आणि योगशक्तीला तत्त्वत: जाणतो, तो स्थिर भक्तियोगाने युक्त होतो, यात मुळीच शंका नाही.

इथे भगवंत सर्व जगाच्या उत्पत्तीचे कारण आहेत आणि त्यांच्यामुळेच सर्व जग क्रियाशील होत आहे, असे जाणून श्रद्धा व भक्तीने युक्त असलेला बुद्धिमान भक्त या परमेश्वराला नेहमी भजतात.

निरंतर त्याच्यात मग्न असतात. आणि स्वतः चे प्राण अर्पण करतात असे हे भक्तजन भक्तीच्या चर्चेने परस्परांत भगवंताच्या प्रभावाचा बोध करीत तसेच गुण व प्रभावासह माझे किर्तन करीत निरंतर संतुष्ट होतात आणि त्या ईश्वरी रुपात नेहमी रममाण होत असतात.

असे ध्यानात मग्न झालेले भक्तांना प्रेमाने न्हाऊन निघालेल्या भक्तांना तो तत्वज्ञानरूप योग देतो. ज्यामुळे ते पुन्हा भगवंताला प्राप्त होतात.भगवंत अर्जुनाला म्हणतात,

“हे अर्जुना! त्यांच्यावर कृपा करण्यासाठी त्यांच्या अंतःकरणात असलेला मी स्वतःच त्यांच्या अज्ञानाने उत्पन्न झालेला अंधकार प्रकाशमय तत्वज्ञानरूप दिव्याने मी नाहीसा करतो.”



श्लोक क्रमांक 8 ते 11 ला चतुश्लोकी गीता म्हणतात.संसाराचे मूळ मी आहे नित्य निरंतर माझे स्मरण करतात माझ्यावर प्रेम करतात त्यांच्यावर माझी कृपादृष्टी असते.त्यांचे अज्ञान मी दूर करतो. सगळ्या प्राण्यांचे मूळ बीज मी आहे.या संसारात मी आहे.त्यांना मी बुध्दीयोग देतो ज्यां मुळे माझी प्राप्ती होईल.

अर्जुन म्हणाला, "आपण परम ब्रह्म परम धाम आणि परम पवित्र आहात. कारण आपल्याला सर्व ऋषिगण सनातन, दिव्य पुरुष, तसेच देवांचाही आदिदेव, अजन्मा आणि सर्वव्यापी म्हणतात. देवर्षी नारद, अमित, देवल व महर्षी व्यासही तसेच सांगतात आणि आपणही मला तसेच सांगता.

म्हणून ज्या विभूतींच्या योगाने आपण या सर्व लोकांना व्यापून राहिला आहात, त्या आपल्या दिव्य विभूती पूर्णपणे सांगायला आपणच समर्थ आहात.

हे योगेश्वरा! तुझे अखंड चिंतन करण्याकरिता मी तुला कोठे कोठे जाणावे व कोणकोणत्या पदार्थांच्या ठिकाणी माझ्याकडून तुझे चिंतन होण्यासारखे आहे?

हे जनार्दना! आपले योगसामर्थ्य म्हणजे बहुरूप होण्याचे सामर्थ्य व विभूती यांचे विस्ताराने वर्णन करून पुन्हा सांगा. तुमच्या वचनामृताचे कितीही श्रवण केले तरी माझी तृप्ती होत नाही. ज्या ज्या भावाचे ठिकाणी तुझे चिंतन करणे मला सोपे जाईल तो तो आपला योग मला स्पष्ट करून सांगा."

या वर भगवंत उत्तर देतात,

"हे निद्रेवर विजय मिळवणाऱ्या अर्जुना! मीच सर्वांचा आत्मा असून सर्व भूतांच्या हृदयात आहे म्हणून सर्व भूतांचा आदी, मध्य व अंत मीच आहे.

आदित्यांत मी विष्णू असून प्रकाशवंतात मी किरणवान सूर्य आहे, आकाशमंडळातील नक्षत्रांमध्ये मी चंद्र आहे

वेदांमध्ये मी सामवेद असून देवांमध्ये मी इंद्र आहे. इंद्रियांमध्ये मी मन असून प्राण्यांमध्ये मी चैतन्य आहे.

यापूर्वी भगवंतांनी "बारा आदित्यांमधील विष्णु मी आहे" असे सांगितले होते आणि आता इथे "अकरा रुद्रांमध्ये शंकर मी आहे विष्णू मीच आहे" असे ते म्हणतात. इथे शैव-वैष्णव वाद संपतो.

भगवंत म्हणतात अग्नी मी पर्वतांमध्ये सुमेरू पर्वत मी आहे.

घोड्यांमध्ये श्रेष्ठ, अमृताबरोबर समुद्रातून प्रकट झालेला उच्चैःश्रवा नामक घोडा, श्रेष्ठ हत्ती ऐरावत ही भगवंतांची विभूती आहेत.



नागांमध्ये शेषनाग मीच आहे.

मी दैत्यांमध्ये प्रह्लाद आणि गणना करणा-यांमध्ये समय आहे. तसेच पशूंमध्ये मृगराज सिंह आणि पक्षांमध्ये गरुड आहे.

मी पवित्र करणाऱ्यात वायू आणि शस्त्रधा- यांत श्रीराम आहे. तसेच जलचरातील मगर आहे आणि नद्यां माधिल गंगा आहे.

श्री भगवान म्हणतात- हे अर्जुन ! सृष्टीचा आरंभ, अंत आणि मध्यही मीच आहे. शास्त्रांमध्ये मी ब्रह्मविद्या



आणि आध्यात्मिक विद्या आहे. जे आपापसात वाद घालतात त्यांच्यासाठी मी तत्त्व आहे.

मी अक्षरांतील अकार आणि समासांपैकी द्वन्द्व आहे.अक्षय काल म्हणजेच कालाचाही महाकाल तसेच सर्व बाजूंनी तोंडे असलेला विराटस्वरूप सर्वाचे धारण-पोषण करणाराही मीच आहे.

स्त्रियांमध्ये कीर्ती, लक्ष्मी, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति आणि क्षमा मी आहे.

तसेच गायन करण्याजोग्या वेदांमध्ये मी बृहत्साम आणि छंदांमध्ये गायत्री छंद मी आहे. त्याचप्रमाणे महिन्यातील मार्गशीर्ष आणि ऋतुंतील वसंत मी आहे.

छळ, कपटामधील द्यूत मी आहे. प्रभावशाली पुरुषांचे तेज मी आहे. निश्चयी लोकांचा निश्चय तर सात्त्विक पुरुषांचा भाव मी आहे" असे भगवंत सांगतात.

गुप्तता बाळगण्याच्या कामी लागणारे मौन मी आहे" असे भगवंत सांगतात. ज्ञानमार्गात तत्त्वज्ञान मी आहे.

भगवंतांनी इथवर अर्जुनाला ब्याऐंशी विभूती सांगितल्या. ते पुढे म्हणतात, "अर्जुना, माझ्या विभूती अनंत आहेत पण तुझ्यासाठी मी संक्षिप्त रूपात सांगितल्या आहेत."

भगवंत म्हणतात, “सर्वांभूती, कणाकणांत त्यांचे अस्तित्व आहे. पण समजण्यास सोपे म्हणजे, जिथे जिथे ऐश्वर्य, कांती, शक्तीचा अनुभव येईल ती माझीच विभूती जाणावी.”

हे अर्जुना! त्यांच्यावर कृपा करण्यासाठी त्यांच्या अंतःकरणात असलेला मी स्वतःच त्यांच्या अज्ञानाने उत्पन्न झालेला अंधकार प्रकाशमय तत्वज्ञानरूप दिव्याने नाहीसा करतो.

सर्वस्वी माझ्या ठिकाणी अनन्य झालेल्या भक्तांवर कृपा करण्याकरता त्यांच्या अंतःकरणात राहूनच त्यांचा अविवेकरुपी अंध: कार मी आपल्या प्रकाशमान ज्ञानदीपाने नाहीसा करतो.



हे महाबाहो, तत्व माझ्या प्रगट होण्याचे कारण कुणी देवता महर्षी जाणत नाहीत.मी त्यांचा पूर्वज आहे. जो मनुष्य माझी रूपे ओळखतो तो पापांतून मुक्त होतो. आणि अविचल भक्तीने युक्त होतो.

11 वा अध्याय गीताव्रती क्षमाजी गोखले:

अर्जुन म्हणतो, हे परमेश्वर ,मला तुमच्या अविनाशी रूपाचे दर्शन करायचे आहे.



आपण आपल्याविषयी जसे सांगत आहात, ते बरोबर तसेच आहे. हे पुरुषोत्तमा! आपले ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ती, बल, वीर्य आणि तेजयुक्त ईश्वरी स्वरूप मला प्रत्यक्ष पाहण्याची इच्छा आहे.

या वर भगवान श्रीकृष्ण म्हणतात,

मी लोकांचा नाश करणारा वाढलेला महाकाल आहे. यावेळी या लोकांच्या नाशासाठी मी प्रवृत्त झालो आहे. म्हणून शत्रूपक्षीय सैन्यात जे योद्धे आहेत, ते सर्व तुझ्याशिवायही राहणार नाहीत. म्हणजेच तू युद्ध केले नाहीस, तरी या सर्वांचा नाश होणार.

म्हणूनच तू ऊठ. यश मिळव. शत्रूंना जिंकून धनधान्यसंपन्न राज्याचा उपभोग घे. हे सर्व शूरवीर आधीच माझ्याकडून मारले गेले आहेत. हे सव्यसाची! तू फक्त निमित्तमात्रच हो.

हे संपूर्ण विश्वाचे स्वामी! मी आपल्याला अनेक बाहू, पोटे, तोंडे आणि डोळे असलेले तसेच सर्व बाजूंनी अनन्त रूपे असलेले पाहात आहे. हे विश्वरूपा! मला आपला ना अंत दिसत, ना मध्य दिसत, ना आरम्भ.

मी आपल्याला मुकुट घातलेले, गदा व चक्र धारण केलेले, सर्व बाजूंनी प्रकाशमान तेजाचा समूह असे, प्रज्वलित अग्नी व सूर्य यांच्याप्रमाणे तेजाने युक्त, पाहण्यास अतिशय कठीण आणि सर्व दृष्टींनी अमर्याद असे पाहात आहे.

अनन्त बाहू असलेले, चंद्र व सूर्य हे ज्यांचे नेत्र आहेत, पेटलेल्या अग्नीसारखे ज्यांचे मुख आहे आणि आपल्या तेजाने या जगाला तापविणारे, असे आहात, असे मला दिसते.

हे महात्मन्! हे स्वर्ग आणि पृथ्वी यांच्यामधील आकाश आणि सर्व दिशा फक्त आपण एकट्यानेच व्यापून टाकल्या आहेत. आपले हे अलौकिक आणि भयंकर रूप पाहून तिन्ही लोक अत्यंत भयभीत झाले आहेत.

तेच देवांचे समुदाय आपल्यात शिरत आहेत आणि काही भयभीत होऊन हात जोडून आपल्या नावांचे व गुणांचे वर्णन करीत आहेत. तसेच महर्षी व सिद्धांचे समुदाय 'सर्वांचे कल्याण होवो' अशी मंगलाशा करून उत्तमोत्तम स्तोत्रे म्हणून आपली स्तुती करीत आहेत.

अकरा रुद्र, बारा आदित्य तसेच आठ वसू, साध्यगण, विश्वेदेव, दोन अश्विनीकुमार, मरुद्गण

आणि पितरांचे समुदाय, तसेच गंधर्व, यक्ष, राक्षस आणि सिद्धांचे समुदाय आहेत. ते सर्वच चकित होऊन आपल्याकडे पाहात आहेत.

हे महाबाहो! आपले अनेक तोंडे, अनेक डोळे, अनेक हात, मांड्या व पाय असलेले, अनेक पोटांचे आणि अनेक दाढांमुळे अतिशय भयंकर असे महान रूप पाहून सर्व लोक व्याकुळ ह होत आहे. आहेत. तसेच मीही व्याकुळ होत आहे.

श्रीभगवान म्हणाले, मी लोकांचा नाश करणारा वाढलेला महाकाल आहे. यावेळी या लोकांच्या नाशासाठी मी प्रवृत्त झालो आहे. म्हणून शत्रूपक्षीय सैन्यात जे योद्धे आहेत, ते सर्व तुझ्याशिवायही राहणार नाहीत. म्हणजेच तू युद्ध केले नाहीस, तरी या सर्वांचा नाश होणार.

म्हणूनच तू ऊठ. यश मिळव. शत्रूंना जिंकून धनधान्यसंपन्न राज्याचा उपभोग घे. हे सर्व शूरवीर आधीच माझ्याकडून मारले गेले आहेत. हे सव्यसाची! तू फक्त निमित्तमात्रच हो.

अर्जुन म्हणाला, हे अन्तर्यामी! आपले नाव, गुण आणि प्रभाव यांच्या वर्णनाने जग अतिशय आनंदित होते व तुमच्यावर अतिशय प्रेम करू लागते. तसेच भ्यालेले राक्षस दशदिशांत पळून जात आहेत आणि सर्व सिद्धगणांचे समुदाय आपल्याला नमस्कार करीत आहेत, हे योग्यच होय.

12 वा अध्याय मधुराजी वैद्य भक्तीयोग:

या अध्यायात भक्त कुणाला म्हणायचे? खरी भक्ती कशी असते? अभ्यासातून ती कशी प्राप्त केली जाते? हे सांगितले आहे पहिल्या श्लोकात अर्जुन भगवंताला विचारतात सगुण आणि निर्गुण भक्तीत श्रेष्ठ कोण? यावर भगवंत म्हणतात जे माझ्यात मन स्थिर करतात,ते माझे भक्त.अर्जुना,तू माझ्या साठी कर्म कर. फळाची अपेक्षा ठेवू नकोस.त्या साठी अभ्यास योग जाणून घे. जे काही तू करशील ते तू मला अर्पण कर.

अर्जुन भगवंताला विचारतो,तुम्ही दोन प्रकारचे भक्त सांगितले आहेत.एक सगुण भक्ती करणारे दुसरी निर्गुण भक्तीचे उपासक. त्या दोन्ही प्रकारच्या भक्तांमध्ये अतिशय उत्तम योगवेत्ते कोण आहेत?

श्रीभगवान म्हणाले, माझ्या ठिकाणी मन एकाग्र करून निरंतर माझ्या भजन-ध्यानांत रत झालेले जे भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रध्देने युक्त होऊन मज सगुणरूप परमेश्वराला भजतात, ते मला योग्यांमधील अति-उत्तम योगी वाटतात.

परन्तु जे पुरुष इन्द्रियसमूहाला चांगल्या प्रकारे ताब्यात ठेवून मन- बुद्धिच्या पलीकडे असणाऱ्या, सर्वव्यापी, अवर्णनीय, स्वरूप आणि नेहमी एकरूप असणाऱ्या नित्य, अचल, निराकार, अविनाशी सच्चिदानंदघन, ब्रह्माची निरंतर ऐक्यभावनेने ध्यान करीत उपासना करतात, ते सर्व प्राणिमांत्राच्या कल्याणात





तत्पर आणि सर्वांच्या ठिकाणी समान भाव ठेवणारे योगी शेवटी मलाच येऊन मिळतात.

अर्जुना, तू माझ्यातच मन ठेव. माझ्या ठिकाणीच बुद्धि स्थापन कर. म्हणजे मग तू माझ्यातच राहशील, तुझे मन भरकटणार नाही.

जर तू माझ्यात मन निश्चल ठेवायला समर्थ नसशील, तर हे अर्जुना! अभ्यासरूप योगाने मला प्राप्त होण्याची इच्छा कर.

जर तू वर सांगितलेल्या अभ्यासालाही असमर्थ असशील, तर केवळ माझ्याकरता कर्म करायला परायण हो. अशा रीतीने माझ्यासाठी कर्मे केल्यानेही 'माझी प्राप्ती होणे' ही सिद्धी तू मिळवशील.

मर्म न जाणता केलेल्या अभ्यासापेक्षा ज्ञान श्रेष्ठ होय. ज्ञानापेक्षा मज परमेश्वराच्या स्वरूपाचे ध्यान श्रेष्ठ आहे आणि ध्यानापेक्षाही सर्व कर्मांच्या फळांचा त्याग श्रेष्ठ आहे. कारण त्यागाने परम शान्ती मिळते.

जो कोणत्याही प्राण्याचा द्वेष न करणारा, स्वार्थरहित, सर्वांवर प्रेम करणारा व अकारण दया करणारा, माझेपणा व मीपणा नसलेला, सुखात व दुःखात समभाव असलेला आणि क्षमावान म्हणजे अपराध करणार्यालाही अभय देणारा असतो; तसेच जो योगी नेहमी संतुष्ट असतो, ज्याने शरीर, मन व इंद्रिये ताब्यात ठेवलेली असतात, ज्याची माझ्यावर दृढ श्रद्धा असते, तो मन व बुद्धि मलाच अर्पण केलेला माझा भक्त मला प्रिय आहे.

ज्याच्यापासून कोणत्याही प्राण्याला त्रास होत नाही तसेच ज्याला कोणत्याही प्राण्याचा उबग येत नाही, जो हर्ष, मत्सर, भीती आणि उद्वेग इत्यादींपासून अलिप्त असतो, तो भक्त मला प्रिय आहे.जो कुणाचा द्वेष करीत नाही, हर्ष, शोक, भय, राग, क्रोध यात समतोल बाळगतात ते मला प्रिय आहेत.

ज्याला कशाची अपेक्षा नाही, जो अंतर्बाह्य शुद्ध, चतुर, तटस्थ आणि दुःखमुक्त आहे, असा कर्तृत्वाचा अभिमान न बाळगणारा माझा भक्त मला प्रिय आहे.

जो शत्रु-मित्र आणि मान-अपमान यांविषयी समभाव बाळगतो, तसेच थंडी-ऊन, सुख-दुःख इत्यादी द्वंद्वात ज्याची वृत्ती सारखीच राहते, ज्याला आसक्ती नसते,

ज्याला निन्दा- स्तुती सारखीच वाटते, जो ईशस्वरूपाचे मनन करणारा असतो, जो काही मिळेल त्यानेच शरीरनिर्वाह होण्याने नेहमी समाधानी असतो, निवासस्थानाविषयी ज्याला ममता किवा आसक्ती नसते, तो स्थिर बुद्धि असणारा भक्तिमान पुरुष मला प्रिय असतो.

परंतु जे श्रद्धाळू पुरुष मत्परायण होउन या वर सांगितलेल्या धर्ममय अमृताचे निष्काम प्रेमभावनेने सेवन करतात, ते भक्त मला अतिशय प्रिय आहेत.

आभार प्रदर्शन:

कमलजी कौशल यांनी हे विवेचन सत्र यशस्वी करण्यासाठी ज्यांचा हातभार लागला त्या सर्वांचा उल्लेख करून आभार प्रदर्शन केले.

शेवटी जयपूरवासी भावना शर्मा जी यांनी समापन प्रार्थना सादर केली.किरण जी मुंदडा यांनी हनुमान चालीसा च्या कोटी कोटी पठणाचा संकल्पा विषयी भाष्य केले आणि हनुमान चालीसा ने या विवेचन सत्राची सांगता झाली.



गीता चिन्तनिका

13, 14, 15वाँ अध्याय

20/02/24



https://www.youtube.com/live/O-YMGp_OjcQ?si=5jZ_UMVjaSX2LM27



जया एकादशी निमित्त चिंतनिका सत्रा चे आयोजन करण्यात आले. कार्यक्रमाची सुरुवात नेहमी प्रमाणे सुमधुर अशा गीता परिवाराचे वैशिष्ठ्य सांगणारे "गीता परिवार हमारा " या प्रेरणागीताने झाली.या सत्राचे

सूत्र संचालन बेंगलोर च्या मनीषा जी चावडा ताईने केले.

सूक्ष्म रुपात परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्दगिरिजी महाराज यांना साष्टांग वंदन करून त्यांचा आशीर्वाद घेऊन त्यांनी कार्यक्रमाची रूपरेषा सांगितली.

गीताव्रती अनिताजी यांनी आरंभ प्रार्थना म्हटली.तसेच

दिप प्रज्ज्वलन मुंबई च्या मुनिष अग्रवाल जी यांनी केले.या नंतर भगवद्गीतेत तेरावा चौदावा आणि पंधराव्या अध्ययचे क्रमवार पठाण करण्यात आले.तेराव्या अध्याय गुजराथ मधिल वडोदरा येथील गीताव्रती मीनल जी शहा यांनी प्रस्तुत केला.चौदावा अध्याय सोनाजी यांनी तर पंधरावा अध्याय नाशिक महाराष्ट्र येथील संध्याजी मुळे यांनी सादर केला.

गीता पठना नंतर या प्रस्तुत केलेल्या अध्यायांवर चिंतन करण्यात आले.



तेराव्या अध्याया वर बँकॉक थायलंड येथील गीताव्रती गीता सेवी रुपाजी झरिये यांनी विचार मंथन केले. त्यांनी काही श्लोकांची विभागणी केली.

हा अध्याय क्षेत्र (क्षेत्र) आणि क्षेत्रज्ञ (क्षेत्र जाणणारे) या दोन संज्ञांचा परिचय करून

देणारा आहे.तसेच 'क्षेत्र' बनवणाऱ्या घटकांचे आणि 'ज्ञाता'च्या गुणधर्मांचे वर्णन करणारा आहे.



क्षेत्र म्हणजे हे शरीर आणि आत्मा हा या 'क्षेत्राचा ज्ञाता' मानला जातो.

क्षेत्रज्ञ (क्षेत्राचा जाणता) हा आत्मा किंवा स्वतः आहे आणि स्व आणि परम हे शेवटी एक आहे.

प्रकृती आणि शरीरापासून वेगळे असलेल्या आत्म्याचे ज्ञान म्हणजे खरे ज्ञान (निरपेक्ष ज्ञान). ज्ञानी (ज्ञानी व्यक्ती) स्वतःला समजून घेतो आणि सन्मार्गाचा अवलंब करतो.

भगवंतांनी ज्ञानी मनुष्याचे असे अनेक सद्गुण सांगितले आहेत. हे सद्गुण आपण आत्मसात करावे अशी त्यांची इच्छा आहे. जेणेकरून आपण सन्मार्गाने परिपूर्ण ज्ञान प्राप्त करू शकू.

श्री भगवान म्हणाले, हे अर्जुना! हे शरीर क्षेत्र या नावाने संबोधले जाते आणि याला जो जाणतो त्याला, त्याचे तत्त्व जाणणारे ज्ञानी लोक 'क्षेत्रज्ञ' असे म्हणतात.हे अर्जुना! तू सर्व क्षेत्रांमध्ये क्षेत्रज्ञ अर्थात जीवात्माही मलाच समज. आणि क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ अर्थात विकारांसहित प्रकृती व पुरुष यांना जे तत्त्वतः जाणणे ते ज्ञान आहे, असे माझे मत आहे.पाच महाभूते, अहंकार, बुद्धी आणि मूळ प्रकृती तसेच दहा इंद्रिये एक मन आणि पाच इंद्रियांचे विषय अर्थात शब्द, स्पर्श, रूप, रस आणि गंध .

क्षेत्र म्हणजे शरीर. हे शरीर प्रकृतीकडून बनते. या शरीरात परमात्म्याचा, परम पुरुषाचा अंश जीव म्हणून आश्रय घेतो.

प्रकृती आणि पुरुष ही दोन्हीही सृष्टीची मूलतत्त्वे अनादि आहेत, आदिम आहेत. पुरुष अविकारी असतो. प्रकृती बदलत असली तरी ती नष्ट होत नाही. मूळ किंवा अव्यक्त प्रकृतीमध्ये सत्त्व, रज आणि तम हे तीन गुण साम्यावस्थेत असतात. या साम्यावस्थेत विकार उत्पन्न झाले असता अव्यक्त प्रकृती व्यक्त होऊन सृष्टीची निर्मिती होते. तसेच शरीर प्रकृतीजन्य असल्याने ते प्रकृतीसारखे विकारशील असते. सत्त्व, रज आणि तम या त्रिगुणांच्या प्रभावाखाली मनुष्य कर्म करत असल्याने आहार, श्रद्धा, दान, तप, यज्ञ आदी सर्वांचे त्रिगुणांना अनुसरून सात्त्विक, राजसी आणि तामसी असे भेद होतात. पंचमहाभूते, इंद्रिये, इंद्रियांचे विषय, मन, बुद्धी आणि अहंकार हे सर्व प्रकृतीजन्य आहेत.प्रकृती आणि पुरुष हे दोन्हीही अनादि आहेत, असे तू समज आणि जसे महाकाश विभागरहित



असूनही घड्यांत वेगवेगळे असल्यासारखे भासते, तसाच परमात्मा सर्व भूतात एकरूप असूनही वेगवेगळा असल्यासारखा भासतो.

प्रकृती आणि पुरुष, म्हणजे चैतन्य याबद्दल पुढे भगवान सांगतात. चैतन्याला आदी नाही. प्रकृती आणि पुरुष दोघेही अनादी आणि अनंत आहेत. आपण जे पण बदल पाहतो ते प्रकृती मुळे होत असतात. पण परमात्म्याचे तत्व कधीच बदलत नाही.

कार्यकरणकर्तृत्वे, हेतुः प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः सुखदुःखानां, भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते॥13.20॥

कार्य व करण यांच्या उत्पत्तीचे कारण प्रकृती म्हटली जाते आणि जीवात्मा सुखदुःखांच्या भोगण्याला कारण म्हटला जातो. अशाप्रकारे क्षेत्र व क्षेत्रज्ञ यांतील भेद तसेच कार्यासह प्रकृतीपासून मुक्त होण्याचा मार्ग ज्ञानदृष्टीने जे पुरुष तत्त्वत: जाणतात, ते महात्मे परम ब्रह्म परमात्म्याला प्राप्त होतात.

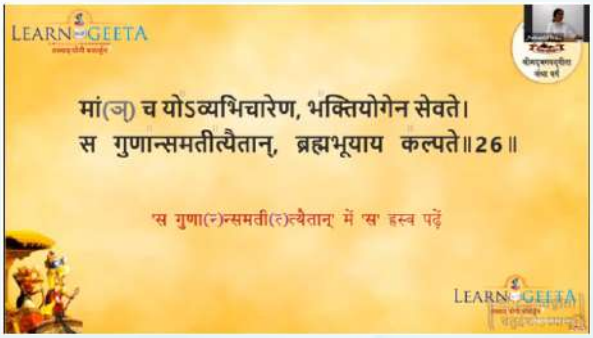
क्षेत्र आणि क्षेत्रज्ञ मधला भेद कसे पाहता येईल? हा भेद ज्ञानचक्षु द्वारा पाहणे शक्य आहे. हा अध्याय आपली विवेकबुद्धी (ज्ञानचक्षु) विकसित करण्यासाठी कार्य करतो. या अध्यायाचे वारंवार चिंतन केल्याने हळुहळु अज्ञानाचा पडदा दूर होईल आणि ज्ञानमार्गाने भगवंताची प्राप्ती होईल. क्षेत्र, क्षेत्रज्ञाचे अंतर पाहता येईल, प्रकृती म्हणजे काय? तिचे कार्य काय आहे? भूत कोण आहे? विश्वाची निर्मिती झाली का, झाली असेल तर विश्व काय आहे? जो सर्व काही बघतो, क्षेत्र क्षेत्रज्ञा बद्दल भावना जाणतो, तत्व जाणतो, त्याला परमात्मा प्राप्त होतो. आपण अशा भगवंता जवळ कधी पोहोचू याची काळजी करण्याची गरज नाही. तो आपल्यावर अतोनात प्रेम करतो.

सर्वतः पाणिपादं तत्, सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके, सर्वमावृत्य तिष्ठति॥13.13॥

ते सर्व बाजूंनी हात-पाय असलेले सर्व बाजूंनी डोळे, डोकी व तोंडे असलेले, तसेच सर्व बाजूंनी कान असलेले आहे. कारण ते विश्वात सर्वाला व्यापून राहिले आहे.ज्या प्रमाणे सर्वत्र व्यापलेले आकाश सुक्ष्म असल्याकारणाने लिप्त होत नाही त्याचप्रमाणे देहात सर्वत्र व्यापून असलेला आत्मा निर्गुण असल्यामुळे देहाच्या गुणांनी लिप्त होत नाही.

आकाश सर्वत्र आहे. आकाश म्हणजे अवकाश, रिकामी जागा. परमाणू मध्ये, शरीरा मध्ये आत आणि बाहेर सर्वत्र रिक्त जागा असते. आकाश सर्वत्र आहे पण ते लिप्त होत नाही.

अध्याय चौदावा : गीताव्रती मिनूजी झंवर यांनी अध्याय चौदावा गुणात्रयविभाग योग यावर सखोल चिंतन केले.अतिशय मोजक्या पारिभाषेत त्यांनी या अध्यायातील संकल्पना स्पष्ट केलंय. ब्रह्म सूत्रात वर्णन केलेल्या राजसी, तामसी आणि सात्विक गुणांचे विविध दाखले देऊन विवेचन केले.



श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि, ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे, परां सिद्धिमितो गताः॥14.1॥

श्रीभगवान म्हणतात ज्ञानांतीलही अति उत्तम ते परम ज्ञान मी तुला पुन्हा सांगतो की, जे जाणल्याने



सर्व मुनीजन या संसारातून मुक्त होऊन परम सिद्धी पावले आहेत. हे ज्ञान श्री भगवंतांनी अर्जुनाला दिले.

परंतु अर्जुनाच्या चेहऱ्यावरील हावभावांवरून भगवंतांच्या हे निश्चित लक्षात येते की आपण देत असलेले ज्ञान अर्जुनाला फारसे समजले नाही.

भगवान म्हणतात हे अर्जुन! ज्ञानातील सर्वोत्तम परमज्ञान मी तुला अधिक विस्ताराने सांगतो. हे ज्ञान ऐकल्यावर,सर्व मुनिजन या संसार सागरातून मुक्त होतात आणि परमसिद्धीला पोहोचतात. त्यांचा उद्धार होतो.

संसारातील समस्त विविधता, पंचतत्त्वांच्याही वरची स्थिती, सूक्ष्म- स्थूल विविधतेचे एकमात्र कारण सत्त्व, रज, तम गुण हेच आहे. सर्व बाबतीत याच तीन गुणांमुळे विविधता आहे. हे अर्जुना! सत्त्वगुण, रजोगुण आणि तमोगुण हे प्रकृतीपासून उत्पन्न झालेले तिन्ही गुण अविनाशी जीवात्म्याला शरीरात बांधून ठेवतात.

"अर्जुना, सत्त्व, रज, तम हे तीन गुणच, म्हणजे प्रकृतीच जीवात्म्याला या संसाराशी बांधून ठेवते."

चेतन आणि जड तत्त्वाचा संयोग कसा होतो कारण एक नित्य आणि दुसरे अनित्य, एक क्षय तर दुसरे अक्षय. यावर भगवंत म्हणतात आत्मतत्त्व तीन गुणांमुळे बंधनात अडकते.

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि, मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभि तन्निबध्नाति भारत॥14.8॥

हे अर्जुना! सर्व देहाभिमानी पुरुषांना मोह पाडणारा तमोगुण अज्ञानापासून उत्पन्न झालेला आहे, असे समज. तो या जीवात्म्याला प्रमाद, आळस आणि झोप यांनी बांधतो.रजोगुण म्हणजे 'मी' आणि 'माझे' मानणारा. या गुणांनी युक्त असणारे लोक देहालाच 'मी' मानतात. तमोगुणामुळे अज्ञान निद्रा आणि आळस वाढीला लागतो. हे सगळे अज्ञानामुळे घडत असते.श्रेष्ठ (सात्विक) कर्माचे सात्विक अर्थात सुख, ज्ञान आणि वैराग्य इत्यादी निर्मळ फळ सांगितले आहे. राजस कर्माचे फळ दुःख तसेच तामस कर्माचे फळ अज्ञान सांगितले आहेअर्जुन उवाच

कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतान्, अतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः कथं चैतांस्, त्रीन्गुणानतिवर्तते॥14.21॥



अर्जुन म्हणाला, या तिन्ही गुणांच्या पलीकडे गेलेला पुरुष कोणकोणत्या लक्षणांनी युक्त असतो? आणि त्याचे आचरण कशाप्रकारचे असते? तसेच हे प्रभो! मनुष्य

कोणत्या उपायाने या तीन गुणांच्या पलीकडे जातो? श्रीभगवान म्हणाले, हे अर्जुना! जो पुरुष सत्त्वगुणाचे कार्यरूप प्रकाश, रजोगुणाचे कार्यरूप प्रवृत्ती आणि तमोगुणाचे कार्यरूप मोह ही प्राप्त झाली असता त्यांचा विषाद मानत नाही आणि प्राप्त झाली नाही तरी त्यांची इच्छा करीत नाही,

जो पुरुष निरंतर आत्मभावात राहून सुख- दुःख समान मानतो, माती, दगड आणि सोने यांना सारखेच मानतो, ज्याला आवडती व नावडती गोष्ट सारखीच वाटते, जो ज्ञानी आहे आणि स्वतःची निंदा व स्तुती ज्याला समान वाटतात.जो मान व अपमान सारखेच मानतो, ज्याची मित्र व शत्रू या दोघांविषयी समान वृत्ती असते, तसेच सर्व कार्यांत ज्याला 'मी करणारा' हा अभिमान नसतो, त्याला गुणातीत म्हणतात.

समदुःखसुखः स्वस्थः, समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरः, तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः॥14.24॥

जो पुरुष निरंतर आत्मभावात राहून सुख- दुःख समान मानतो, माती, दगड आणि सोने यांना सारखेच मानतो, ज्याला आवडती व नावडती गोष्ट सारखीच वाटते, जो ज्ञानी आहे आणि स्वतःची निंदा व स्तुती ज्याला समान वाटतात.

पंधराव्या अध्यायाचे विवेचन गुजराती भाषेत गीताव्रती देवलजी मेहता यांनी त्यांच्या रसाळ वाणीतून केले.

या अध्यायात आदिपुरुष परमेश्वराचे मूळ असलेल्या ब्रह्मदेवाला मुख्य फांदी संबोधले आहे.तसेच ज्या अश्वत्थवृक्षाला जो अविनाशी आहे त्याला संसाररूप म्हटले आहे. वेद ही या अविनाशी वृक्षाची पाने म्हटली आहेत, त्या संसाररूप वृक्षाला जो पुरुष मुळासहित तत्वतः जाणतो, तो वेदांचे तात्पर्य जाणणारा आहे.त्या संसार वृक्षाच्या तिन्ही गुणरूप पाण्याने वाढलेल्या, तसेच विषयभोगरूप अंकुरांच्या, देव, मनुष्य आणि पशु-पक्ष्याची योनिरूप फांद्या खाली व वर सर्वत्र पसरल्या आहेत. तसेच मनुष्ययोनीत कर्मानुसार बांधणारी अहंता-ममता आणि वासनारूप मुळेही खाली आणि वर सर्व लोकांत व्यापून राहिली आहेत.या संसारवृक्षाचे स्वरूप जसे सांगितले आहे, तसे येथे विचारकाली आढळत नाही. कारण याचा 'आदी' नाही, 'अन्त' नाही. तसेच त्याची उत्तम प्रकारे स्थिरताही नाही. म्हणून या अहंकार, ममता आणि वासनारूपी अतिशय घट्ट मुळे असलेल्या संसाररूपी अश्वत्थवृक्षाला बळकट वैराग्यरूप शस्त्राने कापून टाकले आहेत.

ज्यांचे मान व मोह नष्ट झाले, ज्यांनी आसक्तिरूप दोष जिंकला, ज्यांची परमात्म्याच्या स्वरूपात नित्य स्थिती असते आणि ज्यांच्या कामना पूर्णपणे नाहीशा झाल्या, ते सुख-दुःख नावाच्या द्वंद्वापासून मुक्त झालेले ज्ञानीजन त्या अविनाशी परमपदाला पोचतात. संसाराचे मूळ ईश्वर आहे आणि ईश्वर



सर्वोच्च आहे त्यामुळे विश्वाला उर्ध्वमूल म्हटले आहे. ईश्वरी संकल्पानुसार ब्रह्मदेव या संसाराचा विस्तार करणारा असल्याने तो त्या संसारवृक्षाची मुख्य शाखा (खोड) आहे. म्हणून या संसारवृक्षाला



'अधःशाखा' असणारा वृक्ष म्हणतात.

मुख्य शाखारूप ब्रह्मदेवापासून सर्व लोकांसह देव, मनुष्य आणि पशुपक्ष्यादी योनींची उत्पत्ती आणि विस्तार झाला आहे. म्हणून त्यांचे येथे फांद्यांच्या रूपात वर्णन केले आहे.

या वृक्षाच्या शाखारूपी ब्रह्मदेवापासून प्रगट होणारे व यज्ञादी कर्माच्या द्वारा या संसारवृक्षाचे रक्षण व वृद्धी करणारे तसेच त्याची शोभा वाढविणारे वेद असल्यामुळे त्यांना 'पाने' म्हटले आहे.

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध हे पाचही विषय स्थूल देह आणि इंद्रिये यांहून सूक्ष्म असल्यामुळे त्यांना शाखांचे 'अंकुर' म्हटले आहे.

भगवंतांच्या योगमायेपासून उत्पन्न झालेला हा संसार क्षणभंगुर, नाशवंत आणि दुःखरूप असल्यामुळे याचे चिंतन सोडून केवळ परमेश्वराचेच नित्य, निरंतर अनन्य प्रेमाने चिंतन करणे, हेच 'वेदांचे तात्पर्य जाणणे' होय.

अहंता, ममता आणि वासनारूप मुळे केवळ मनुष्ययोनीत कर्मांनुसार बांधणारी आहेत. असे म्हणण्याचे कारण हे आहे की, इतर सर्व योनीत केवळ पूर्वकृत कर्माची फळे भोगण्याचाच अधिकार आहे आणि मनुष्ययोनीत नवीन कर्मे करण्याचाही अधिकार आहे.

संसारवृक्षाची परंपरा केव्हापासून चालत आली आहे, याचा थांगपत्ता लागत नसल्याने याचा 'आदि' माहिती नाही, तर याची परंपरा पुढे किती काळ चालू राहील हे देखील माहित नसल्याने याचा 'अंत' ज्ञात नाही. हा वास्तवात क्षणभंगुर व नाशिवंत आहे म्हणून हा उत्तम प्रकारे स्थिरही नाही. त्यामुळे सर्व भोग क्षणिक व नाश पावणारे आहेत असे समजून या सांसारिक सर्व विषयभोगांमध्ये सत्ता, सुख, प्रीती आणि सौंदर्य न भासणेच 'बळकट वैराग्यरूप शस्त्र' आहे. स्थावर-जंगमरूप अखिल संसाराविषयीच्या चिंतनाच्या तसेच अनादी काळापासून अज्ञानाच्या द्वारा दृढ झालेली अहंता, ममता आणि वासनारूपी मुळांचा त्याग करूनच संसारवृक्षाच्या अवांतर मुळांसह मुक्त होता येते.



जे अभिमान आणि मोह यांच्यापासून मुक्त झाले, ज्यांनी आसक्तीरूपी दोषावर विजय मिळवला आहे, जे सतत ईश्वराच्या स्वरूपात मग्न आहेत, जे वासनांपासून मुक्त झाले आहेत, जे सुखदुःखांच्या द्वंद्वापासून मुक्त झाले आहेत, अशा उच्च श्रेणीतील मानपानमोहविरहित साधकांना त्या अविनाशी परमपदाची प्राप्ती होते. आता भगवंत त्या परमपदाची माहिती देणार आहेत, आपला पत्ता सांगणार आहेत. मीच सर्व प्राण्यांच्या शरीरात राहणारा, प्राण व अपानाने संयुक्त वैश्वानर अग्निरूप होउन चार प्रकारचे अन्न पचवितो.

भगवंतांनी प्रथम पृथ्वीमध्ये शिरून भूतमात्रांचे भरण पोषण ते कसे करतात हे सांगितले. आता हेच कार्य देहात त्यांच्या शक्तीने कसे होते हे, ते सांगतात. तीन प्रकारचे अग्नी असतात- वडवाग्नी, दावाग्नी आणि वैश्वानर किंवा जठराग्नी. जो प्रकट अग्नी आपण पाहतो तो दावाग्नी होय. समुद्रात जो अग्नी प्रज्वलित होतो त्याला वडवाग्नी म्हणतात. इथे वैश्वानर किंवा जठराग्नीविषयी सांगितले आहे. जठराग्नी हा पोटातील अग्नी आहे. हा भक्षण केलेल्या अन्नाचे पचन करतो. सकाळपासून संध्याकाळपर्यंत आपण जरी सतत आईस्क्रीम सारखे थंड पदार्थ खाल्ले तरी त्यापासून तयार होणारे मलमूत्र गरमच असते, कारण पोटात त्या थंड पदार्थांवर जठराग्नीचे संस्कार झालेले असतात.

परंतु या दोन्हींपेक्षा उत्तम पुरुष तर निराळाच आहे. जो तिन्ही लोकांत प्रवेश करून सर्वांचे धारण-पोषण करतो. याप्रमाणे तो अविनाशी परमेश्वर आणि परमात्मा असा म्हटला जातो.

भगवंत म्हणतात, "अर्जुना, नाशवंत प्रकृती आणि अविनाशी चैतन्य यांच्या पलीकडे असलेला जो उत्तम पुरुष तिन्ही लोकांना धारण करतो, त्यांचे भरण पोषण करतो, तो उत्तम पुरुष निराळाच आहे".

महाकाश, मठाकाश, घटाकाश एकच आहे परंतु यांना सांभाळतो तो कोण? ईश्वराने आपली निर्मिती केली पण आपण त्याला निर्माण करू शकतो का? आपण परमात्म्याचे केवळ अंश आहोत. समुद्राचे सर्व गुण त्याच्या थेंबात असतात पण थेंब म्हणजे समुद्र असतो का? थेंब, थेंब मिळून समुद्र होत असला तरी थेंब म्हणजे काही समुद्र नाही.

परमात्माच अंशरूपाने जीवात्मा होतो. परमात्मा या संसाराला निर्माण करतो. आपण कुठे जन्माला येऊ? कुठे राहू? कधी आपला मृत्यू होईल? ते आपल्याला सांगता येत नाही. याची सर्व सूत्रे परमात्म्याच्या हातात असल्याने तो उत्तम पुरुष आहे. पुरुषोत्तम, पुरुष आणि प्रकृती या क्रमात पुरुष पुरुषोत्तमाच्या जवळ आहे. त्या पुरुषाचाच अंश जीवात्मा जो आपल्या देहात वसतो तो देखील पुरुषोत्तमाच्या जवळ आहे.

कारण मी नाशवान जडवर्ग-क्षेत्रापासून तर पूर्णपणे पलीकडचा आहे आणि अविनाशी जीवात्म्यापेक्षाही उत्तम आहे. म्हणून लोकांत आणि वेदांतही पुरुषोत्तम नावाने प्रसिद्ध आहे.

. या अध्यायात उत्तम पुरुष असे आपल्या स्वरूपाचे वर्णन भगवंतांनी केले आहे म्हणूनच या अध्यायाचे नाव पुरुषोत्तम योग असे आहे. भगवंत म्हणतात,

"नश्वर जीवात्मा आणि अविनाशी चेतनतत्त्व यांच्या भरणपोषणाचे काम करणारा मी एकमेव परमात्मा आहे. (परमात्मा जीवात्म्यापेक्षा उत्तम असल्याने तो पुरुषोत्तम म्हणून प्रसिद्ध आहे). पुरुषांमधील उत्तम असा मी पुरुषोत्तम आहे. अशा रीतीने मी तुला तुझे स्वरूप आणि माझे स्वरूप सांगितले आहे".

इति गुह्यतमं शास्त्रम्, इदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्, कृतकृत्यश्च भारत॥15.20॥

हे निष्पाप अर्जुना! असे हे अतिरहस्यमय गुप्त शास्त्र मी तुला सांगितले आहे, याचे तत्वतः ज्ञान करून घेतल्याने मनुष्य ज्ञानवान आणि कृतार्थ होतो.

भगवंतांना अर्जुनाचे दोन गुण खूप आवडतात - एक अनघ (निष्पाप) आणि दुसरा अनसूय (कोणाचीही असूया न करणारा) . या अध्यायाचा समारोप करताना ते म्हणतात, "हे निष्पाप अर्जुना! अशा प्रकारे मी तुला हे अत्यंत महत्त्वाचे आणि रहस्यमय ज्ञान सांगितले आहे. हे जाणून घेतल्याने मनुष्य बुद्धीमान आणि कृतकृत्य होतो".

गुह्यतम म्हणजे कोणालाच सांगता येणार नाही इतके गुप्त, इतकेच नव्हे तर ज्याला ते सांगायचे आहे त्याची तशी योग्यता असणे हे ही आवश्यक आहे. आपल्यालाही या गुह्यतम ज्ञानाचे श्रवण करता आले यावरून कोणत्यातरी जन्मातील पुण्याईमुळे, भगवंतांच्या कृपेने आपल्याला हे प्राप्त झाले आहे हे लक्षात येईल. अजून आपल्याला ऐकलेले ज्ञान आचरणात जरी आणता आले नसले तरी ऐकण्याची तरी निश्चितच पात्रता प्राप्त झाली आहे.

भगवंतांनी या अध्यायाला शास्त्र म्हटले आहे. मंगल, अमंगल सर्व प्रसंगी या अध्यायाचे पठण केले जाते. भगवंत म्हणतात, "हे शास्त्र जो जाणतो तो कृतार्थ होतो".

भगवंतांनीच या अध्यायाला शास्त्र म्हटले आहे. म्हणून, जर पुरेशा वेळेअभावी एकच अध्याय वाचायचा असेल तर पंधरावा अध्याय वाचण्यासाठी सर्वात योग्य आहे कारण त्याला स्वतः भगवंतांनीच शास्त्राची मान्यता दिली आहे. या अध्यायाचे सार जाणून घेतल्याने मनुष्य बुद्धीमान आणि ज्ञानी बनतो आणि त्याचे जीवन फलदायी बनते.

या सत्राची सांगता

आभार प्रदर्शनाने झाली.गीताव्रती पुनीता प्रसाद जी



यांनी ऋणनिर्देश व्यक्त केले. सर्वात आधी त्यांनी गीता परिवाराचे वटवृक्ष ज्यांनी विस्तारित केले " वसुदेव कुटुंबकम " या उक्ती नुसार संपूर्ण विश्वात गीता परिवाराच्या फांद्या विस्तारित केल्या असे परम पूज्य स्वामी श्रीगोविंददेवगिरिजि महाराज यांना चरण स्पर्श केले. तसेच पुढे

पुज्यबस्वामीजी यांनी आ. संजय भैय्या,आ.आशू भैय्या आणि श्री.हरी नारायण जी व्यास यांना प्रेरित केले नी विश्वात गीता पोहोचवली. असा उल्लेख करून त्यांचे आभार व्यक्त केले. गीता सेवी निर्मलाजी मारू यांनी निस्वार्थ वृत्तीने सेवा दिली असा उल्लेख केला.कविता जी दीदी यां गीता परिवारात देत असलेल्या सेवे साठी त्यांचे ऋण व्यक्त केले.शेवटी सत्राचा दिप स्तंभ असलेली तांत्रिय सेवा टीम च्या सहकार्याबद्दल आभार व्यक्त केले. त्यात श्री गोपाल दादा,दीपक दादा यांचा नामोल्लेख केला. समापन प्रार्थना मिनाजी द्विवेदी आझमगड उत्तर प्रदेश यांनी सादर केली. हनुमान चालीसा ने सत्र संपन्न झाले. चरण पादुका सेवा - 22 जनवरी 2024 - अयोध्या धाम बधाई हो! रामलला पुनः अयोध्या में विराजमान हुए.



चरण पादुका सेवा

अयोध्या धाम

22/02/24



बधाई हो! रामलला पुनः अयोध्या में विराजमान हुए



जय श्री राम

अहोभाग्यम्! सनातन संस्कृति के प्राण श्री रामलला अपने पावन धाम अयोध्यापुरी में 22 जनवरी 2024 को पुनः प्रतिष्ठित हो गये हैं।

केवल ऋषि, महर्षि , साधु, संत, प्रतिष्ठित व्यक्तित्व ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का, ब्रह्माण्ड का कण कण रामभक्ति से परिपूर्ण हो उठा और प्रत्येक राम भक्त के मुख से बस जय श्रीराम के नारे, चित्त में रामलला के दर्शन की अभिलाषा है। मानो कलयुग में ही त्रेतायुग अवतरित हो गया हो और हर कोई इस सुनहरे पल का साक्षी बनना चाहता हैं। इसका वर्णन शब्दों में करना कठिन है।

"आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनम्, आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति, श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्॥2.29॥"

इस अवसर पर गीता परिवार को पादुका सेवा का सौभाग्य मिला। जो अपने आप में परम कल्याणकारी है। महाभारत काल में किये गये राजसूय यज्ञ में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं पादुका सेवा का कार्य स्वीकार किया और यह संदेश दिया था कि सेवा परम आदर्श है। यह दूसरों के प्रति वह सद्भाव है जो लोक कल्याण को साकार करता

है। भगवान कहते हैं मंदिर का चमकता हुआ स्वर्ण कलश जितना महत्वपूर्ण है उतना ही नींव का पत्थर



यानि आन्तरिक स्वच्छता।

गीता परिवार द्वारा लगभग 9000 आगंतुकों की पादुका सेवा का नियोजन मात्र 2 दिन



में किया जाना था, जो कि सरल कार्य नहीं था। परन्तु कार्यकर्ताओं के अदम्य उत्साह, गीता परिवार की अनुभवी दृष्टि और परम पूज्य स्वामीजी के आशीर्वाद द्वारा यह संभव हो पाया। प्रातः 9 बजे से रात्रि 2 बजे तक प्रतिदिन आदरणीय आशू भैयाजी के निर्देशन में सभी कार्यकर्ताओं द्वारा पूर्ण सुव्यवस्थित ढांचा खड़ा किया गया। इसमें 25000 से भी अधिक नट कसे गये। अतिथियों के पांव से स्वयं पादुका उतारने जमा करने से लेकर, सभी के हाथ सुगंधित जल से स्वच्छ करवाना, पादुकाओं की सफाई करना, सहेजना व वापस लौटने पर साधकों को अपने हाथों से पादुका पहनाने का काम गीता परिवार के सदस्यों द्वारा किया गया। इस कार्य में सभी सेवकों के बस भाव यही थे कि धन्य भाग्य हमारे। जैसा कि आशू भैयाजी



हमेशा कहते आए हैं कि हमारे पूर्व जन्म के फलस्वरूप ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है । माननीय अतिथियों के प्रशंसा भाव "आपकी पादुका सेवा सबसे सुव्यवस्थित व सराहनीय है", यह अपने आप में गीता परिवार की कार्यप्रणाली का परिचय देते है। सभी आये हुए महानुभावों को Learngeeta पत्रक वितरित कर गीता परिवार के कार्यक्रम की जानकारी भी दी गयी ।

सेवा कार्य से मन का अंहकार दूर होता है।



हम मनुष्यत्व की ओर अग्रसर होते हैं। इस मर्म को गीता परिवार ने समझा और कलयुग में रामलला की प्रतिष्ठा से बढ़कर राजसूय यज्ञ क्या होगा! भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी प्रिय पादुका सेवा में अपने प्रिय गीता परिवार एवं श्रीदुर्गाजी मंदिर समिति के गीताभक्तों को इस सेवा का अवसर प्रदान किया।



















गीता भक्ति महोत्सव

आलन्दी 4 - 11 फरवरी 2024



प. पू स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज के 75वें जन्मोत्सव के गरिमामय अवसर पर पुणे के पावन तीर्थस्थल आलंदी में 'गीताभक्ति अमृत महोत्सव' का आयोजन किया गया। इस अष्टदिवसीय महोत्सव में देशभर के प्रसिद्ध संत और गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित रहें।

इस भव्य के आयोजन के अवसर पर 15 हजार लोगों की आस्था का संगम हुआ। इस महोत्सव में हवन-पूजन, कीर्तन और श्रीमद्भागवत कथा की विशाल व्यवस्था की गयी। धार्मिक श्रद्धालुओं और श्रोताओं हेतु इस विशेष अवसर पर टेंट में 70 हजार स्क्वायर फीट के भोजन की व्यवस्था की गई। इसके साथ ही अतिविशिष्ट लोगों के लिए उचित पार्किंग की व्यवस्था भी की गई।

इस महोत्सव में राजनीति, अध्यात्म और सामाजिक क्षेत्र के विख्यात जन उपस्थित हुये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मा. मोहनराव भागवत जी, योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज, साध्वी ऋतंभरा जी और आचार्य बालकृष्ण जी जैसे प्रमुख व्यक्तित्व महोत्सव में शामिल हुए। वेदपाठी आचार्यों द्वारा 81 हवन कुंडों से लगातार यज्ञ-हवन भी हुआ जो कि इस उत्सव का एक अत्यन्त मुख्य अंग रहा। इसके साथ ही 6 हजार लोगों ने हरि पाठ किया।

इस महोत्सव में देश के उत्कृष्ट संतों और मनीषियों का मार्गदर्शन मिला और जनमानस को नई दिशा मिली। इस कार्यक्रम में सभी ने खूब आनन्द प्राप्त किया।

परमार्थ में गुरु द्वारा मन्त्रोपदेश व गुरुप्रसाद की प्राप्ति दोनों ही अति महत्वपूर्ण माने जाते हैं। स्वामी श्री गोविन्ददेव देव गिरिजी महाराज ने वेद विद्यालयों व गीता संथा वर्ग की स्थापना कर हम सभी को कृतार्थ किया है। गीतोपदेश व मन्त्रोपदेश इसका अर्थ है विद्यादान व शक्तिदान संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज अपने एक अभंग में कहते हैं-

कृपा कटाक्षे न्याहाळिले, आपल्या पदी बसविले।
बाप रखुमादेविवरू विट्ठले , भक्तादिधले वरदान॥

अर्थात् गुरु की कृपा यह भक्त के लिए वरदान होती है। हितोपदेश व मन्त्रोपदेश यह एक प्रकार का शक्तिदान है। श्रद्धेय स्वामीजी ने पचहत्तर संतों का सम्मान सम्पूर्ण अमृत महोत्सव के निमित्त करने का संकल्प किया। विद्वानों के सम्मान द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन पर्व का आरंभ हुआ।

ज्ञानीजनों की साधना, अभ्यास व वैराग्य से सफल होती है, ये संत महात्मा स्थितप्रज्ञ होते हैं। सभी संतों के साथ स्वामीजी का स्नेह बंधन अटूट है। गीताजी में स्थितप्रज्ञ पुरुषों के लक्षण सर्वत्र उल्लेखित हैं।

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्॥2.54॥

तृतीय दिवसीय कृतज्ञता ज्ञापन पर्व पर सभी संतों का आशीर्वाद सर्व उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों को प्राप्त हुआ, संतों के महासंगम से तीर्थक्षेत्र आलंदी कुंभ सदृश हो गया।

पूज्य स्वामीजी ने सर्व प्रथम लोकेश मुनिजी व गीता महर्षि श्रीज्ञानानन्दजी का स्वागत किया तत्पश्चात् श्री ज्ञानानन्दजी स्वामी महाराज व योगेश मुनिजी की उपस्थिति मे स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महराज ने केरल के राज्यपाल महामहिम श्री आरिफ मोहम्मद खानजी का स्वागत शॉल व स्मृति चिह्न देकर किया।

ज्ञानी संत सम्मान मूर्तियों का सम्मान

-स्वामीजी व केरल के महामहिम राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खानजी के शुभ करकमलों द्वारा शॉल व भगवान राम की मूर्ति के स्मृतिचिह्न द्वारा संतों का सत्कार किया गया।

1. सम्मान के प्रथम पायदान पर पंडित श्री उल्लासजी कशाळकर आये, जिनके गान व गायकी से चैतन्य व उल्लास जाग्रत होता है। आपकी संगीत साधना बेजोड है। आपमें जयपुर, ग्वालियर व आगरा तीनों घरानों का त्रिवेणी संगम है। श्री कशाळकरजी के द्वारा कई सक्षम विद्यार्थी तैयार किये गये हैं।

2. सर्व रागों में कठिन द्रुपद राग की गायकी को प्रसारित करने वाले शास्त्रीय संगीत के सुविख्यात पंडित श्रीउदयजी भवाळकर का सम्मान उभय वृंद श्री स्वामीजी व राज्यपालजी द्वारा किया गया। गौरवोद्गार में स्वामीजी ने कहा नामशेष होते द्रुपद राग को श्री भवाळकरजी ने नव संजीवनी प्रदान की।

3. महाराष्ट्र में चलने वाली गणेश साधना के शास्त्रीय लेखनकार गानपत्य पंडित श्री स्वानन्दजी पुंड जो उत्तम लेखक, प्रवचनकार, वक्ता, व्याख्याता व शिक्षक भी हैं, उनकी लिखित ग्रंथावली का उल्लेख कर उनकी विद्वत्ता को गौरान्वित किया।

4. इन त्रिमूर्तियों का स्वागत सत्कार कर आगे के सूत्र संचालन के लिए गिरीश भैया पधारे व उन्होंने गीता परिवार के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आशूजी गोयल को प्रास्ताविक वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया।

डॉ. आशूजी गोयल का प्रास्ताविक वक्तव्य



दिनांक 4 फरवरी से स्वामीजी के जन्म का अमृत महोत्सव प्रारंभ हुआ। सारे शिष्यवृंदों की लालसा थी की श्रद्धेय स्वामीजी का जन्मोत्सव एक अमिट व अविस्मरणीय क्षण बन जाए, किंतु जिनके मन में न कोई लोभ हो न कोई कामना ऐसे स्वामीजी ने यह निवेदन सुनकर इतना बड़ा उत्सव न करना चाहा ,वे सिर्फ आलंदी तीर्थक्षेत्र में भागवत सप्ताह करना चाहते थे, बस सारे शिष्यों ने आलंदी तीर्थ क्षेत्र पर संत संगम आयोजित किया। संत वृंदों का आलंदी में आगमन हुआ, केरल के राज्यपाल महामहिम आरिफ मोहम्मद खान जी भी आमंत्रण स्वीकार कर आये व कुंभ मेले जैसा संत मेला छा गया। जैन पद्धति का अनुगमन कर साधनारत लोकेश मुनिजी भी पधारे। आदरणीय मारूती महाराज का वंदन व पूजन स्वयं स्वामीजी ने किया, स्वामीजी ने कहा "यह जन्मोत्सव मेरा नहीं सारे जन जन का है , जिन्होंने अपना सारा जीवन साधना में समर्पित किया ऐसे कर्म योगियों का सत्कार होना चाहिए।" आशू भैया ने प्रस्तावना का आरंभ प्रार्थना व गुरु चरणों के वंदन से किया। आ. आशू जी ने अपनी रामायणी शैली से वक्तव्य आरंभ किया ...

शुभचिन्ह शोभे, मुनिमन लोभे,
सरसिज फूले, अलिरस घोले।
दुर्लभ संतन के मिलन से साजे,
आलंदी सबके मन लागे॥

मंच पर उपस्थित सभी मुनिवृंदों को प्रणिपात, राज्यपाल जी को वंदन, स्वामीजी को दंडवत प्रणाम कर आ.आशू भैया बोले "माऊली की कृपा से स्वामीजी ने गीता भक्ति महोत्सव के रूप में अमृत महोत्सव मनाने की स्वीकृति दी। लाखों लोगों में भारतीय सनातन पद्धति के प्रति पूर्ण श्रद्धा जाग्रति के उद्देश्य को समक्ष रख माऊली की धरती पर व संत श्री तुकाराम महाराज के गुरुकुल वेदश्री तपोवन के मध्य धर्मरक्षा हेतु समर्पित, मंचों व प्रसिद्धि से दूर रहने वाले पचहत्तर विद्वानों का सत्कार कर कृतज्ञता ज्ञापन करने की व आलंदी में श्रीमद्भागवत कथा के आयोजन की स्वीकृति पाकर सारे इस आयोजन की सफलता में जुड़ गये। दुर्लभ 81 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन स्वामीजी की वैदिक पाठशाला के 2500 वैदिक आचार्यों के द्वारा किया गया। पांच सौ से अधिक लोगों की भूमिका से सुशोभित नाटक "यह पुण्यप्रभाव हमारा भी किया गया।

इन्द्रायणी के तट पर दस हजार साधकों द्वारा तेरह भाषाओं में गीताजी सीखने वाले साधकों द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का पारायण किया गया। आलंदी की पवित्र भूमि और भी पावन हो गयी।

पचास हजार अपेक्षित उपस्थिति से कहीं अधिक लोग जन्मोत्सव निमित्त आलंदी आये। संतो का यह अभूतपूर्व संगम, भगवान से परम भक्ति का स्पंदन अनुभव करा गया।

"जय ज्ञानेश्वर माऊली, जय आलंदी" का जय घोष सारा आसमंत व्याप्त कर गया।



वामांगी जानकी, भ्राता लक्ष्मण व मध्य में राम की त्रिमूर्ति स्मृति चिह्न के स्वरूप भेंट में देकर सारे संतवृंदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई।

वैराग्य से आनन्द प्राप्ति होती है व मोह से दुःख मिलता है, यह स्पष्ट हो गया। धर्म से पूर्ण संतों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा द्विगुणित कर दी। जन्मोत्सव तो निमित्त मात्र था। वास्तव में इस गीता भक्ति अमृत महोत्सव का आयोजन लाखों लोगों के मन में वेदों व सनातन संस्कृति के प्रति आस्था जाग्रत करने का था।

सभी संत व महापुरुष विभूषित करने वाले उपनामों या भेट वस्तुओं के लोभ से परे मोह से दूर मानव व्यवहार में धर्म की स्थापना करने की लालसा से आलंदी तीर्थक्षेत्र में दूध का दूध व पानी का पानी करने की क्षमता रखने वाले हंसों की तरह एकत्रित हुए थे।

तीनों सत्कार मूर्तियों का करतल ध्वनि से स्वागत कर सूत्र संचालन का भार श्री गिरीश भैया को सौंपा गया। भैयाजी ने स्वामीजीसे मार्गदर्शक मनोगत प्रस्तुत करने की विनती की।

प. पू. स्वामीजी का उद्बोधन

श्रद्धेय स्वामी श्री गोविन्ददेव गिरिजी महाराज ने रामचरित मानस के बालकांड का प्रथम श्लोक मंगलाचरण से अपने वक्तव्य का प्रारंभ किया।

स्वामीजी ने कहा "षट्तिला एकादशी के इस पावन पर्व पर आज प्रातःकाल से मैं प्रतिक्षण व्यस्त हूं, लोगों की शुभकामनायें, छोटों की शुभेच्छायें, बड़ों के आशीर्वाद स्वीकार कर रहा हूँ"।

जन्मदिन मनाने का मुझे शौक नहीं, इस देह के लिए कोई उत्सव करने में मुझे रस नहीं है, परंतु सम्पूर्ण संसार के 181 देशों से भाईचारे व समरसता की विचारधारा से एकत्रित हो सारे शिष्यवृंद निर्वाह कर सकते है। मित्रों के इस आश्वासन के कारण मुझे स्वीकृति देनी पड़ी।



मेरी इच्छा थी सारे संसार की समन्वय भूमि है आलंदी। सारे उदात्त विचार महाराज ज्ञानेश्वर से प्राप्त हुए हैं, मेरी श्रद्धा का केन्द्र है आलंदी, तो गीताभक्ति अमृत महोत्सव आलंदी में मनाया जाये।

संसार में जितने भी आध्यात्मिक स्थान हैं, उन सबसे सर्वाधिक ऊर्जा का स्थान है आलंदी। मित्रों के इस आश्वासन से कि हम भारतीय समस्त विचारों का निष्कर्ष श्रीमद्भागवत की कथा आलंदी में सुनायेंगे तथा ७५ ऐसे लोगों का सम्मान किया जायेगा जिनका सम्पूर्ण जीवन समाज, राष्ट्र, संस्कृति व मानवता की सेवा में लगा है, तो मैं तैयार हो गया।



देवद्विज गुरुप्राज्ञ पूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥17.14॥

मेरा ध्येय वाक्य "गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें" इस मार्ग पर चलते चलते बहुत आह्लाद होता है जब यह ध्यान आता है कि तीन वर्षों मे गीता परिवार के भाई बहिनों ने ऐसा चमत्कार किया है कि 180 देशों से छह वर्ष से उन्यासी वर्ष की आयु तक के साधक तेरह भाषाओं में, उन्नीस (19) समय सत्रों में गीता पढ़ रहे हैं। हमारा सारा जीवन गीता के लिए समर्पित हो जाना चाहिए। यह गीता भक्ति दिवस है। गीता भक्ति जीवन मूल्यात्मिका भक्ति है। "जीवन मूल्यों व सद्गुणों का विकास ही भगवद्भक्ति है"। तत्पश्चात् श्रद्धेय स्वामीजी ने केरल के राज्यपाल महामहिम श्री आरिफ मोहम्मद खानजी की शान में कुछ शब्द कहे। व्यक्ति को कैसे बनना चाहिए तो केरल के राज्यपाल आरिफजी के जैसे।

आरिफजी समन्वय के मार्ग पर बढ़ने वाले महापुरुष हैं। आपकी वाणी का प्रसार सर्वत्र हो, इसे अमानित्व कहते हैं। आपकी गुण सम्पदा का हम अभिवादन करते हैं। आपकी वाणी का लाभ आलंदी में उपस्थित समस्त साधकों व देश विदेश के कार्यकर्ताओं को प्राप्त हो।

राज्यपाल महामहिम आरिफजी का वक्तव्य

सर्वप्रथम महामहिम जी ने संत ज्ञानेश्वर महाराज व राष्ट्रसंत तुकाराम महाराज की पुण्यभूमि में उपस्थित सर्व भक्तगण जो ज्ञानयज्ञ के महत्वपूर्ण घटक थे, उनका अभिवादन किया। तत्पश्चात् श्रद्धेय स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज, गीता मनीषी श्री ज्ञानानन्दजी महाराज, श्री लोकेश मुनिजी महाराज, पूज्य स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी महाराज, मारुती कुर्हेकर महाराज, सभी संतों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। स्वामीजी के जन्मोत्सव का यह अनूठा आयोजन करने वाले सभी आयोजकों को उन्होंने साधुवाद कहकर प्रशंसा की। महामहिम बोले "यह उत्सव ज्ञान का, भक्ति का, राष्ट्रीय शक्ति जागरण का उत्सव है। भारतीय संस्कृति व्यक्ति की, समाज की, राष्ट्र की शक्ति मानव कल्याण के लिए समर्पित करने की प्रेरणा देने वाली है, यह उस संस्कृति का उत्सव है। आज इस मंच पर व यज्ञ कुण्ड के पास ज्ञानीसंत विराजमान हैं।

'जो मुझे सबके अन्दर देखता है और सभी को मेरे अन्दर देखे, वह न तो मुझसे अलग होता है और न मैं उससे अलग होता हूँ।'

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति॥13.27॥

जो विनाश होने वाले तत्त्व के अन्दर अविनाशी तत्त्व देखे वही देखने वाला है, नेत्रों वाला है। रामजी की मूर्ति स्मृतिचिह्न के रूप मे देना प्रासंगिक युक्तिसंगत है। यहां एक वनगमन का प्रसंग श्री आरिफजी ने सुनाया।



रामजी ने वनगमन का निर्णय लिया, राजतिलक की जगह वनवास की तैयारी की शुरुवात हुई, राजसी पोषाक त्यागकर वनवासी पेहराव हुआ। लक्ष्मणजी ने बहुत क्रोधित होकर पिता के लिए अपशब्द कहे। श्रीरामजी सुनते रहे और जब लक्ष्मणजी का क्रोध थोड़ा शांत हुआ। तब वे बोले कि हमारा आचरण हमारी सांस्कृतिक परम्परा के अनुसार हो, लक्ष्मण तुम नाराज हो कि चौदह वर्ष वन में त्रासदी झेलनी पड़ेगी, यह त्रासदी शरीर की है एवं तुम शरीर नहीं आत्मा हो जो कभी मरती नहीं है और न ही पैदा होती है। ये दो लाईनें हमारी सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए प्रासंगिक हैं।

महामहिम जी ने आदि शंकराचार्यजी के निम्नलिखित श्लोक के साथ अपना वक्तव्य समाप्त किया।

न मे द्वेषरागो न मे लोभमोहो,
मदो नैवं मे नैव मात्सर्यभावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः,
चिदानन्द रुपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

न मैं बुद्धी हूँ, न मैं द्वेष, न राग, न लोभ, न क्रोध हूं, मैं कुछ भी नहीं, मैं तो चिदानन्द हूँ। यह हमारी संस्कृति है। आज जब चारों ओर तनाव व अशांति नजर आती है, हम यह विश्व को दिखा दें कि हमारी संस्कृति किसी को दबाने के लिए नहीं वरन् मानव कल्याण के लिए समर्पित है।

लोका: समस्ता सुखिनो भवन्तु।

हिन्द की जय के साथ वक्तव्य समाप्त हुआ। गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिनारायण व्यासजी ने आभार प्रदर्शन का कार्य सम्पन्न किया।

राष्ट्र गीत के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ। इसीप्रकार अनेक वैदिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों के माध्यम से सभी को भारतीय संस्कृति की अमूल्य विरासत का अनुभव हुआ।



परमपूज्य स्वामीजी
श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

गीता भक्ति अमृत महोत्सव

मृदंगनाद एवं गीता पाठ



https://www.youtube.com/watch?v=4kXbaufB3uM



इंद्रायणी घाट- विशेष कार्यक्रम। परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरि जी महाराज का 75वाँ अवतरण दिवस - आळंदी।

परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज के चरणों में साष्टांग, दंडवत् नमस्कार के साथ इस कार्यक्रम का आरंभ अति मनमोहक, प्रफुल्लित मन से आनंदमयी वातावरण में किया गया। इस कार्यक्रम का सूत्रसंचालन हमारे आदरणीय, अतिप्रिय गीता परिवार के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष एवं लर्नगीता के कार्यक्रम संचालक, डॉ आशू गोयल जी लखनऊ द्वारा किया गया।

जय जय राम कृष्ण हरि, जय जय राम कृष्ण हरि के गीत के साथ परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज का पुष्पों से स्वागत किया गया। परम पूज्य स्वामी जी ने मंच पर विराजित होकर मंच को सुशोभित किया।

आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कोटा से एलन (ALLEN) इंस्टिट्यूट के संचालक श्रीमान गोविंद जी महेश्वरी का मंच पर स्वागत किया गया। आदरणीय आशू भैया जी ने मंच पर पधारे परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज से, आदरणीय गोविंद महेश्वरी जी से, डॉ. विश्वास सर जी से, भगवद् पूजा हेतु प्रार्थना की तथा श्री भगवान

का विधि विधान से, मंत्रों से पूजन किया गया। श्रीमान संदीप पंत जी, श्रीमान गिरधर जी काले भी प्रतिमा पूजा में सम्मिलित हुए। परम पूज्य स्वामी जी, श्रीमान थोरात जी ने भगवान राम जी का पूजन व वंदन किया।

"श्री राम जय राम जय जय राम। श्री राम जय राम जय जय राम।।"



इस गुणगान से सम्पूर्ण घाट गुंजायमान था, सम्पूर्ण वातावरण श्री राम में लिप्त था। तदुपरांत परम पूज्य स्वामी जी का सत्कार किया गया। संतों का पूजन किया गया। कार्याध्यक्ष श्रीमान काले जी, श्रीमान गोविंद जी महेश्वरी, डॉ. कराड सर जी, श्रीमान काले जी सभी ने मनोभाव में संतों का पूजन किया। आज के इस गीता पाठ के कार्यक्रम के मुख्य आदरणीय यजमान श्री गोविंद जी महेश्वरी, ज्योति प्रसाद जी, उर्मिला जी तापड़िया जी आदि सभी का अभिनंदन स्वागत और सत्कार किया गया।

गीता भक्ति अमृत महोत्सव के कार्याध्यक्ष श्रीमान गिरधर जी ने स्वामी जी को माल्यार्पण कर कार्यक्रम का आरंभ किया। आदरणीय हरि नारायण व्यास जी ने श्रीमान कराड जी का सम्मान किया। सभी मंच पर विराजित पदाधिकारी का कार्यक्रम में स्वागत किया गया। इस कार्यक्रम का प्रास्ताविक बताते हुए सभी का स्वागत हुआ इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में गीता परिवार के पश्चिमांचल प्रभारी श्री गोविंद जी माहेश्वरी जी उपस्थित रहें। उनका भी स्वागत दामोदर दास जी मारू द्वारा किया गया। इस विश्वरूप दर्शन मंच जिसको विश्व शांति केंद्र कहा गया इसका निर्माण विश्वनाथ कराड जी द्वारा किया गया। 11,111 बालक गीता पाठ हेतु एवं 1,111 बालक मृदंग नाद हेतु शोभायमान हुए। इस सुंदर आयोजन हेतु आदरणीय कराड जी का हृदय की गहराइयों से धन्यवाद दिया गया।

आगे इस कार्यक्रम की सूत्र धारिका महीनों से जिन्होंने इस कार्यक्रम का प्रचार किया, इसकी तैयारी की, आज के कार्यक्रम को मूर्त रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गीता परिवार की अत्यंत वरिष्ठ कार्यकर्ता मध्यांचल प्रभारी जिनका पूरा जीवन परम पूज्य स्वामी जी के सेवा में आहूत है और बालकों की सेवा में आहूत हैं, योग एवं प्राणायाम जीवन के सूत्र है। ऐसी कर्मठ कार्यकर्ता प्रमिला जी माहेश्वरी ने स्वामी के बारे में कुछ शब्द कहे। सभी का धन्यवाद किया। आ. प्रमिला जी ने श्री कृष्ण जी की प्रार्थना की और कार्यक्रम में तेज उद्घोष किया।

योगेशं सच्चिदानंदं वासुदेवं व्रजप्रियम्।
धर्म संस्थापकं वीरं कृष्णं वंदे जगतगुरुम्॥
नमामि सद्गुरुम शांतम्, सच्चिदानंद विग्रहम्।
पूर्ण ब्रह्म परमानंदम्, ईश मालंदी वल्लभम्॥

कैवल्य चक्रवर्ती, सम्राट भगवान ज्ञानेश्वर महाराज

के इस पावन धरती पर माउली के परम पावन चरणों में प्रमिला जी माहेश्वरी ने कोटि-कोटि प्रणाम किया। सभी ने प. पू. स्वामी जी को प्रणाम किया। यह गीता भक्ति अमृत महोत्सव परम पूज्य स्वामी जी का 75वाँ अवतरण दिवस है। जो हम सभी मिलकर गीता भक्ति अमृत महोत्सव नाम से मना रहे हैं। यह एक उत्सव है। यह एक त्यौहार है। स्वामी जी का जीवन गीतामय है। जो भी गीता जी को जन-जन तक पहुँचाता है वह उनका अत्यंत प्रिय हो जाता है। यह गीताभक्ति दिवस आज राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। हमारे आ. आशू भैया जी अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष इन्होंने 180 देशों में गीता जी को पहुँचाया है। गीता जी हमारी संस्कृति का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। गीता वेदों का सार है इसलिए हम स्वामी जी का जन्म दिवस गीताभक्ति अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। आलंदी में गीता परिवार का कार्य योग सिखाने से, गुरुकुल में गीता ज्ञान देने से आरंभ हुआ। उसके पश्चात् वेदश्री तपोवन में अनेक शिविरों को करते-करते यह कार्य बढ़ता गया। इस कार्य ने अब विराट रूप ले लिया है। मन प्रसन्न है, आनंदित है। एक छोटा सा पौधा विशाल वृक्ष बन गया है, विशाल रूप धारण कर चुका है।

आज स्वामीजी के अवतरण दिवस के उपलक्ष्य पर 12वें व 15वें अध्याय का गीता पाठ करके सभी गीता साधकों ने गीता गाकर भेंट दी। भगवान ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा से यह भव्य रूप गीता परिवार का देखने को मिला। गुरुकुल के संचालकों का इस कार्यक्रम में संचालन हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया गया, गीता परिवार को और भी विराट रूप, विश्वरूप देना है। भगवान ज्ञानेश्वर महाराज की कृपा से स्वामी जी के आशीर्वाद से गीताभक्ति अमृत महोत्सव कार्यक्रम के कार्याध्यक्ष श्री गिरधारी जी तथा राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता विशारद संजय जी मालपाणी जी की प्रेरणा से, सहयोग से सारा कार्य आरंभ हुआ एवं गुरुकुल के बालकों ने बहुत सहयोग भी दिया। सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की गई, सभी को कार्यक्रम के संचालन हेतु प्रणाम किया गया।

भारत माता की जय...वंदे मातरम् .....वंदे मातरम् का गान निरंतर चल रहा था। आगे आ. आशू भैया जी ने कार्यक्रम की प्रस्तुति का विवरण दिया और गीता परिवार की अत्यंत वरिष्ठ कार्यकर्ता स्वर कोकिला



आ. सुवर्णा मालपाणी जी, गीता प्रवीण ज्योति शुक्ला जी, गीता प्रवीण रुपल शुक्ला जी, गीता प्रवीण कविता वर्मा जी द्वारा सभी के सहयोग से 12वें तथा 15वें अध्याय का पठन किया गया। मंच पर उपस्थित सभी वरिष्ठ उपस्थित साधकों, गुरुकुल के बालकों द्वारा बहुत ही सुंदर 12वें और 15वें अध्याय के संपूर्ण श्लोक भक्तियोग, पुरुषोत्तमयोग का प्रस्तुतिकरण अति मनमोहक, मधुर आवाज में आनंदित मधुर बंसी की तरह, कृष्णभक्ति में लीन होकर हुआ।

सभी ने एक साथ गीता गायन किया। प. पू. राजेंद्र दास जी महाराज का स्वागत आ. श्री गोविंद जी महेश्वरी ने किया।

गीत प्रस्तुतिकरण:

जब संत मिलन हो जाए, तेरी वाणी हरी गुण गाए।
जब संत मिलन हो जाए, तेरी वाणी हरी गुण गाए।
तब इतना समझ लेना, अब हरी से मिलन होगा॥

नहीं क्रोध किसी पे आए, सब में तो नज़र हरी आए।
तब इतना समझ लेना, अब हरी से मिलन होगा॥

आँखों से आंसू आए, दिन रात याद हरी आए।
कोई दूजा ना मन को भाए, दर्शन को मन ललचाए॥
तब इतना समझ लेना, अब हरी से मिलन होगा।

इस सुंदर गायन के पश्चात् पधारे संतों का आशीर्वाद सभी को प्राप्त हुआ। हरि भक्त नारायण जी, कैलास गायकवाड जी, अंकुश महाराज जी, विट्ठल गवांदे बाबा जी, शिव हरी जी, गायकवाड जी, शांताराम महाराज जी आदि सभी संतो का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सभी का सम्मान पुष्प माला से किया गया। मंच पर विराजित अतुल्य सभी संतो का आभार व्यक्त किया गया एवं स्वामी जी का आशीर्वाद सभी भक्तों को प्राप्त हुआ।

अब आगे कार्यक्रम में इतनी सुंदर मृदंगनाद की बारी



थी एवं सभी आतुर भाव के साथ प्रतीक्षा में थे। हमारे गुरुकुल के 1,111 बालकों द्वारा सुंदर मृदंगनाद किया गया।

मृदंगनाद:

विट्ठल विट्ठल जय हरी विट्ठल,
विट्ठल विट्ठल जय हरी विट्ठल।
पंढरीनाथ महाराज की जय। श्री हरि की जय।
सद्गुरु स्वामी की जय।
स्वामी गोविंद देव जी महाराज की जय।
विट्ठल विट्ठल जय हरी विट्ठल,
विट्ठल विट्ठल जय हरी विट्ठल।

इसका गान हुआ। पूरा वातावरण कृष्णमय था। अद्भुत दृश्य था जो आंखों में संपूर्ण जीवन विद्यमान होगा। इतना सुंदर बालकों को गुरुकुल में तैयार किया गया है। इंद्रायणी घाट पर सुंदर आकर्षित दृश्य मानो ऐसा लग रहा था कि साक्षात् भगवान श्री हरि पधारे हों। इतना सुंदर दृश्य जीवन में सर्वप्रथम देखने को सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक स्वर, एक ध्वनि, एक गुंजन, तार प्रभु से कुछ इस तरह जुड़ गए थे मानो भगवान साक्षात् सामने विराजमान हो। सभी संतों एवं स्वामी जी हरि रूप में विराजमान थे। मृदंग वादन का दृश्य अद्भुत था जो कि जय हरि विट्ठल के भजन के साथ हुआ। स्वामी जी के अवतरण दिवस पर यह अद्भुत वातावरण को अनुभव किया। एक स्वप्न जैसा लग रहा था।

परम पूज्य स्वामी जी भक्ति रस में डूबे हुए थे।

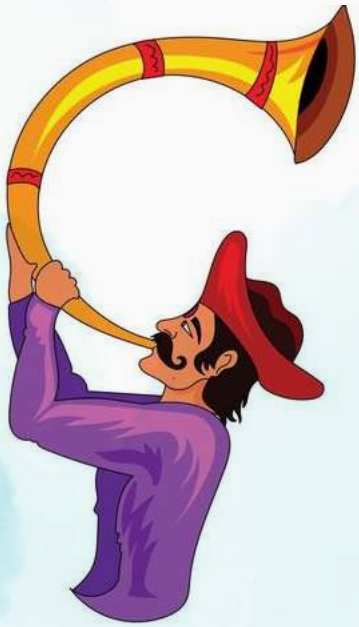
तुकारामssssss ज्ञान दीप, तुकारामssssss तुकाराम का कीर्तन हुआ।

पूरा इंद्रायणी घाट, परिसर भजन कीर्तन से गुंजायमान था, भजन कीर्तन से सम्पूर्ण वातावरण भक्ति रस से डूबा हुआ था। अत्यधिक मात्रा में लोगों की उपस्थिति थी। परमपूज्य स्वामी जी के दर्शन साधकों ने कियें। सभी संतो के दर्शन सभी ने किये। संपूर्ण व्यवस्था बहुत ही अच्छी थी एवं संतों की उपस्थिति में कार्यक्रम अद्भुत रहा। सभी को संतों की वाणी सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ एवं स्वामी जी की 75वीं वर्षगाँठ पर इंद्रायणी घाट पर दीप प्रवाहित किए गए। दीपावली जैसा अनुभव हुआ। सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।स्वामीजी द्वारा घाट की आरती की गई। सभी साधकों ने आनंद की अनुभूति की। आ. संजय भैया जी मालपाणी, आ. आशू भैया जी गोयल ने कार्यक्रम को पूर्णरूप से संभाला। यह अद्भुत एवं कठिन कार्य था जिसको पूर्णनिष्ठा, निपुणता के साथ निभाया गया। स्वामीजी के दर्शन हेतु साधकों की भीड़ उमड़ चुकी थी, इस प्रकार से



संपूर्ण कार्यक्रम अद्भुत रहा। उपस्थित सभी अतिथिगण, विद्यार्थीगण, गीता परिवार साधक सभी को बहुत-बहुत बधाई दी गई।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इस प्रकार कार्यक्रम का समापन किया गया।



सम्पूर्ण गीता पारायण (25वाँ)

https://www.youtube.com/live/E5K42DwJ2L0?si=47v1vfia0smeT1bG



जगद्गुरु श्रीकृष्ण और गीता परिवार के संस्थापक परम पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के चरणों में नमन करते हुए 10वें मार्च को पंचविंश सम्पूर्ण गीता पारायण का शुभारम्भ किया गया। स्मिता मूंदड़ा दीदी द्वारा प्रार्थना से इसका शुभारम्भ हुआ। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात् संचालक कमलवरा कौशल दीदी ने उपस्थित सभी का स्वागत किया। उन्होंने ये बताया कि इन पच्चीस पारायणों में सभी विभागो से 430 सदस्यों ने भाग लिया है। अभी रजत पारायण, अर्थात पच्चीसवें पारायण में गीता परिवार के वरिष्ठ सदस्यों और प्रशिक्षकों को पाठ करने के लिए आमंत्रित किया गया है।

सर्वप्रथम गीता विशारद आदरणीय श्रीनिवास वर्णेकर काकाजी ने न्यास, गीता माहात्म्य और ध्यान से प्रारम्भ करते हुए प्रथम अध्याय का पाठ किया।

इसके पश्चात् क्रमश: श्रुति कटगांवकर जी ने द्वितीय अध्याय, आ. विजय गोडबोले जी ने तृतीय अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक हिरल वैद्य जी ने चतुर्थ अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक विजय राजू जी ने पञ्चम अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक हिरल पटेल जी ने षष्ठ अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक विद्या राव जी ने सप्त अध्याय, आ. सुवर्णा मालपाणी काकी जी ने अष्टम अध्याय, आ. वंदना वर्णेकर काकी जी ने नवम अध्याय, सुश्री रूपल शुक्ला दीदी ने दशम अध्याय, सुश्री ज्योति शुक्ला दीदी ने एकादश अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री अशोक कुमार शर्मा जी ने द्वादश अध्याय, आ. श्री विकास वैद्य दादा ने त्रयोदश अध्याय, आ. श्रद्धा रावदेव दीदी ने चतुर्दश अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक रूपा ज़रिये दीदी ने पञ्चदश अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक सोनालिका रॉय दीदी ने षोडश अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक प्रिया सत्यम दीदी ने सप्तदश अध्याय, वरिष्ठ प्रशिक्षक तन्वी देसाई दीदी ने अष्टादश अध्याय पाठ किये।

अष्टादश अध्यायों के पारायण के पश्चात् वरिष्ठ प्रशिक्षक तन्वी देसाई दीदी क्षमाप्रार्थना की।

उसके पश्चात् संचालक जी ने गीता परिवार के अन्तरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष और लर्नगीता के प्रोग्राम डायरेक्टर डॉ. आशू जी गोयल भैया को मंच पर आमंत्रित किया। आ. आशू भैया श्रीकृष्ण और गुरुदेव के चरण वंदन करके सभी

को रजत पारायण में भाग लेने और साक्षी बनने के लिए अभिनन्दन करते हैं। पारायण के प्रसंग में उन्होंने कहा कि शास्त्रों का पूर्ण लाभ मिलता है जब वह मनसा-वाचा-कर्मणा तीनो रूप जीवन में लाया जाये। बहुत लोगो का मानना है कि बिना अर्थ समझे रटे हुए शास्त्र पाठ करना निष्फल है। पर वे यह नहीं जानते कि पढ़ते पढ़ते अर्थ समझ में आने ही लगता है। और बात अर्थ ज्ञात होने की नहीं, कर्म में उसकी झलक की है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है - खग ही जाने खग की भाषा। तो इस प्रकार की पारायण का क्या



अनुभव होता है ये वही जान सकता है जो उस पारायण में सम्मिलित हुए हों। जब तक पारायण का रस किसी ने लिया नहीं तब तक दूर बैठकर इसकी आलोचना करके इसे समझना मुश्किल बात है। जो इस पारायण में लगे, वह भगवान के अत्यंत प्रिय जीव है। भगवान के प्रत्यक्ष कृपा उस पर बरस रही है। हम अपने घर में भी पारायण करते हैं। उसका भी भारी महत्त्व है, भारी पुण्य भी है, बड़ा लाभ भी है। लेकिन कीर्तन और पारायण ये दो व्यक्तिगत से सामूहिक करने पर उसका प्रभाव करोड़ो गुना अधिक माना गया है। अगर सौ लोग मिलकर पारायण कर रहे है, तो उसका प्रभाव सौ नहीं, करोड़ो गुना हो जाता है ऐसा अनेक महापुरुषों ने शास्त्रकारों ने बारम्बार कहा है। गीता परिवार के इस रजत आयोजन पर सबका श्रद्धाभाव बड़ी आनंददायक है। आ. सुवर्णा काकी जी के सान्निध्य में हमने ये पारायण करना सीखें, इनकी कल्पना कर पाए हैं। आ. श्रुति दीदी, मनीषा बर्धन दीदी, मनीषा भरद्वाज दीदी आदि कार्यकर्ताओं ने इनका आयोजन इतना निपुण किया। कोई भी कार्य बिना योजना के या बिना लगन के होता नहीं। भगवान गीता में कहता हैं - योगः कर्मसु कौशलम्। Whatever you do, do it with utmost perfection. सारा काम ये utmost perfection से कैसे संभव हो रहा है?

18 अध्याय के 14 श्लोक में भगवान ने कहा -

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥14॥

बाकि सभी चार करण उपलब्ध हो भी जाय किन्तु जब तक भगवान की कृपा नहीं होती, कार्य सफल नहीं होता। तो गीता परिवार के लर्नगीता के हर संकल्प पर भगवान की इतनी कृपा बरसती है कि हमलोग जो सोचते हैं वह भगवान अपने आप ही पूरा करा देते हैं ऐसा लगता है। हम थोड़ा उत्साह लेकर उस काम में लगते हैं और हजारों लोग उस कार्य को सफल करने के लिए जुड़ जाते हैं।

हमलोग पञ्चविंश पारायण पूरा कर रहें हैं। संत ज्ञानेश्वर भगवान के कहा - गीता विवेक रूपी वृक्षों का अपूर्व बगीचा है। जितना जितना हम उसका पाठ करते जाते है उतना हमारा विवेक जाग्रत होता है।

हमारी प्रज्ञा का विकास होता है और हमारे भीतर शांति और धैर्य का निर्माण हो जाता है। अर्थ समझकर जीवन में लाना बहुत अच्छी बात है। लेकिन वह हो या न हो, केवल पारायण मात्र से अपने जीवन के सारे अंग बदलने लगते है। अपना शरीर, मन गीता के मन्त्रों से प्रभावित होते हैं। 574 श्लोक भगवान के श्रीमुखारविन्द से प्रस्फुटित हुए हैं। इसलिए सारे श्लोक मंत्रमय हैं। हम जैसे ही अपने कंठ में धारण करते हैं हमारा वाणी पवित्र हो जाता है। पूज्य स्वामीजी कहते हैं की हमारे ब्रेन का प्रोग्रामिंग ही चेंज हो जाता है। भगवान इस प्रकार का हमें पुण्य अवसर दे रहें हैं ही हम बारंबार अपनी घर बैठे, अपनी सुविधा से इतने बड़े पुण्यों का आयोजन कर पा रहे हैं। ये भगवान की और स्वामीजी की अत्यंत महती कृपा है। ये कृपा अविरत हम लोगो पर बहती रहें। ऐसी प्रार्थना के साथ आ. आशू भैया ने पुनः सबको अभिनन्दन किये।



इसके बाद गीता आरती सम्पूर्ण हुई। तत्पश्चात् वरिष्ठ प्रशिक्षक श्रुति नायक दीदी धन्यवाद ज्ञापन हेतु ज़ूम मंच पर पधारी। आ. आशू भैया के मार्गदर्शन से पिछले 6 महीनों से ये पारायण चल रहा है। इस पारायण को सम्भव करने के लिए और 'पारायण के लाभ' पर हमें मार्गदर्शन करने के लिए उनका धनवाद किया। पारायणकारों को और समापन प्रार्थना के लिए धर्मेश शाह भैया को भी धन्यवाद प्रकट किया। सर्वशेष समापन प्रार्थना के बाद सभी ने हनुमान चालीसा का सामूहिक गायन किया। अगले



सप्ताह का पारायण के लिए सबको आमन्त्रित करते हुए कमलवरा कौशल दीदी ने सत्र समापन की।

आदि शंकराचार्य भगवान के एक स्थान पर कहा कि अगर ध्यान करना हो तो विष्णु भगवान का ध्यान करें, चित्त में पिरोना हो तो सज्जनो के संग को इस तरह पिरोये, दीन-दुखियों को देना हो तो वित्त का आयोजन करें और गाने के लिए कभी कुछ मन हो तो श्रीमद्भगवद्गीता गायें।

गेयं गीता नाम सहस्रं ध्येयं श्रीपति रूपमजस्रम्।
नेयं सज्जन सङ्गे चित्तं देयं दीनजनाय च वित्तम्॥27॥

UAE SNEH MILAN

16/02/24



https://www.youtube.com/live/piJo55e3yaI?si=0dm9e9BN7szwUMNl



परम पूज्य स्वामी गोविंद देव गिरिजी महाराज का UAE के कार्यक्रम स्थल में आगमन हुआ। सभी भक्तगण प्रतीक्षा में थे। संपूर्ण वातावरण अत्यंत ही मनमोहन एवम् प्रफुल्ललित था। परम पूज्य स्वामी जी को पुष्पमाला पहनाई गई, परम पूज्य स्वामी जी की आरती साधकों द्वारा की गई। स्वामी जी सिंहासन पर विराजित हुए। स्वामी जी के दर्शन की लालसा भक्तों में कुछ ऐसी थी मानो भगवान् श्री कृष्ण जी के दर्शन कर रहे हैं। स्वामी जी ने पुष्प वर्षा चहुँ ओर कर वातावरण को शुद्ध किया। इस प्रकार से स्वामी जी के दर्शन करने हेतु कई जन्म के सौभाग्य की आवश्यकता होती है। एक सुंदर प्रतिमा की भाँति स्वामी जी का स्वागत व पूजन किया गया। स्वामी जी ने कहा मैं सभी की सेवा में उपस्थित हूँ, और आशीर्वचन दिये।

योगेशं सच्चिदानंद वासुदेवं व्रजप्रियम्। धर्मसंस्थापकं वीरं कृष्णंवन्दे जगद्गुरु॥

सभी गीता परिवार के साधक, भक्तगण गीता परिवार के इस कार्यक्रम में सम्मिलित थे। सभी ने एक-एक करके अपना परिचय दिया। गीता परिवार यूएई (UAE) के कोषाध्यक्ष बैजनाथ जी ने बताया UAE में दो बार संपूर्ण गीता पाठ हो गया है। सचिव पूजा दीदी भी कार्यक्रम में उपस्थिति हुई। सभी भारतीय साधक गीता परिवार से जुड़ें थे एवं यूएई में रहते हैं सभी एकत्रित हुए एवं स्वामी जी को सभी ने अपना परिचय दिया एवं संवाद किया। भूमिका शाह जी, विधि जी, पूजा जी जो की ट्रेनर है, 20 साल से दुबई में रहती है, इन्होंने कहा संस्कृत में गीता जी सीख पा रहे हैं यह बहुत बडीं अद्भुत कल्पना है। अन्य साधकों का परिचय सत्र हुआ कुछ साधक सेवा दे रहे हैं, कुछ गीता परिवार में गीता सीख रहे हैं, कुछ गीता परिवार के साधक गीता जी का आयोजन कर रहे हैं। रीता जी, अजय जी, हरीश कुमार लखोटिया जी, वीरेंद्र शाह जी, यह सभी गीता परिवार के साधक उपस्थित थे। विनीत लाहोटी जी और मानसी लाहोटी जी सभी लोग कुछ ना कुछ गीता परिवार में सेवाएँ दे रहे हैं। सभी के सहयोग से

कार्य सुचारु रूप से चलता रहता है। गीता परिवार का यही अद्भुत कार्य इतनी सुंदर तरीके से देश-विदेश में रह रहे लोगों के द्वारा चल रहा है। सभी बाल गोपाल ने भी परिचय दिया हनुमान चालीसा बालकों को सीखना चाहिए यह संदेश स्वामी जी ने सभी बाल गोपालों को दिया।

UAE मैं कई साधक ऐसे थे जिन्होंने संस्कृत पहली बार सीखा हैं। स्वामी जी से मिलकर, गीता परिवार से जुड़कर सभी अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं। भारतीय संस्कृति को विदेशों में जीवित देख स्वामी जी भी अत्यंत प्रसन्न थे।

स्वामी जी के आशीर्वचन:

श्री राम जय राम जय जय राम।
श्री राम जय राम जय जय राम॥

इस गान के साथ स्वामी जी ने अपने वचन कहे। स्वामी जी ने कहा मुझे प्रश्न सुनना है सर्वप्रथम में प्रश्नों का समाधान करना चाहूँगा। परमपूज्य स्वामी जी ने कहा - मुझे वेदों का आदेश है रोज कुछ ना कुछ नया पढ़ना, अभ्यास करना, अध्ययन करना और बोलना परंतु सर्वप्रथम मैं प्रश्नों तक पहुँचना चाहता हूँ। इसके पश्चात् साधकों के द्वारा प्रश्न पूछे गयें जिनका समाधान प. पू. स्वामीजी द्वारा किया गया। सभी ने स्वामी जी के दर्शन किये, आशीर्वाद प्राप्त किया। इस प्रकार से स्वामी जी और साधकों के बीच का सुंदर संवाद समाप्त हुआ। दीप प्रज्वलित किए गए। सुंदर गुरु दर्शन का तथा संवाद का यह सौभाग्य यूएई (UAE) के सभी साधकों को प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद ही आनंद चहुँ ओर छाया हुआ था। आरती व पूजन संपन्न हुआ।



SNEH MILAN, Karnataka

03/03/24

ದಿನಾಂಕ 03-03-2024, ಭಾನುವಾರ ಭಗವದ್ಗೀತಾ ಪ್ರೇಮಿಗಳಿಗೆ ಅತ್ಯಂತ ಸಂತೋಷದ ದಿನ. ಬೆಂಗಳೂರು ಹಾಗೂ ಹತ್ತಿರದ ಸ್ಥಳಗಳ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಕಾರ್ಯಕರ್ತರಿಗೆ ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಕಾರ್ಯಾಧ್ಯಕ್ಷರಾದ ಡಾ. ಆಶು ಗೋಯಲ್ ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರನ್ನು ಮುಖತಃ ಭೇಟಿಯಾಗುವ ಸುಸಂದರ್ಭವು ಒದಗಿಬಂದಿತ್ತು. ಪೂಜ್ಯ ಸ್ವಾಮೀಜಿ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದದೇವಗಿರಿಜೀ ಮಹಾರಾಜ್ ಅವರ `ಪ್ರತಿ ಕರದಲ್ಲೂ ಗೀತೆ, ಪ್ರತಿ ಮನೆಯಲ್ಲೂ ಗೀತೆ' ಎನ್ನುವ ಮಹಾ-ಅಭಿಯಾನದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀ ಆಶು ಗೋಯಲ್ ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರಂತಹ ಮಹನೀಯರು ನಿಸ್ವಾರ್ಥದಿಂದ ಕೈಜೋಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. ದೇಶ-ವಿದೇಶಗಳಲ್ಲಿ ಸಾವಿರಾರು ಕಾರ್ಯಕರ್ತರು ಸ್ವಯಂಸೇವಕರಾಗಿ ಈ ಅಭಿಯಾನದಲ್ಲಿ ಜೊತೆಯಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಪೂಜ್ಯ ಸ್ವಾಮೀಜಿಯವರ ಆಶೀರ್ವಾದದೊಂದಿಗೆ ಶ್ರೀ ಆಶು ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರ ಸಾರ್ಥಕ ನೇತೃತ್ವದಲ್ಲಿ ಲಕ್ಷಾಂತರ ಜನರು ಆನ್ಲೈನ್ ಮೂಲಕ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಸಂಸ್ಕೃತ ವ್ಯಾಕರಣಕ್ಕನುಸಾರವಾಗಿ ಕಲಿಯುತ್ತಿದ್ದಾರೆ.

ಬೆಂಗಳೂರಿನ ವಿದ್ಯಾರಣ್ಯಪುರದಲ್ಲಿರುವ ಶ್ರೀ ಕಾಳಿಕಾ ದುರ್ಗಾ ಪರಮೇಶ್ವರಿ ದೇವಸ್ಥಾನದಲ್ಲಿ ಏರ್ಪಡಿಸಲಾಗಿದ್ದ `ಶ್ರೀ ಆಶು ಭೈಯ್ಯಾರವರೊಂದಿಗೆ ಸ್ನೇಹಕೂಟ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮ'ವು ಬಹಳ ಆಪ್ತವಾಗಿ ನಡೆಯಿತು. ಬೆಂಗಳೂರು, ಮೈಸೂರು ಮತ್ತು ಉಡುಪಿಯ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದಿಂದ ನಡೆಯುತ್ತಿರುವ ಕಾರ್ಯಚಟುವಟಿಕೆಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಶ್ರೀಮತಿ ರಾಧಾ, ಶ್ರೀ ಶ್ರೀನಾಥ್ ಹಾಗೂ ಶ್ರೀಮತಿ ಗಾಯತ್ರಿ ಹೊಳ್ಳ ಅವರಿಂದ ವರದಿಯನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸಲಾಯಿತು. ಶ್ರೀಮತಿ ಪೂಜಾ ಡೋಂಗ್ರೆ ಅವರು ಗೀತಾಸೇವಿಗಳಿಗೆ ಶ್ರೀ ಆಶು ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರ ಪರಿಚಯವನ್ನು ನೀಡಿದರು. ಶಾಲಾ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಆಫ್ಲೈನ್ನಲ್ಲಿ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಡುತ್ತಿರುವ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳನ್ನು ಶ್ರೀ ಆಶು ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರು ಅಭಿನಂದಿಸಿದರು.

ಗೀತಾ ಸೇವಿಗಳಿಂದ ಸನ್ಮಾನವನ್ನು ಸ್ವೀಕರಿಸಿದ ಶ್ರೀ ಆಶು ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರು ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ನಮ್ಮ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಹೇಗೆ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಬಹುದು ಎಂಬುದನ್ನು ಸರಳವಾಗಿ, ಪ್ರಾತ್ಯಕ್ಷಿಕೆಯ ಮೂಲಕ ಕಾರ್ಯಕರ್ತರಿಗೆ ವಿವರಿಸಿದರು. ಹೇಗೆ ಕೈಬೆರಳುಗಳಲ್ಲಿ ವ್ಯತ್ಯಾಸವಿದ್ದರೂ, ಅವು ಒಂದಾಗಿ ಮುಷ್ಟಿಯಾಗುವಂತೆ, ಯಾರ ಕಾರ್ಯವೂ ಕೂಡ ಕನಿಷ್ಠವಲ್ಲ. ಅವರವರ ಪಾಲಿಗೆ ಬಂದ ಕಾರ್ಯವನ್ನು ಫಲಾಪೇಕ್ಷೆ ಇಲ್ಲದೆ ಮಾಡಿದರೆ ಯಾವುದೇ ಸದುದ್ದೇಶವುಳ್ಳ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವು ಸಫಲವಾಗುತ್ತದೆ ಎಂದರು. ಯಾರಿಗಾದರೂ ಉಪದೇಶಿಸುವ ಮೊದಲು ನಾವು ನಮ್ಮನ್ನು ತಿದ್ದಿಕೊಳ್ಳಬೇಕು ಎನ್ನುತ್ತಾ, ಗಾಂಧೀಜಿಯು ಬೆಲ್ಲ ತಿನ್ನುತ್ತಿರುವ ಹುಡುಗನಿಗೆ ಅದನ್ನು ಬಿಡಲು ಹೇಳಬೇಕಾದರೆ, ಗಾಂಧೀಜಿಯು ತಾವು ಮೊದಲು ಬೆಲ್ಲ ತಿನ್ನುವ ಅಭ್ಯಾಸವನ್ನು ಬಿಟ್ಟ ಘಟನೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದರು. ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ `ನ ಚ ತಸ್ಮಾನ್ಮನುಷ್ಯೇಷು, ಕಶ್ಚಿನ್ಮೇ ಪ್ರಿಯಕೃತ್ತಮಃ' ಸಾಲನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸುತ್ತಾ, ಭಗವಂತನಲ್ಲಿ ಅನನ್ಯ ಪ್ರೇಮವನ್ನಿರಿಸಿರುವ ಯಾರೇ ಆದರೂ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಪಠಿಸಿದರೆ ಅವನು ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣನ ಪ್ರಿಯಭಕ್ತನಾಗುತ್ತಾನೆ ಎಂದರು. ಏಕೆಂದರೆ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಶ್ಲೋಕಗಳಲ್ಲಿ ಜೀವನದ ಸಮಸ್ಯೆಗಳಿಗೆ ಪರಿಹಾರವಿದೆ, ಅದರಿಂದ ಎಲ್ಲರಲ್ಲೂ ಭಾವನೆಗಳು ಪರಿಶುದ್ಧವಾಗುತ್ತವೆ. ಅಂತಹ ನಿಷ್ಕಲ್ಮಷ ಹೃದಯವುಳ್ಳ ವ್ಯಕ್ತಿ ಭಗವಂತನಿಗೆ ಪ್ರಿಯನಾಗುತ್ತಾನೆ ಎಂದು ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಮಹತ್ವವನ್ನು ತಿಳಿಸಿದರು.

ನಂತರ ಅವರು ಗೀತಾಸೇವಿಗಳೊಂದಿಗೆ ಆತ್ಮೀಯವಾಗಿ ಸಂವಾದ ನಡೆಸಿದರು. ಎಲ್ಲರ ಸಂದೇಹಗಳನ್ನು ಸೂಕ್ತವಾಗಿ ಪರಿಹರಿಸಿದರು. ಭಗವದ್ಗೀತಾದ ಚಾರ್ಧಾಮ ಯಾತ್ರೆಯಲ್ಲಿ (ನಾಲ್ಕು ಹಂತಗಳ ಕಲಿಕೆ) ಪಾಲ್ಗೊಂಡಿರುವ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳಿಗೆ ತಮ್ಮ ಹಿತವಚನಗಳಿಂದ ಸ್ಫೂರ್ತಿ ತುಂಬಿದರಲ್ಲದೆ, ಸೂಕ್ತ ಮಾರ್ಗದರ್ಶನವನ್ನೂ ನೀಡಿದರು.

ಶ್ರೀಮತಿ ಸೀಮಾ ಎಚ್.ಎಸ್. ಹಾಗೂ ಶ್ರೀಮತಿ ತನ್ವಿ ದೇಸಾಯಿ ಅವರು ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವನ್ನು ನಿರೂಪಿಸಿದರು. ಶ್ರೀ ಪ್ರಶಾಂತ ಕಾಮತ್ ಅವರು ಸ್ವಾಗತ ನುಡಿಗಳನ್ನಾಡಿದರು ಹಾಗೂ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವನ್ನು ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿ ಆಯೋಜಿಸಿದ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಶ್ರೀಮತಿ ಅರುಣಾ ಕೆ.ಆರ್. ಅವರು ವಂದನೆಯನ್ನು ಸಲ್ಲಿಸಿದರು. ಶ್ರೀ ಆಶು ಗೋಯಲ್ ಭೈಯ್ಯಾ ಅವರೊಂದಿಗಿನ ಈ ಸ್ನೇಹಕೂಟವು ಅಲ್ಲಿ ಸೇರಿದ್ದ ಎಲ್ಲಾ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳಿಗೂ `ಆನಂದೋತ್ಸವ'ದ ಅನುಭವವನ್ನು ನೀಡಿತು.

Geeta Pariwar USA

01/10/23

Amidst the euphoria of devotion and hearts gleaming with satisfaction, October 1st 2023 has marked the culmination of the concerted efforts of the volunteers of the Geeta Pariwar USA in organizing PP Swami Shri Govind Dev Giri ji Maharaj's visit to New Jersey.

The event inspired everyone present at the Maitri Milan USA, to rise and embark on a pure and pious journey, filled with the messages of the holy scripture, Shrimad Bhagawad Geeta. Every

attendee in a unique way sensed the quintessence of the beautiful compilation of this pious epic and decided to light a spark in their lives so that the rays of hard work of our PP Swami ji are spread wide and varied to the darkest corner of this earth.

Under the leadership of the international working President, respected Ashu Goyal bhaiya, the USA chapter is a massive effort to strengthen us and keep our roots of Sanaatan Dharm alive.



The goal is to not only teach the 700 verses of Shrimad Bhagawad Geeta with correct Sanskrit pronunciation and their underlying meanings, but also to consciously persist a life abiding by the teachings of this sacred epic.

December 22nd is marked as the auspicious day of Geeta Jayanti on Mokshada Ekadashi. Many of the Geeta Pariwar USA members embarked on a new journey to spread the 'Geeta Gyan' in their own special way by organizing Bhagawad Geeta Parayan and Hanuman Chalisa chanting at their homes and at nearby temples. Several opened their homes lovingly to invite their neighbors and coordinated various cultural activities.



On March 4th 2024 Chicago welcomed the working President of the Gita Pariwar, Respected Sanjay Ji Malpani bhaiya and Anuradha bhabhi. Despite being organized on a weekday, about 50 saadhaks were able to attend this "Sneh Meet". Thanks to the collaborative efforts of the calling team and passionate volunteers for this successful event. This leads to the formation of 'Chicago team 11'. The attendees got so impressed by respected Sanjay Bhaiya's speech, they are eagerly looking forward to many more similar great interactions.

In Charlotte, North Carolina, respected Sanjay bhaiya met with the enthusiastic HSS team members organized by USA Geeta Pariwar members. On March 10th, again with the efforts of our calling team about 70 saadhaks were able to take advantage of another "Sneh Meet" at the Shrinath Dham Haveli, North Carolina. This Sneh Meet was also a roaring success in the string of similar events and the formation of 'Charlotte Team 11'. A few weeks later, enthusiastic volunteers of Washington DC, Maryland and Virginia formed 'DMV Team 11'

Respected Sanjay bhaiya recognized and commended all the determined, dynamic, and diligent efforts by the flag bearers of Geeta Pariwar USA.

With the guidance of international coordinator, respected Rupal Shukla





didi we have started offline / hybrid activities. It is an initiative taken by the dedicated volunteers of the Geeta Pariwar USA for kids and grownups, to motivate and engage them with the activities including lessons for spiritual growth, personal and overall advancement. This is an uncomparable effort to provide guidelines and insight so that they can comprehend the true meaning of Shrimad Bhagawad Geeta.

Listed below are some of the





offline/hybrid activities that our team members here in the USA are manifesting. These are only a fragment of the mega events and achievements to follow with the blessings of our PP Swami Shri Govind Dev Giri Ji Maharaj.

1. Los Angeles, California-Grownups classes : level 2 (3 languages)

2. Chantilly, Virginia- Kids classes in a Temple - level 1

3. Enola, Pennsylvania - Grownups class - level 1

4. Houston Texas - Family classes - level 2 - (2 locations & 3 languages)

With all these ongoing initiatives we are looking forward to many more wonderful opportunities, and with the blessings from Shri Krishna himself, we are hoping to have the best year in our history!

मीठी बात

आशू भैया के साथ...

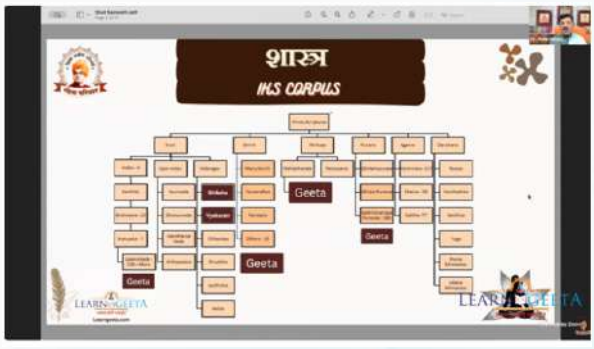


नववर्ष के प्रथम पर्व मकर संक्रांति के पावन अवसर पर आदरणीय आशू भैयाजी के साथ एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ बाल सखा विराट चौहान भैया द्वारा मधुर वाणी में प्रार्थना से किया गया। विराट चौहान भैया मुंबई (महाराष्ट्र) से है और अप्रैल 2023 से गीता परिवार से जुड़े हैं। आरंभ में आदरणीय आशू भैया ने 3 मार्च से आरंभ होने वाले लेवल -1 के नए सत्र के बारे में जानकारी दी। और नये सत्र का प्रचार करने का अनुरोध किया। इसके पश्चात् 4-11 फरवरी तक आलंदी (पुणे) में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रम अमृत महोत्सव के विषय मे जानकारी दी।

आदरणीय भैया ने इस शुभ अवसर पर शास्त्र ज्ञान की चर्चा करते हुए शास्त्र सम्मत जीवन पर बल दिया। उन्होंने बताया कि भारतीय परम्परा में छह शास्त्र हैं। (1) श्रुति (2) स्मृति (3) इतिहास (4) पुराण (5) आगम (6) दर्शन।

(1) श्रुति - जो सुनकर याद हो जाएं उसे श्रुति कहते हैं। श्रुति के अंतर्गत चार वेद, चार उपवेद और वेदान्त आते हैं।

(2) स्मृति - हमारे ऋषियों ने चार स्मृतियां बतलाई हैं, जिनमें मनुस्मृति सबसे प्राचीन हैं। और यही विश्व का सबसे प्रथम संविधान है।



(3) इतिहास - इतिहास में हमारे दो ग्रंथ आते हैं। महाभारत व वाल्मीकि रामायण।

(4) पुराण - हमारे अठारह पुराण हैं। अठारह महापुराण हैं और अठारह ही उपपुराण है।

(5) आगम - आगम अर्थात् उपासना पद्धति। इसके तीन प्रकार हैं। (1) वैष्णव आगम (2) शैव आगम एवं (3) शाक्त आगम।

(6) दर्शन - हिंदू धर्म के अनुसार छः प्राचीन दर्शन हैं। (1) न्याय (2) वैशेषिक (3) सांख्य (4) योग (5) मीमांसा (6) वेदान्त।

परन्तु इन शास्त्रों के अनुसार जीवन जीने का अधिकार उन्हें है जिनमें साधन चतुष्टय हैं अर्थात् शास्त्र सम्मत जीवन जीने के लिए निम्न गुण होने अनिवार्य है।



(1) विवेक (2) वैराग्य (3) षट्सम्पति (4) मुमुक्षत्व

1. विवेक - से ही मनुष्य को सही दिशा का ज्ञान होता है। विवेक और बुद्धि में अंतर होता है। बुद्धि हमें रास्ता दिखाती है लेकिन सही दिशा का ज्ञान विवेक के द्वारा ही प्राप्त होता है। विवेक की जागृति से जीवन उत्कृष्ट होता है। जीवन की सार्थकता विवेक से है।

होई विवेक मोह भ्रम भागा।
तब रघुनाथ चरण अनुरागा॥

विवेक मनुष्य को सत्संग से प्राप्त होता है गीता परिवार के माध्यम से कक्षाओं में सत्संग का लाभ पाकर साधक विवेक जागृति के मार्ग पर अग्रसर होते हैं।

2. वैराग्य - आसक्ति का त्याग। सेवा कार्य करने के लिए त्याग आवश्यक है। विवेक की वृद्धि के लिए वैराग्य आवश्यक है। सेवा ही साधना है और सेवा के लिए षट्सम्पति का होना अनिवार्य है।

3) षट्सम्पत्ति - (1) शम (2) दम (3) उपरति (4) तितिक्षा (5) समाधान (6) श्रद्धा

- शम - शम का तात्पर्य है मन का निग्रह। मन के निग्रह से इन्द्रियों को वश में किया जा सकता है। मन चंचल है, निग्रह कठिन है, परन्तु भगवान गीता में कहते हैं।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥6.34॥

अभ्यास से मन को वश में किया जा सकता है। और जो मनुष्य सांसारिक तृष्णाओं में नहीं फंसते वहीं सेवा के कार्य में अग्रसर होते हैं।

- दम - बाह्य इन्द्रियों का निग्रह। इन्द्रियों को विषयों से हटा लेना दम है। ईश्वर प्राप्ति तभी संभव है जब मन और इंद्रियों पर नियंत्रण हो।

भगवान कहते हैं:-

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥2.61॥

अर्थात् जिसकी इन्द्रियां वश में हैं उसी की बुद्धि प्रतीष्ठित है।

- उपरति - इन्द्रियों को विषयों से हटाकर सब कामनाओं से रहित हो जाना उपरति है। संसार में अनासक्त भाव से रहना ही उपरति है।

- तितिक्षा - अर्थात् सम रहना।

सम: शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयो:।
शीतोष्ण सुख दु:खेषु सम: संग विवर्जित:॥12.18॥

पूज्य गुरुदेव जी कहते हैं मैं उन रामजी की वंदना करता हूं जिनके मुख पर राज्याभिषेक के समय कोई प्रसन्नता नहीं है और बनवास के समय उनके मुख पर कोई मलिनता नहीं है।

जिसने सुख-दुःख में सम रहना सीख लिया वह मनुष्य भगवान को अत्यंत प्रिय है।

- समाधान - जब तितिक्षा आती है तो मन एकाग्र चित्त होता है। चित्त की एकाग्रता का नाम ही समाधान है। परमेश्वर में अपने चित्त को स्थापित करने का अभ्यास ही समाधान है।
- श्रद्धा - श्रद्धा तभी आती है जब ऊपर की पांच सम्पत्तियॉ आती है। श्रद्धा तर्क रहित होती है। जब मन में कोई प्रश्न नहीं होता। मेरे प्रभु को क्या अच्छा लगता है, इसके आगे कोई विचार नहीं है। गुरुपदिष्ट वेदान्त वाक्येषु विश्वास: श्रद्धा



शंकराचार्य जी कहते हैं षट्सम्पत्ति के बिना मोक्ष सम्भव नहीं है। आदरणीय आशू भैया ने बताया कि जितना हम गीता जी को जीवन में अपनाएंगे हम उतना ही समाधान प्राप्त करेंगे। आदरणीय भैया जी ने सभी गीता सेवी साधकों को भगवान का प्रिय बनने की प्रार्थना की और कहा कि हमें भगवान से भौतिक सुख की बजाय षट्सम्पत्ति मांगनी चाहिए।

इसके पश्चात् आदरणीय भैया ने सभी गीता सेवी साधकों की शंका का समाधान किया।

प्रश्नोत्तर सत्र में उन्होंने बताया कि :-



सनातन धर्म शाश्वत है जिसका न आदि है न अंत है। सेवा तभी सार्थक है जब सेवा कार्य में सात्विक भाव हो, राजस भाव नहीं।

मनुष्य अपने कर्मों से ब्राह्मण बनते हैं। मानव के साथ कई जन्मों के संस्कार चलते है। हम जैसे कर्म करते हैं वैसे ही कुल में उत्पन्न होते हैं। संघर्ष से घबराना नहीं चाहिए। समय परिवर्तनशील है। प्रकृति का नियम है कि अच्छा यदि सदैव नहीं रहता तो बुरा भी सदैव नहीं रहता। प्रकृति सबको मुस्कराने का अवसर देती हैं। इसलिए सदैव मुस्कराते रहें। भगवान कृष्ण ने जन्म लेने के साथ ही संघर्षों को सहन किया परंतु सदैव मुस्कराते रहें। वे अहंता - ममता से बंधे नहीं। साधना से ही अंहता/ममता छूट सकती है। अपना दृष्टिकोण बदल कर ही हम कष्ट दूर कर सकते हैं। जीवन में समन्वय स्थापित करें। प्रयास करें कि भगवत् सेवा कभी छूटे नही।

मोक्ष का अर्थ है पुनर्जन्म न हो। न कि शरीर का छूटना मोक्ष है।

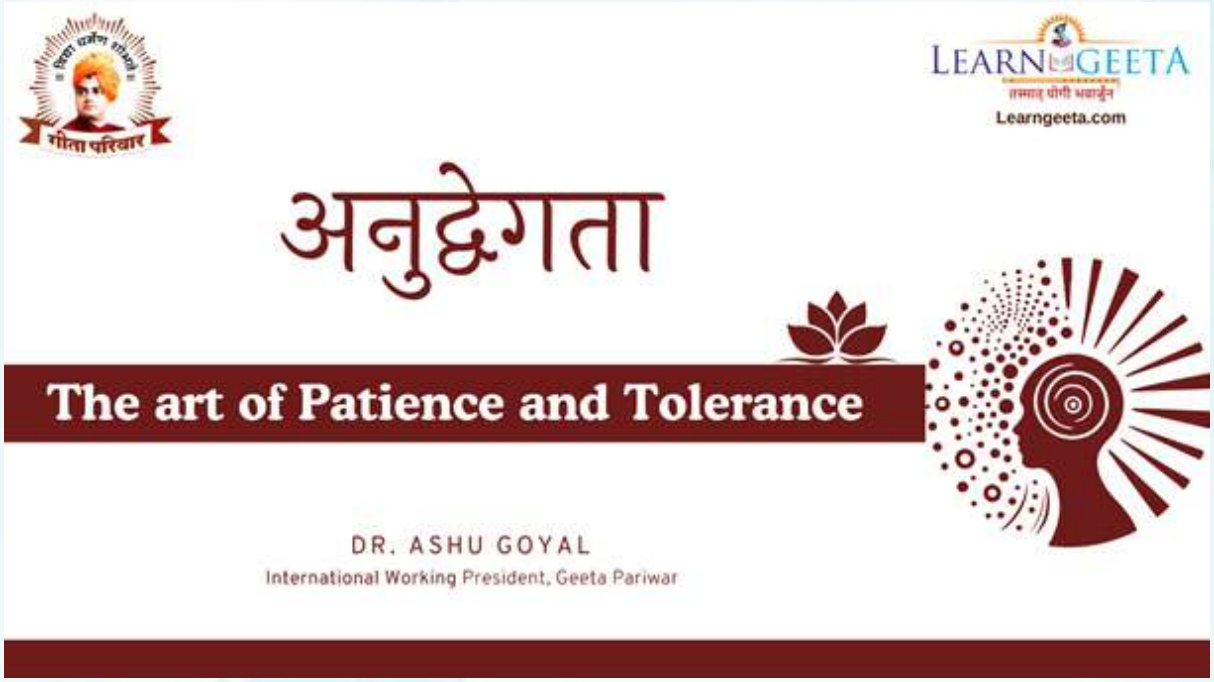


अनुद्वेगता

गीता विशारद डॉ आशू जी गोयल

(Saturday, April 24 L1 NPS)

https://youtube.com/live/h0Ht1LVn2bM?start=1269



अनुद्वेगता शब्द सामान्य व्यवहार में प्रचलित नहीं है, तथापि श्रीमद्भगवद्गीता में यह शब्द तीन बार प्रयुक्त हुआ है। द्वितीय अध्याय में श्रीभगवान कहते हैं -

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥2.56॥

पन्द्रहवें अध्याय में श्रीभगवान ने दो बार यह शब्द प्रयोग किया है –

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मेप्रियः ॥12.15॥

सत्रहवें अध्याय में श्रीभगवान जी ने कहा -

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥17.15॥

उत्तम वक्ता प्रथमत: वह बात कहता है, जो उस विषय से सम्बन्धित है और कहना आवश्यक है। यदि वक्ता उसी बात को दो बार कहे, तो निश्चय ही वह श्रोता को उस कथानक की महत्ता स्मरण करवाना चाहता है। उत्तम वक्ता उसी बात को तीसरी बार बताये तो समझिए कि -

वह श्रोता को शपथ दिलाना चाहता है। He wants to force it.

श्रीभगवान तो उत्तम वक्ता हैं, उनसे उत्तम वक्ता अन्य कोई नहीं है। उन्होंने तीन बार अर्जुन को अनुद्वेग की बात कही है।

अनुद्वेग- अर्थात उद्वेग से रहित होना।

अध्यात्म में इसका अत्यधिक महत्त्व है। एक वेदान्ती को पूछा -

ब्रह्म क्या है? उत्तर मिला - स्थिर मन ही ब्रह्म है। मन की स्थिरता ब्रह्म है।

महर्षि पतञ्जलि ने इसी को विस्तारित करके कहा -



योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः



चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।



आ. आशू भैया द्वारा इसकी अधिक स्पष्टता हेतु कुछ बिन्दु दियें -

1. दूसरे का कर्त्तव्य मेरा अधिकार नहीं - प्रज्ञाचक्षु स्वामी शरणानन्द जी महाराज कहते हैं-

Duty of others is not my right.

हम दूसरे के कर्त्तव्य को अपना अधिकार मान लेते हैं। हमारा केवल स्वयं के कर्त्तव्य पर अधिकार है।

उसे ऐसा करना था, नहीं किया इसलिए मैं उससे असन्तुष्ट हूँ। उसने यदि अपना कर्त्तव्य पालन नहीं किया तो उसे उसका परिणाम भोगना पड़ेगा। जो देखने वाला है, वह उसे देखेगा।

अपना कर्त्तव्य और दूसरे का अधिकार विचार करना चाहिए। हम ठीक इसके विपरीत करते हैं।

माता - पिता, गुरु और स्वामी इन चारों को अधिकार है कि वे कर्त्तव्यबोध करा सकें। अन्य किसी को कर्त्तव्यबोध कराने का अधिकार नहीं है। हम बिना सोचे समझे सलाह देने लगते हैं। कोई व्यक्ति किसी के घर मिलने गया। गृहस्वामी जप कर रहा था, संयोगवश टेलीविजन भी चल रहा था। आगन्तुक टोकता है - ऐसे जप का क्या लाभ?

यहाँ विचारणीय है कि क्या आगन्तुक को टीका-टिप्पणी करना आवश्यक है? या आगन्तुक को ऐसी टीका-टिप्पणी करने का अधिकार है? अनावश्यक अनाधिकार हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

कबीरदास जी कहते हैं-

कबिरा तेरी झोंपड़ी गलकटियन के पास।
जो करेंगे सो भरेंगे तू क्यों भया उदास ॥

2. धैर्य - सामान्य स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति धैर्यवान होते है। धैर्य की परीक्षा विपरीत परिस्थितियों में ही होती है। अरण्यकाण्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है-

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखिअहिं चारी॥

अनुकूलता में सभी धैर्य धारण करते हैं। प्रतिकूलता में गहन मित्र भी धैर्य खो देते हैं। काम और क्रोध के वेग को रोक लेना ही धैर्य है। इस वेग को न रोक सकें तो धैर्य चला जाता है इसीलिए कहते हैं - क्रोध आये तो पानी पी लो, दस तक गिनती कर लो, एक दिन रुक जाओ, आदि। क्रोध का वेग समय पाने पर कम हो जाता है। तत्काल प्रतिक्रिया व्यक्त करने की अपेक्षा यदि हम कुछ समय रुक कर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं तो स्थिति सहज हो जाती है।

3. No shortcut - अधीर होकर हम शीघ्रता से गन्तव्य पा लेना चाहते हैं। त्वरित राहें हमें गन्तव्य तक नहीं पहुंचाती, बीच में ही खो जाती हैं। शीघ्र धनी बनने हेतु, पूँजी बाजार में पैसा लगाया साल-भर में दिवालिया हो गये। वजन घटाना है, योगासन करने की बजाय शल्यक्रिया करवाते हैं, शरीर में सङ्क्रमण हो जाता है। सिर पर हाथ रखने से कुण्डलिनी जागरण हो जाएगी, ऐसा मानकर बाबाओं को धन लुटाते हैं। ध्वनि विस्तारक से कह देते हैं - समाधि लग गयी। पिछलग्गू होकर मान लेते हैं कि बिना साधना किये ही, समाधि लग गयी। स्वयं प्रयास और परिश्रम न करना पड़े इसलिए बिना विचारे किसी के बहकावे में आ जाते हैं। परिश्रम कोई अन्य करें, श्रेय मुझे मिल जाए।

कबिरा कुत्ता राम का, मुतिया मेरा नाउं।
गले राम की जेवड़ी, जित खैचे तित जाउं॥



रामजी का पट्टा गले में बँधा है, वे जिधर खींच ले जाएँगे, उधर चला जाऊँगा।

4. Put yourself in others shoes - परिवार में, समाज में दूसरे सभी हमारे विचार से सहमत हों या हम दूसरों के विचारों और कार्यप्रणाली से सहमत हों, यह सदैव सम्भव नहीं है। सामने वाले ने मेरे अनुकूल व्यवहार नहीं किया, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वह मेरा विरोधी है। इसका कारण और निवारण जानना आवश्यक है। जब हमें यह लगने लगे कि सामने वाले का मेरे प्रति व्यवहार अनुचित है, तब हम धैर्य और सत्यनिष्ठा से स्वयं को सामने वाले की परिस्थिति में रखकर घटनाक्रम का आकलन करें। सम्भवतः तब भी सामने वाले का व्यवहार पूर्णतः ठीक न लगे, किन्तु पहले जितना अनुचित भी नहीं लगेगा। हम अपनी दृष्टि से, अपने मापदण्ड से दूसरे को देखते हैं। जैसे ही हम दूसरे की दृष्टि और दूसरे के मानदण्ड से स्वयं को देखते हैं, भ्रान्ति मिटने लगती है। हम अपने को सही मानते हैं, सामने वाला अपने को सही मानता है, बात बिगड़ती चली जाती है। विचारधारा में अन्तर चलता रहता है। सब लोग एक जैसा नहीं सोच सकते। दोनों पक्षों की सोच अलग-अलग हो सकती है।

एक राजा अपने मन्त्री के साथ भ्रमण पर था। वन में राजा को भूख लगी। मन्त्री भोजन की खोज में गया। एक ऑवले का पेड़ दिखा, मन्त्री पेड़ पर चढ़कर ऑवले चखने लगा। थोड़ी देर में राजा भी पेड़ के पास पहुँच गया। ऊपर पेड़ पर बैठे मन्त्री को फल खाते देखकर राजा क्रुद्ध हो गया। मन्त्री नीचे उतरा और पके फलों की झोली राजा को खाने को दी। राजा ने नाराजगी व्यक्त की तो मन्त्री ने दूसरी झोली में जूठे और कच्चे ऑवले दिखाकर बताया कि कच्चे फलों की पहचान करने को फल चखें, ताकि आपको मीठे-मीठे फल प्राप्त हों।

बिना सत्यता परखे हम हित करने वाले के विषय में भी अहितकर भ्रामक धारणा बना लेते हैं।

5. Ego must go - अहङ्कार को जरा सी चोट लगने पर व्यक्ति खिन्न हो जाता है। धैर्य खो देते हैं। सहन नहीं होता। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने अहंता और ममता दोनों का बताया है।

विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥2:71॥

ममता और अहङ्कार दोनों उद्वेग का कारण हैं।

6. अनाग्रही - हम अपनी राय दूसरे पर थोपने लगते हैं। उचित परामर्श देना तो ठीक है, किन्तु मेरा कथन या मेरा परामर्श ही उपयुक्त है। ऐसी बाध्यता करना अनुचित है। उचित परामर्श देने तक ही सीमित रहना है। परामर्श के गुण-दोष विचार कर कोई उसका अनुसरण करना चाहे तो भी ठीक, न करना चाहे तो भी ठीक।

7. I am always right - अपनी गलती के लिए हम वकील बन जाते हैं। दूसरे की गलती के लिए न्यायाधीश बन जाते हैं। हम स्वयं को सर्वोपरि उचित मानकर कहते हैं - मैं सही बता रहा हूँ। जो कह रहा हूँ मानते नहीं, इन्हें पता नहीं है। होना यह चाहिए कि हम दूसरे के लिए वकील बनें और स्वयं के लिए न्यायाधीश बनें। हम दूसरों को स्वयं से कम समझते हैं -

दुनिया में डेढ़ बुद्धि है। एक मेरे पास है, शेष सारी दुनिया के पास तो आधी मात्र है।

सभी झगड़ों का मात्र एक ही रास्ता है I am always right का भाव छोड़ दिया जाए।

मैं भी सही हूँ, वह भी सही है। कभी उसकी बात मानी जाएगी, कभी मेरी।

दो ही तरीके हैं वफ़ा के, आजमा के देख लो
या तो बन जाओ किसी के, या किसी को अपना बना लो

8. विवेक - किसी ने कुछ कहा, वह कितना महत्त्वपूर्ण है? या बिल्कुल महत्त्वपूर्ण नहीं है? इसके लिए भगवान ने हम सबको विवेक दिया है। बच्चा कहे कि मेरी माता कुछ भी कहती रहे, मैं उसकी परवाह नहीं करता। ऐसा करने से बच्चे का भविष्य नष्ट हो जाएगा। बच्चे को अपनी माता की बात गम्भीरता से माननी चाहिए।

9. अनधिकार हस्तक्षेप - हम अपने घर परिवार या समाज में जहाँ आवश्यक नहीं होता वहां भी हस्तक्षेप करने लगते हैं। जहाँ आवश्यक हो वहीं हस्तक्षेप करें।

हम अपनी राय या सुझाव शालीनता से रखें। हम दूसरे विभाग में या दूसरे के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करें। अनपेक्षित हस्तक्षेप से दूसरे की सहनशीलता की भी हानि होती है।

10. अपैशुनम् - सोलहवें अध्याय में श्रीभगवान ने कहा हे अर्जुन! अपैशुनम् दैवीय गुण है। अपैशुनम् अर्थात निन्दा न करना। अपनी आलोचना किसी को अच्छी नहीं लगती। प्रशंसा के लिए हम प्रमाण ढूंढते हैं। क्या वास्तव में उसने मेरी प्रशंसा की है? निन्दा कहने मात्र से हम मान लेते हैं और तत्काल ही अपने मन में उसके प्रति वैमनस्य बना लेते हैं इसलिए हम किसी की निन्दा न करें। सत्य बात पता है तो भी क्यों कहना है?

11. Zero tolerance - वर्तमान में यह अत्यधिक प्रचलित शब्द है। जब हम सहनशीलता की बात करते हैं, तो सहनशीलता शून्य नहीं हो सकती।

कोई कहता है - सुनता तो मैं अपने बाप की भी नहीं। उसे कान पकड़कर समझाना चाहिए - सुना करो।

किसी संस्था में स्त्री से दुर्व्यवहार सहन नहीं करेंगे। एक बार भी क्षमा नहीं करेंगे, नौकरी से निकाल देंगे। Zero tolerance

गीताप्रेस कहती है हमारी पुस्तक में एक भी त्रुटि सहन नहीं करेंगे। Zero tolerance

गीता परिवार कहता है कोई भी हमारे यहाँ धन की बात करेगा, सहन नहीं करेंगे। Zero tolerance

व्यक्तिगत जीवन में सहनशीलता ही चाहिए, न कि शून्य सहनशीलता। भगवान ने अर्जुन से कहा मान-अपमान, सुख-दुःख, शीत-ऊष्ण सहन करो।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्याः तांस्तितिक्षस्व भारत॥2:14॥

हरि शरणम्! हरि शरणम्! हरि शरणम्!
हरि शरणम्! हरि शरणम्!



॥ ॐ कृष्णार्पणमस्तु ॥

एकादश हनुमत चिन्तन

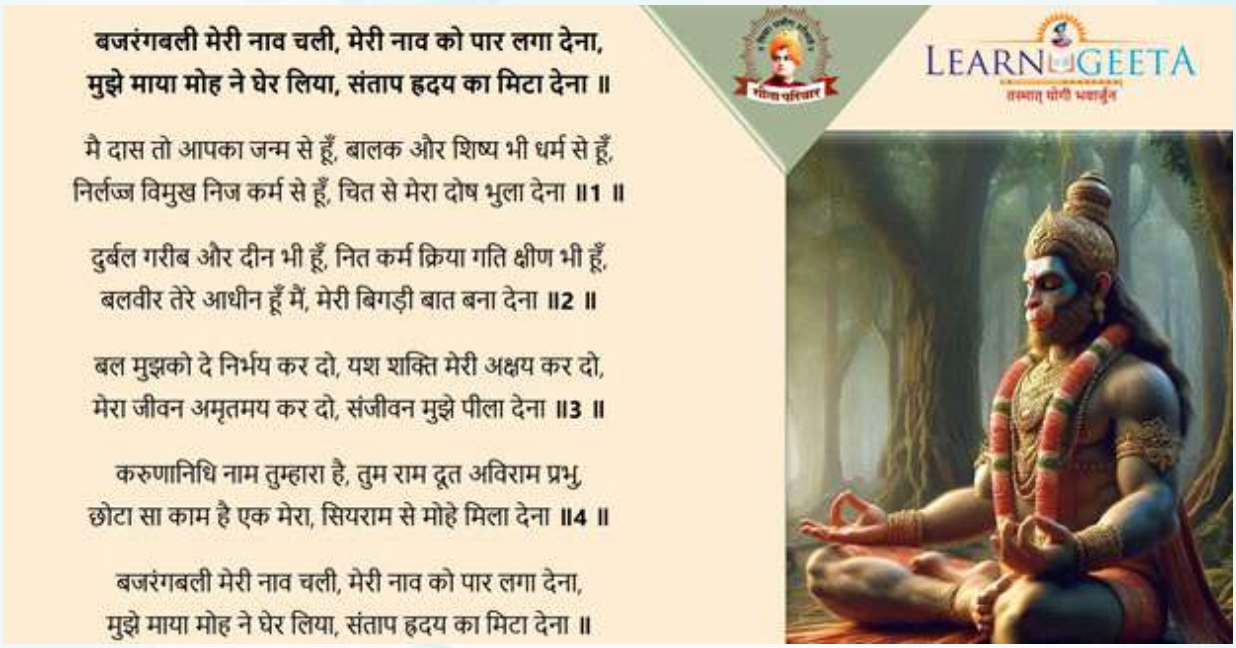
(हनुमान जयन्ती के पावन अवसर पर एक विशेष सत्र)

गीता विशारद डॉ आशू जी गोयल

मंगलवार, 23 April 2024 सायं 7.30 बजे से



https://www.youtube.com/live/8kbBIXcBuJE?start=1830



श्री हनुमान जी महाराज की जय। श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः। अत्यन्त पावन अवसर है कि हम सभी एकत्र होकर हनुमान जयन्ती के अवसर पर हनुमान चालीसा के एकादश पाठ कर सके। हनुमान जी का यह पर्व हनुमान जयन्ती के रूप में मनाया जाता है। जयन्ती का अर्थ होता है जिसकी जय का कभी अन्त ही नहीं हो। जयन्ती कहना शास्त्रीय बात है।

हनुमान जी महाराज एकादश रूद्र हैं इसलिए आज उनके एकादश गुणों का चिन्तन करते हैं। ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ मिला कर दस इन्द्रियाँ होती हैं। ग्यारहवीं इन्द्रिय मन को माना जाता है और मन की गति सबसे तेज मानी जाती है लेकिन हनुमान जी महाराज की गति तो मन से भी तेज है।

रामचरितमानस में एक भी पात्र ऐसा नहीं जिसके भगवान भी ऋणी हों। लेकिन हनुमान जी के ऋणी तो भगवान राम और सीता माता भी हैं। भगवान राम कहते हैं-

सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।

अर्थात् तुम्हारा ऋण मैं कभी नहीं चुका सकता।

बजरंग बली मेरी नाव चली, मेरी नाव को पार लगा देना।
अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता।

अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व तथा वशित्व ये आठ सिद्धियाँ तुम्हें प्राप्त ही नहीं हो गई अपितु तुम इसे देने वाले भी हो गए।

आज हनुमान चालीसा की एकादश चौपाइयों का चिन्तन करेंगे। गोस्वामी तुलसीदास जी जब हनुमान जी का चिन्तन करते हैं तो कहते हैं -

1. श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।

हमने हनुमान चालीसा तो बहुत बार गाई है, लेकिन हममें से कितने लोगों ने चिन्तन किया है कि इसका अर्थ क्या है?

गुरु जी के चरण कमलों की रज से (निज मन मुकुर सुधार, मुकुर अर्थात् दर्पण) अपने मन के दर्पण को साफ कर लूँगा क्योंकि जब तक मन साफ नहीं होता तब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती है।

"तोरा मन दर्पण कहलाए, भले बुरे सारे कर्मों को, देखे और दिखाए।"

2. जय हनुमान ज्ञान गुण सागर हनुमान जी महाराज ज्ञान के सागर हैं। सागर में जल की थाह नहीं पाई जा





सकती। इसे मापा या गिना नहीं जा सकता।

ज्ञानी मनुष्य शान्त होता है और थोड़े से ज्ञान वाला मनुष्य बहुत बोलता है। इसके लिए एक और कथन प्रचलित है-



"थोथा चना बाजे घना।"



राम जी कहते हैं हनुमान तुम्हारे अन्दर इतना ज्ञान आया कहाँ से? कोई ऐसा वेद, पुराण, शास्त्र नहीं जो तुम्हें न आता हो। ज्ञान के सागर हैं हनुमान जी।

3. महाबीर बिक्रम बजरंगी। महावीर अर्थात् महावीर। विक्रम अर्थात् अतुलित बल वाले। बजरंगी अर्थात् वज्र के समान अङ्गों वाले अथवा जिसके अङ्ग वज्र के समान कठोर हों। बल का संग्रह करना चाहिए। स्वामी जी महाराज कहते हैं कि जिस गृहस्थ को बल नहीं उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

4. कुमति निवार सुमति के संगी। हनुमान जी कुमति के साथ कभी नहीं आते हैं और सुमति के साथ रहते



हैं। यदि आपको आपके जीवन में हनुमान जी की कृपा का पता करना है तो ये देख लीजिएगा कि आपके मित्र कैसे हैं, कुमति वाले अधिक हैं या सुमति वाले।

कुमति का त्याग करना और सुमति का संग करना आवश्यक है।

5. विद्यावान गुनी अति चातुर विद्यावान होना ही पर्याप्त नहीं है, गुणी भी होना चाहिए अर्थात् गुणों का संचय भी करना चाहिए। विद्यावान और गुणी होने के साथ- साथ आपको चतुराई भी आनी चाहिए।

कहाँ, कैसे और कितना अपने ज्ञान का उपयोग करना यह आना चाहिए।

(Where, How, How much)

6. राम काज करिबे को आतुर काम करना बड़ी बात नहीं है किन्तु काम करने के लिए कितने आतुर या तत्पर (passionate) हैं, यह महत्त्वपूर्ण है। जिसका मन भगवान में, भगवान के भक्तों की सेवा में लग जाए, उसका जीवन पवित्र हो जाता है।

7. राम चरित्र सुनिबे को रसिया,
राम लखन सीता मन बसिया॥

हनुमान जी महाराज भगवान का चरित्र सुनते हुए कभी नहीं थकते हैं। बाल्मीकि जी और भगवान की वार्ता चल रही है। भगवान पूछते हैं कि मैं कहाँ रहूँ? बाल्मीकि जी उत्तर देते हैं-

जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना। कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना॥

भरहिं निरंतर होहिं न पूरे। तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे॥

अर्थात् भगवान आप उनके हृदय में रहिए जिनके कान आपकी कथा सुनते हुए कभी नहीं थकते हैं। हनुमान जी ने यह बात समझ ली और जहाँ कहीं भी राम कथा होती है हनुमान जी महाराज पहले पहुँच जाते हैं।

8. दुर्गम काज जगत के जेते हनुमान जी से कोई भी कार्य दुर्गम नहीं। हनुमान जी भक्तों के लिए भी कठिन से कठिन कार्य कर सकते हैं। हनुमान जी ने एक छलाँग में सौ योजन समुद्र पार कर दिया था। उन्हें सुषेण वैद्य को लाने के लिए कहा तो वह पूरी वैद्यशाला ही ले आए थे। जब उन्हें संजीवनी बूटी लाने को कहा तो उन्होंने सोचा पता नहीं कितनी मात्रा में लगेगी तो वो पूरा पर्वत ही उठा कर ले आए। हनुमान जी महाराज के भक्तों के लिए भी कोई भी कार्य दुर्गम नहीं होता है।

9. होत न आज्ञा बिनु पैसारे। राम दुआरे तुम रखवारे॥

एक बार एक कार्यालय एक चपरासी था। वह दिनभर हनुमान चालीसा का पाठ करता रहता था। जब भी कोई साहब से मिलने आता वह पहले दस रूपये माँगता और तब साहब से मिलवाता। एक बार किसी ने उससे कहा कि तुम तो भक्त आदमी हो फिर भी ये रिश्वत लेते हो तो उसने कहा मैंने कोई गलत काम नहीं किया है ऐसा हनुमान चालीसा में लिखा है।

राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे।

उसने इसका अर्थ का अनर्थ कर दिया था। लेकिन सत्य बात यही है कि राम जी के हृदय में वही विराज सकता है जो हनुमान जी की भक्ति करता हो।

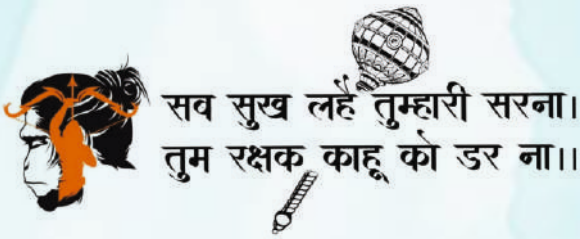
10. तुम रक्षक काहू को डरना बछड़ा खूँटे के बल पर उछलता है। एक बार हनुमान जी का खूंटा(सहारा) ले लिया फिर किसी का डर नहीं। कबीर दास जी से किसी ने कहा कि आपको डर नहीं लगता क्या? कबीर दास जी ने उत्तर दिया -

काल पकड़ चेला किया, भय के कतरे कान,
समरथ गुरु सर पर खड़े, किसको करूँ प्रणाम॥

गोस्वामी तुलसीदास जी हनुमान जी को कहते हैं - जय जय जय हनुमान गोसाईं, कृपा करहु गुरु देव की नाई॥अर्थात् हनुमान जी महाराज सद्गुरु हैं।

11. तुम्हरे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुःख बिसरावै।

हनुमान जी का भजन करने से राम जी मिल जाते हैं। पूरे देश में हनुमान जी के मन्दिर अधिक हैं। राम जप से हनुमान जी प्रसन्न होते हैं, हनुमान जी के प्रसन्न होने



से राम जी प्रसन्न हो जाते हैं। स्वामी जी का अनुग्रह आशीष

"बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वमरोगता।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनूमत्स्मरणाद्भवेत्॥"

आज बहुत बड़े आनन्द का दिन है कि जहाँ हनुमानजी जी ने सौ योजन का समुद्र पार कर पहली बार उतरे और अपना पहला पग श्रीलंका में धरा, उस स्थान पर आज हम बैठे हैं और विशेष बात यह है कि पूज्य स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने एक अट्ठारह फीट ऊँची हनुमानजी की प्रतिमा की स्थापना की है। उसका पूजन आज मेरे हाथों हुआ। मेरे साथ पण्डित महेश नन्दी जी, गोपाल जी, डॉ प्रकाश सोमन जी और हनुमान जी भी रहे। हनुमान चालीसा का पठन कर रहे आप लोगों के दर्शन करने का अवसर हमें भी मिला।

अभी नई उपाधि देना कोई कठिन कार्य नहीं है, मानस मर्मज्ञ डॉ आशू गोयल जी ने राम जी पर जो बोला वह बहुत विशेष है। उनके आग्रह पर मुझे आज आप सभी से संवाद साधना पड़ा लेकिन बहुत अच्छा है। हनुमान जी की उपासना हमारे जीवन में इसी प्रकार निरन्तर आगे बढ़ती रहनी चाहिए और हनुमान जी की उपासना से ही वे सभी प्रकार के सद्गुण हमारे जीवन में आते हैं जिन सद्गुणों से अपना और सबका



कल्याण हो सकता है। इसलिए तो गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने हनुमान जी को "सकल गुण निधान" कहा जो उनके लिए अत्यन्त योग्य विशेषण है। हनुमानजी की आराधना से क्या-क्या प्राप्त होता है इन सब बातों पर मैं तो बहुत बार बात करता रहा हूँ और आगे भी करता रहूँगा।

आज मुझे लगता है कि हमने जो शतकोटि हनुमान चालीसा का जो सङ्कल्प लिया था उसे पुनः दोहराएँ। अभी अयोध्या जी में राम जी का मन्दिर पूरा नहीं बना है। हमारा सङ्कल्प मन्दिर पूरा बनने तक का है। उसमें हनुमान जी का अलग से एक मन्दिर बनने वाला है। हमें अपने अभियान में और अधिक तेजी लानी चाहिए। इस निमित्त से हनुमान जी की आराधना हमारे जीवन में चलती रहेगी।

मैंने आपसे हमेशा कहा है कि भगवद्गीता के हम उपासक हैं और भगवद्गीता में श्री कृष्ण भगवान उद्गाता हैं, अर्जुन श्रोता हैं लेकिन श्रीमद्भगवद्गीता जी के सारे गुण जिसमें दिखते हैं वह हनुमान जी महाराज ऊपर विराजमान हैं, तो यह त्रिकोण अपने ध्यान में लाना, इसका स्मरण करना और अपने सङ्कल्प को दोहराना। आज बहुत अच्छा लगा कि मैं आप सबके साथ संवाद साध सका।

I'd like to share something special with all of you. Today, we have the honor of welcoming a distinguished monk from Sri Lanka, our Buddhist friend Swami Ratna Maharaj. Swami Ratna Maharaj has been tirelessly working for the betterment of society and has a deep connection with Bharat. On this auspicious day of Hanuman Jayanti, I've invited him to share some inspiring words with us. Please give him your attention.

Swami Ratna Maharaj

I am Ratna Maha Tero from Sri Lanka, a Buddhist monk dedicated to Hindu-Buddhist reforms. We work together to understand and implement core principles, fostering a deeper heart-to-heart connection and understanding among people. Our goal is to uplift society by finding common ground in the teachings of Vedanta and Buddhist philosophy. These traditions offer

profound insights on overcoming delusion and unifying humanity. It has been a pleasure meeting Swami Maharaj recently. Through our conversations, I have learned about the rich traditions and stories of Ram and Sita that are preserved in the villages of Sri Lanka. Swami Maharaj mentioned the highest mountain in Sri Lanka, a beautiful place that I hope you all can visit some day.Thank you for your attention. Let us come together, heart to heart, with a clear message: May all beings be happy and healthy. Thank you very much.

शतकोटि हनुमान चालीसा के महायज्ञ में अपनी आहुति देने के लिए गूगल प्ले स्टोर से राम प्रतिष्ठा एप डाउनलोड कर सकते हैं।

Google Play https://bit.ly/ShatkotiAndroid Download on the App Store https://bit.ly/ShatkotiApple

Android: Iphone:

पूज्य स्वामी जी श्री गोविन्द देवगिरि जी महाराज के व्हाट्सएप चैनल के माध्यम से आप उनके प्रवचन सुन सकते हैं और उनके विभिन्न कार्यक्रमों को लाइव देख सकते हैं। व्हाट्सएप चैनल का लिंक:

https://whatsapp.com/channel/0029Vabq6bKKgsNsQUD3Gc0T

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥



मेरे राम

(रामनवमी के पावन अवसर पर एक विशेष सत्र)



गीता विशारद डॉ आशू जी गोयल

बुधवार, 24 April 2024 सायं 7.00 बजे से

https://youtube.com/live/_BXjhUq_oZU?start=1066



दीप प्रज्ज्वलन एवं पावन भिक्षा के सुमधुर गायन के साथ रामनवमी का विशेष विवेचन सत्र "मेरे राम" का शुभारंभ हुआ।

भारत पर्वों की भूमि है। हमारी संस्कृति प्रसन्नता को आत्मसात् करने वाली है। नित्य कोई अवसर आता ही है जब हम उत्सव मनाते हैं। आज का दिन तो विलक्षण है, मधुर भावपूर्ण, कल्याणकारी भक्ति परक और समाज को चारित्रिक दिशा देने वाला यह ऐतिहासिक दिन है। ऐतिहासिक और सामयिक होने के साथ सर्वकालिक भी है। तीनों ही दृष्टि से विचार करते हैं। विजया गोड़बोले ताई के मधुर स्वर में पावन भिक्षा कविता का आनन्द लिया।राम राम जय राजाराम। पावन भिक्षा दे दो राम॥ कोमल वाणी दे दो राम निर्मल करणी दे दो राम । प्रासंगिक मति दे दो राम । चतुराई भी दे दो राम ॥1॥ हितकारक जो दे दो राम । जनसुखकारक दे दो राम। इंगितज्ञता दे दो राम । बहुजन मैत्री दे दो राम॥2॥ विद्या वैभव दे दो राम । उदासीनता दे दो राम। अयाचना व्रत दे दो राम। मैं न जानु वह दे दो राम॥3॥ प्यार तुम्हारा दे दो राम । दास कहे मोहे दो श्रीराम। संगीत गायन दे दो राम । गान मधुरता दे दो राम॥4॥ सावधानता दे दो राम । ज्ञान कंठगत दे दो राम। दास कहे हे सद्गुणधाम । उत्तम गुण मोहे दे दो राम॥5॥ पावन भिक्षा दे दो राम । दीन दयालो दे दो राम। अभेद भक्ति दे दो राम । आत्मनिवेदन दे दो राम॥6॥ तन्मयता मोहे दे दो राम । अर्थारोहण दे दो राम। सज्जनसंगति दे दो राम । अलिप्तता मोहे दे दो राम॥7॥ ब्रह्म अनुभव दे दो राम। अनन्य सेवा दे दो राम। पूर्ण समर्पण दे दो राम ।दास कहे मोहे दे दो राम॥8॥

सामान्यतः तीन प्रकार के आनन्द इस संसार में अनुभव होते हैं।

1- विषयानन्द - विषयों का भोग करने से प्राप्त हुआ आनन्द, जैसे अच्छा देखना, अच्छा सुनना, अच्छा खाना। 2- वासनानन्द - वासनाओं के विचार करके मन ही मन में होने वाला आनन्द। ऐसा करेंगे, वैसा खाएँगे, वहां जाएँगे। चिन्तनमात्र से आनन्दित होना।

3- आनन्द - विषयों के आनन्द और वासनाओं के आनन्द से अलग होना, आनन्द है।

श्रीराम का नाम तो आनन्द से भी ऊपर, परमानन्द है। तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम का नाम सुख का सिन्धु है। हमने पढ़ा है कि पृथ्वी का इकहत्तर प्रतिशत भाग जल से ढका हुआ है। इस माप में जल की यह मात्रा क्षेत्रफल के रूप में आङ्कलित की गयी है। समुद्र की गहराई बारह किलोमीटर तक है। आयतन की तुलना हेतु तो इस गहराई की गणना करके घनीभूत करना आवश्यक है, जैसे कमरे का आयतन करते हैं। आनन्द को घनीभूत करना।

मन की शान्ति तक जिसने जितनी कीमत की वह उतना ही अधिकारी होता है। हम स्वयं का मूल्याङ्कन करें कि हमने भगवान का मूल्याङ्कन क्या किया है। राम नाम की कीमत तुम कितनी कर पाते हो वो तुम्हारी योग्यता है। अब ये राम हैं क्या? एक राम नाम ऐतिहासिक है।

|| ऐतिहासिक राम ||

कबीरदास जी कहते हैं –

एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट घट में लेटा।
एक राम है जगत पसारा, एक राम है जगत से न्यारा॥

भारत की प्राचीन संस्कृति और आधुनिक संस्कृति में कोई कवि यदि राम पर न लिख पाए, तो वह अपनी कलम को अधूरा मानता है। आश्चर्य की बात है कि जितना रामजी के विषय पर लिखा गया, उतना श्रीकृष्ण जी, विष्णु जी, शिवजी पर नहीं लिखा गया है।



श्रीराम पर और रामकथा पर सबसे अधिक ग्रन्थ लिखे गये हैं। केवल उत्तर भारत में ही नहीं ये सर्वत्र हैं। हिन्दी में ग्यारह, मराठी में आठ, बांग्ला में पच्चीस, तमिल में बारह, तेलुगु में बारह, उड़िया में छः आधिकारिक रूप से उपलब्ध हैं। संस्कृत, मलयालम, अरबी, कन्नड़, फारसी, उर्दू सभी भाषाओं में हैं। इण्डोनेशिया की भाषा मलय में, आयरलैण्ड में थाई भाषा में भी रचना हुई है।

महाकवि कालिदास, महाकवि भास क्षेमेन्द्र भवभूति, सोमदेव, समर्थ स्वामी रामदास, ऐसे चार सौ से भी अधिक कवियों ने अलग-अलग भाषाओं में भगवान श्रीराम पर कोई न कोई कथानक या रामायण के दूसरे पात्रों के सम्बन्ध में रचनाएँ की हैं। करपात्री जी महाराज जैसे श्रेष्ठ आधुनिक सन्त ने रामायण मीमांसा की रचना की है।

विभिन्न रामायण वाल्मीकि रामायण और तुलसी रामायण हम यह दो ही जानते हैं, किन्तु अनेक रामायण हैं। अद्भुत रामायण, कृतिरामयण, कुछ रामायण, सर्वार्थ रामायण, तत्त्वार्थ रामायण, बिलङ्का रामायण, प्रेम रामायण, संजीवनी रामायण, उत्तर रामचरितमानसम्, रघुवंशम्, कम्ब रामायण, अध्यात्म रामायण, राधेश्याम रामायण, वीर रामायण, आठ काण्ड रामायण, मानस अनुक्रमणिका, अपराजिता, साकेत, मानस मंथन, श्रीराम चरित, मानस सुमित्रा, तमिल, मानस पीयूष -

सप्त खंड, श्रीराम कथामृत (प.पू. स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज



||सामयिक राम||

राम कौन हैं? अयोध्या में जन्मे राम, कौशल्या के राम या वे राम जिनका नाम पैंतीस बार गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है, त्रेता के राम, दशरथ के बेटे राम या जिन राम के बारे में कबीर कहते हैं-

राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट। अंत समय पछताएगा जब प्राण जाएंगे छूट।।

या वे राम जिनको अन्तिम समय में पुकारते हैं- "राम नाम सत्य है" या वे राम जिनके लिए महर्षि वाल्मीकि कहते हैं- "रामो विग्रहवान धर्म:"

वे साक्षात धर्म के विग्रहस्वरूप हैं। तुलसीदास जी ने राम के विग्रह से भी अधिक राम नाम को महत्व दिया और प्रश्न खड़ा किया कि नाम बड़ा है या रूप? यह प्रश्न बड़ा प्रसिद्ध है। रामचरितमानस में यही प्रश्न ऋषि भारद्वाज ने याज्ञवल्क्य से और माता पार्वती ने शिवजी से किया है। निर्गुण और सगुण के बीच राम नाम चतुर दुभाषियो के रूप में है जो दोनों का पता बता देता है इसलिए राम नाम का गुणगान करना चाहिए। दशरथ नन्दन सगुण साकार या निर्गुण निराकार में भी अधिक अन्तर नहीं करना चाहिए-

ब्रह्म से भी ब्रह्म का नाम बड़ा है और वह देवताओं को भी वर देने वाला है - ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि।

||सर्वकालिक राम||

राम का चरित्र जीवन में अलग-अलग क्षेत्र में कैसे उपयोगी है? उसको देखना चाहिए। इसे कुछ बिन्दुओं में देख सेकते हैं -

1. बालकों के आदर्श भगवान श्रीराम
2. भ्रातृ आदर्श भगवान श्रीराम
3. चरित्रवान राम
4. आदर्श पुत्र राम
5. भक्त वत्सल राम
6. मित्र राम
7. शरणागत के आश्रय राम
8. शत्रु हितचिंतक राम
9. प्रजा के राम
10. मेरे राम



एक श्लोकी रामायण आदौ राम
तपोवनादि गमनं(म्),
हत्वा मृगं(ङ्) कांचनम्।
वैदीहीहरणं(ञ्)
जटायुमरणं(म्),
सुग्रीवसंभाषणम्॥
बालीनिर्दलनं(म्)
समुद्रतरणं(लँ),
लंकापुरीदाहनम्।
पश्चाद् रावण कुम्भकर्ण हननम्,
एतद्धि रामायणम्॥



नित्य रामजी का जीवन अपनी पूजा में लेकर आएँ। राम कथा का थोड़ा ही सही नित्य पाठ करें। वाल्मीकि रामायण या अन्य राम कथा सम्बन्धी काव्य का थोड़ा-थोड़ा ही सही नित्य पाठ करें। रामजी का चरित्र मेरे जीवन में कुछ-कुछ रोज आए तो अपनी मति अपने आप ही सुमति होती जाएगी; अपना चरित्र अपने आप ही चरित्रवान होता जाएगा और अपनी दृष्टि अपने आप ही भगवान की ओर बढ़ने वाली भक्ति-दृष्टि हो जाएगी। नामजप का सङ्कल्प लें और - सिया राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

समस्त संसार को भगवान श्रीराम और जगत् जननी भगवती सीतामय जानकर हम सब में भगवान के दर्शन कर सकें इस रामनवमी पर यही प्रार्थना करते हुए पूज्य गुरुदेव गोविन्ददेव गिरि जी महाराज को समर्पित करते हुए 'हरि शरणम्' सङ्कीर्तन के साथ आज के चिन्तन सत्र का समापन हुआ।





ऐसी वाणी बोलिये

नीति प्रबन्धन व स्वभाव (NPS)

शनिवार 21 जून 2024





श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः

भगवान की अतिशय मङ्गलकृपा से हम सबका ऐसा सद्भाग्य जाग्रत हुआ कि हम लोग अपने जीवन में श्रीमद्भगवद्गीता सीखने के साथ, इस महत् कार्य में गीतासेवी बनकर प्रवृत्त हो गये हैं। हममें यह आकॉक्षा जगी कि हम अपने व्यक्तित्व को सतत निखारते चले जाएं।

आज योग-दिवस की सन्ध्या पर आप सभी को इस बात की बधाई कि हम अपने जीवनकाल में यशस्वी प्रधानमन्त्री जी की सद्चेष्टा और सद्प्रयास से दशम् अन्तर्राष्ट्रीय योगदिवस मना रहे हैं। पूज्य स्वामी गोविन्ददेव गिरि जी महाराज का एक प्रवचन है -

"गीता ही सम्पूर्ण योग है।"

अभी योगासन वाला योग प्रचलन में है। योगासन वाला योग तो अष्टाङ्गयोग का एक भाग है। अष्टाङ्गयोग सैकड़ों योगों में से एक छोटा सा योग है। योग का विचार करते समय प्राणायाम और आसन को पूर्ण योग मान लेना ठीक नहीं होगा। महर्षि पतञ्जलि के अष्टाङ्गयोग के आठ सोपान हैं।

1-यम 2-नियम 3-आसन 4-प्राणायाम 5-प्रत्याहार 6-धारणा 7-ध्यान 8-समाधि

इस अष्टाङ्गयोग में तृतीय और चतुर्थ सोपान हैं - प्राणायाम और आसन।

आजकल प्राणायाम और आसन को ही योग कहने लगे हैं। श्रीमद्भगवद्गीता पठन करने वालों को ज्ञात होना चाहिए कि योग केवल योगासन तक ही सीमित नहीं है। योग का अर्थ है परमेश्वर से जुड़कर अपने मौलिक स्वरूप को प्राप्त करना। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान ने योग के विषय में बहुत कुछ कहा है।


"योग: कर्मसुकौशल:"


कर्मों में कुशलता ही योग है।

आज योग की इसी सूक्ति पर श्रीमद्भगवद्गीता के दृष्टिकोण से विचार मन्थन करते हैं। गत सत्रों में अनेक विषयों पर विचार हुआ। कार्यकर्ताओं को दो क्षमताओं की अधिक आवश्यकता रहती है -


तकनीकी ज्ञान तथा उत्तम वाणी।


इसी के दृष्टिगत आज का सत्र वाणी की विशेषता पर आयोजित किया गया है। कोई भी कर्म तीन प्रकार से सम्पन्न होता है -


मनसा वाचा कर्मणा


मन, वचन और कर्म में एकरूपता हो। हमारे मन की कुशलता, हमारी वाणी की कुशलता और हमारी कामेन्द्रियों की कुशलता के अनुसार ही, हमारे द्वारा निष्पादन किये गये कार्य की कुशलता निर्भर करती है। कुछ लोगों के मन के विचार, वाणी की अभिव्यक्ति और कर्मेंद्रियों की गतिविधियों में भिन्नता होती है। तीनों में तालमेल नहीं होता, ऐसे दम्भी या भिन्न प्रकृति वालों के विषय में यहाँ विचार करने की आवश्यकता नहीं है। किसी के दुर्गुणों पर विचार नहीं करना है। यहाँ सभी गीता सेवी हैं, जो भगवान के सीधे सादे भक्त हैं। यहाँ सबके मन कर्म और वचन में एकरूपता है। मन में कुछ गड़बड़ी हो तो प्रयास करने पर भी रोक नहीं पाते। भीतर की गड़बड़ी वाणी में आ जाती है, और वाणी से कर्म में भी आ जाती है। घटित होने के बाद पश्चाताप भी करते हैं।

दम्भ करना भी सदैव सम्भव नहीं होता। शूर्पणखा सुन्दर वेशभूषा धारण करके श्रीराम के पास गयी, वाणी भी मधुर थी।

तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारि।
यह संजोग बिधि रचा बिचारि॥
-अरण्यकाण्ड

शूर्पणखा का बड़ा सुन्दर आचरण दृष्टिगोचर होता है। किन्तु दो-तीन बार श्रीराम जी ने इधर-उधर दौड़ाया, उसका सौम्य रूप पुनः दम्भ में आ गया! पुनः राक्षसी वेश में आ गयी।


Cannot carry it long.


उसी शूर्पणखा का भाई रावण श्रीसीता जी का हरण करने आया तो साधू का वेश धारण करके बताया बोला -


भिक्षाम् देहि!


भीतर से तो वह राक्षस ही है। साधु का आचरण

अधिक समय धारण नहीं कर पाया। सीताजी को कन्धे पर उठाया और चल दिया। इसलिए हमारे महापुरुष और नीतिज्ञ कहते हैं, कि एक ही भेंट में किसी पर विश्वास नहीं करें, धोखा हो सकता है। वह दम्भी हो सकता है! यदि अधिक बार किसी से मिलकर जानेंगे तो धोखा होने की आशङ्का नहीं रहती। कम समय में किसी पर विश्वास कर लेने से धोखा खाने की सम्भावना रहती है।

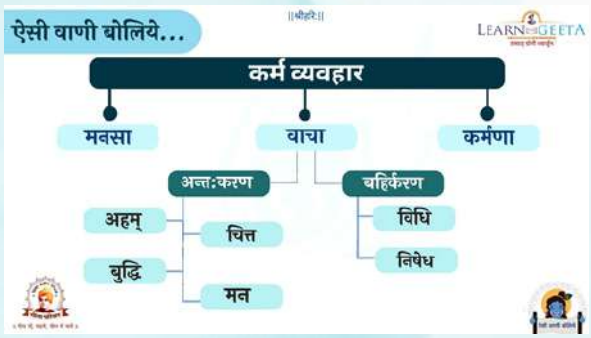
सत्रहवें अध्याय में श्रीभगवान ने मन से, वाणी से, शरीर से तीनों तप अलग-अलग करके बताए हैं-

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत् तपो मानसमुच्यते॥17:16॥

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥17:15॥

देवद्विजगुरुप्राज्ञ पूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा शारीरं तप उच्यते॥17:14॥

इन तीनों तपों का पृथक-पृथक महत्व है। आज दशम् अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर वाणी के तप की महत्ता विचार कर रहे हैं। यह सब चिन्तन हम स्वयं के विषय में करें, अन्यों पर प्रक्षेपण हेतु नहीं। अन्य का परीक्षण करने की अपेक्षा हम स्वयं का परीक्षण करें।



Assessment of SELF not of Others!
तुका करे मन का संवाद, अपनी बात अपने से!

एक बार शरीर के अङ्गों में वाद-विवाद हो गया। सभी आत्म-प्रवञ्चना करने लगे।

हाथ बोले - सभी कार्यों का सम्पादन हम ही करते हैं।

पैरों ने टोका - कार्यस्थल तक हम न पहुॅंचाएं, तो कार्य निष्पादन नहीं कर पाओगे।

ऑखों ने ऑखे तरेरी - उस कार्य की प्रकृति तो हम ही देखती हैं, अन्यथा न तो वहॉं पहुॅंच पाएं और न ही काम कर पाएं!

कानों ने भी हेकड़ी भरी - कार्य और कार्यस्थल की विषयवस्तु का ज्ञान तो हम ही सुन पाते हैं!

जिह्वा भी लपलपाई - इन सभी आकलनों का वर्णन तो मैं ही कर पाती हूँ, आप किसी में यह क्षमता नहीं है।

सबने जिह्वा को धमकाया - तुम तो रहने दो। तुम तो दाँतों में जकड़ी हुई और अस्थि-विहीन हो। तुम्हारी न तो शक्ति है, न ही प्रभाव। जीभ ने उत्तर दिया तुम सब किसी पर कुछ भी प्रहार करो या अपना सङ्केत करो, उसका प्रभाव कुछ ही काल पश्चात घटने लगता है। मैं अपनी वाणी से किसी को घायल कर दूँ तो उसका घाव चिरकाल तक स्थाई स्थापित हो जाता है।

शब्द सम्हारे बोलिए, शब्द के हाथ न पाँव।
एक शब्द औषधि करे, एक शब्द करे घाव॥

जिह्वा कहती है, तुम सब तो केवल हानि पहुॅंचा सकते हो, वाणी औषधि भी है, वाणी घाव भी कर सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उनकी वाणी अच्छी हो, सब उसका कहा स्वीकार करें।



विश्वप्रसिद्ध उक्ति है-

विवाद के तीन कारण होते हैं -

जर, जोरू, जमीन।

किसी ने इसका प्रतिवाद किया कि अधिकांशतः ऐसा ही होता है, किन्तु सदैव ऐसा नहीं होता। सास-बहू के विवाद, पति-पत्नी के विवाद, स्वामी-सेवक का विवाद, मित्रों के विवाद, पड़ोसियों के विवाद इन सबकी सङ्गणना करने पर, छत्तीस में से तीन विवाद लोभ के कारण होते हैं। पॉच विवाद अकारण हो जाते हैं। तीन विवाद कार्यप्रणाली के कारण होते हैं। पॉच विवाद अन्य कारणों से होते हैं। बीस विवाद केवल जिह्वा की वाणी के कारण से होते हैं।

Someone talks, which is not acceptable!

हम जुलाई महीने में एक प्रयोग कर सकते हैं। प्रतिदिन विवाद और उसका कारण लिखते चलें। पूरे महीने की गणना करने पर, हम पाएंगे कि अधिकांश विवादों का कारण अनियन्त्रित वाणी है। या तो हमने किसी को गलत बोला या किसी ने हमें गलत बोला।

एक बार दो व्यक्तियों में झगड़ा हो रहा था। एक ने क्रोध से कहा - मैं तुम्हारे चौंसठ दाँत तोड़ दूँगा। पास खड़े एक व्यक्ति ने कहा - भाई साहब दाँत चौंसठ नहीं बत्तीस होते हैं। धमकाने वाले ने कहा मुझे मालूम था, तुम बीच में बोलोगे। इसलिए तुम्हारे मिलाकर चौंसठ तोड़ूँगा।

कुछ लोग बीच में अनावश्यक बोलकर झगड़े का कारण बन जाते हैं। अनेक बार दो आमने-सामने होने वाले व्यक्तियों में झगड़ा नहीं होता, जैसे ही तीसरा बीच में आता है, झगड़ा होने लगता है।

हस्तक्षेप करने से झगड़ा क्यों होता है? हम इसका चिन्तन करें।



वाणी के दो भाग हैं -

1 अन्तःकरण- भीतर का छुपा हुआ।

2 बहिर्करण- बाहर का जो प्रकट रूप में है।

किसी को बन्दूक की गोली लगी और वह मर गया, हम कहते हैं कि गोली लगने से मर गया। वही गोली बिना बन्दूक के मारें तो मृत्यु नहीं होगी। गोली की तुलना में बन्दूक अधिक मूल्यवान है। शक्ति ने जिस वस्तु को चलाया, वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, जिस शक्ति से सञ्चालन होता है, वह शक्ति अधिक बलशाली और महत्वपूर्ण होती है।

हमने किसी को अनुचित कुछ बोल दिया, यह बन्दूक की गोली के समान है। इस गोली को चलाने वाली बन्दूक की शक्ति कौनसी है? यह महत्वपूर्ण है। भगवान ने सत्रहवें अध्याय के तृतीय श्लोक में कहा -

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः॥17:3॥

मनुष्य विचारशील प्राणी है। जैसे उसके विचार हैं, वह वैसा ही होगा। यदि वह सतोगुणी है तो उसकी प्रेरणा सतोगुणी होगी। रजोगुणी है तो उसकी प्रेरणा रजोगुणी होगी। यदि वह तमोगुणी है तो उसकी

प्रेरणा भी तमोगुणी ही होगी। सतोगुणी की वाणी भी सौम्य, शान्त, शालीन और सुमधुर होगी। रजोगुणी व्यक्ति अहं से युक्त अत्यधिक वाचाल और तीव्रतम होगा। तमोगुणी अपशब्द और अवॉछित कुतर्क का आश्रय लेता है। भगवान ने कहा है, जैसा जिसका स्वरूप है, उसका वैसा ही आचरण है।



चार प्रकार की वाणी



मध्यमा - ओष्ठों से बोली जाने वाली वाणी। तीव्रता से उच्चारित की जाती है।

वैखरी - कण्ठ से बोली जाने वाली वाणी। इस वाणी का वक्ता कुछ विचारशील होता है।

पश्यन्ति - हृदय से बोली जाने वाली वाणी। हृदय से बोलने वाला व्यक्ति अत्यधिक मननशील होता है।

परा - योगीजन द्वारा बोली जाने वाली वाणी। इसकी तो हम जैसे सामान्य मनुष्य के लिए चर्चा करना भी सम्भव नहीं है।

भौतिक रूप से जिह्वा की जॉच करके कोई डाक्टर वाणी के अव्यक्त स्वरूप का पता नहीं लगा सकता। वह तो केवल प्रकट लक्षणों की ही जॉच बता सकता है।



अन्तःकरण



अपने व्यक्तित्व, अपने अहं,
अपने स्वरूप को बदलना होगा।

चौथे अध्याय में श्रीभगवान ने कहा रजोगुण और तमोगुण को दबाकर सत्त्वगुण की वृद्धि होती है।

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत। 14:10

रजोगुण को शान्त करके, तमोगुण को दमन करके सतोगुण की वृद्धि करनी चाहिए।

अहं से मुक्त रहना है।



पहली आन्तरिक शक्ति है - मैं!



अहं अर्थात् मैं, वयं हम दोनों, हम सब। मैं जैसा हूँ, वैसा ही प्रकटीकरण मेरे शब्दों में होता है।



दूसरी आन्तरिक शक्ति है - चित्त!



जब हम किसी से बात करते हैं, तब चित्त के भण्डारण में जमा इतिहास प्रकट होता है। प्रिय व्यक्ति से प्रेम पूर्वक बोलते हैं। अप्रिय व्यक्ति होने पर वाणी का स्वर बदल जाता है।

यदि किसी कारण से चित्त की अवस्था ठीक नहीं है, झगड़ा किसी और से हुआ हो, उसका वाणी पर प्रभाव सभी जगह आ जाता है। कभी-कभी कार्यस्थल पर कहते हैं कि लगता है कि आज पत्नी से झगड़ा करके आया है। चित्त की विक्षिप्तता से बाहरी वातावरण बोली के कारण खराब हो जाता है।



तीसरी आन्तरिक शक्ति है बुद्धि!



भगवान ने बारहवें अध्याय के चौदहवें श्लोक में कहा है-

सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥12.14॥

हम जब मिलते हैं तो अच्छे से बात करते हैं। बुद्धि अपने चित्त की वृत्तियों को नियन्त्रित कर लेती है और

उसके कारण हम अनेक प्रकार की हानियों से भी बच जाते हैं। जिनका अपनी बुद्धि पर नियन्त्रण नहीं होता है, वे अच्छे सम्बन्धों को भी उल्टी बात बोल कर खराब कर देते हैं। कभी अज्ञानता से, कभी लापरवाही से तो कभी मूर्खता से, कभी उपहास उड़ाने के लिए तो कभी अपने अहम के कारण उल्टी बात बोलते हैं। मुख से क्या शब्द निकले इस पर बुद्धि का नियन्त्रण होना, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

भागवत का एक प्रसङ्ग है भगवान श्रीकृष्ण जी के पोते अनिरुद्ध के विवाह का प्रसङ्ग है। विवाह में सभी आए हुए थे। भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी हैं रुक्मिणी और रुक्मिणी के भाई हैं रुक्मी। भगवान जब रुक्मिणी जी का अपहरण करके निकल गए तब बलराम ने रुक्मी से युद्ध किया था। बलराम जी ने रुक्मी को हरा दिया था। तबसे रुक्मी और बलराम जी की अनबन है। बलराम जी और युधिष्ठिर जी को चौसर खेलने का बहुत शौक था और चौसर खेलना उतना आता नहीं था। रुक्मी को ज्ञात था कि बलराम जी को चौसर का व्यसन है। रुक्मी ने बलराम जी को कहा कि आओ चौसर खेलें, कृष्ण जी को भी बुलाया गया किन्तु कृष्ण जी ने मना कर दिया। अब रुक्मी और बलराम जी चौसर खेलने बैठ गए। उन दोनों के चित्त में पूर्व की बातें भी चल रही हैं। पहला, दूसरा, तीसरा दाव रुक्मी जीत गया। पहले उसने दस हजार दाव पर लगाए, फिर एक लाख और फिर दस लाख दाव पर लगाए। रुक्मी अपने पक्ष के राजाओं को अपने साथ लेकर बैठा। जो बलराम जी के हारने पर उन्हें हँस हँस कर चिढ़ा रहे थे। बलराम जी को बुरा लगा। उन्होंने गुस्से में आकर सीधे ही एक करोड़ मुद्राओं का दाव लगा दिया और जीत गए। इस पर रुक्मी बेईमानी करने लगा। बलराम जी ने कहा कोई बात नहीं इस बार दस करोड़ मुद्राओं का दाव लगाता हूँ। बलराम जी वो भी जीत गए। रुक्मी और अन्य राजा ये बात नहीं मान रहे थे। आकाशवाणी हुई, उसमें भी बलराम जी को ही विजेता घोषित किया गया किन्तु रुक्मी मानने को तैयार नहीं। बलराम को गुस्सा आ गया। उन्होंने गदा से रुक्मी का वध कर दिया। अन्य राजा भी भाग खड़े हुए। विवाह के मङ्गल प्रसङ्ग में रुक्मी के वध हो जाने के कारण रुक्मिणी रोने लगी। समाचार भगवान श्रीकृष्ण तक पहुँचे। भगवान ने तुरन्त सात्यिकी के साथ सन्देश भिजवाया कि विवाह मङ्गलमय हो इसलिए मैने आज सुबह से सात दिन का मौन व्रत लिया हुआ है। भगवान को ज्ञात था कि बलराम मेरे भाई और रुक्मी रुक्मिणी जी के भाई, किसका पक्ष लूँ? बलराम जी का पक्ष लूँगा तो रुक्मिणी रुष्ट हो जाएगी। अतः मौन रहना ही श्रेयस्कर है। बुद्धिमान व्यक्ति को पता होता है कि कब मौन रहना है? द्रौपदी के चीर हरण के समय भीष्म पितामह मौन रहे उसका उनको दोष लगा क्योंकि वहाँ मौन नहीं रहना चाहिए था, उनका कर्त्तव्य था वहाँ पर बोलना। किन्तु यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण का

कोई कर्त्तव्य नहीं है और उन्होंने मौन रहना उचित समझा।



चौथी आन्तरिक शक्ति है मन!



आधे से अधिक झगड़े उसके होते हैं जिसका मन

उसके नियन्त्रण में नहीं होता है। वह अपने मन के वशीभूत होकर इतना गलत बोलता है कि उसे बाद में अपना माथा पीटना पड़ता है कि यह मैंने क्या बोल दिया? मेरे मन में तो उसके लिए इतना कुछ था भी नहीं। यह व्यक्ति हमेशा पछताता है। इसलिए इस मन को बुद्धि के नीचे कीजिए। जिसकी बुद्धि मन के नीचे है वह सदैव अपना नाश करता है और जिसका मन बुद्धि के नीचे आ गया, उसका सदैव कल्याण होता है। जो जितना मन के वशीभूत होगा वह उतने अपशब्दों का प्रयोग करेगा और छोटी सी बात पर बड़ा झगड़ा कर लेगा। जिसकी बुद्धि का उसके मन पर नियन्त्रण नहीं उसका नाश तय है। अतः मन पर नियन्त्रण सर्वाधिक आवश्यक है।

बहिर्करण

1. विधि (Dos)
२. निषेध (Don'ts)

· विधि (Dos):-

बोलते समय हमें निम्नलिखित आठ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1.सत्यं प्रियम हितं च यत्।

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् , न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम् ।

सत्य बोलो, प्रिय बोलो, हितकारी बोलो। कई लोग सत्य को ढाल बनाकर अप्रिय बोलते हैं और कहते हैं कि हम तो सत्य बोलते हैं किसी को बुरा लगे तो लगे।

2. सही शब्द और भाषा का प्रयोग:-

अच्छी शब्दावली और भाषा का हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। एक व्यक्ति ने कहा कि मैंने फ्लैट लिया है। उसके बारह



वर्ष के बेटे ने कहा कि इन्होंने पेंट हाऊस लिया है। उस व्यक्ति ने कहा कि पेंट हाऊस क्या होता है? तब बच्चे ने उत्तर दिया जब किसी इमारत के सबसे ऊपर के दो फ्लैटों को मिला कर लिया जाता है तो उसे पेंट हाऊस कहते हैं। सही शब्दों के चयन से वाणी की सुन्दरता, उसकी कीमत बढ़ जाती है। बड़ा व्यक्ति छोटे व्यक्ति को नमस्कार नहीं करेगा। छोटा बड़े को आदरणीय लिखेगा और बड़ा छोटे को प्रिय लिखेगा। स्वामी जी के लिए हम प्रिय नहीं लिख सकते वे हमारे लिए परम पूजनीय हैं। वे हमारे लिए प्रिय लिख सकते हैं।

3. सही वोल्यूम का प्रयोग:-

हमारे शब्दों की तीव्रता कितनी हो, कितनी जोर से बोला जाए कितनी धीरे बोला जाए। सिकन्दर भारत आया। एक पूर्व की कथा भी है। सिकन्दर चाहता था कि वह पोरस के दरबार को देखे, उसके राज्य को देखे किन्तु शत्रु होने के कारण वह सीधे ही ऐसा नहीं कर सकता था। इसलिए उसने दूत का भेष धरा और पोरस राजा के दरबार में आया। सन्धि सन्देश लाया था। दूत अवध्य होता है। पुराने समय में भी होता था।

हनुमानजी रावण के दरबार में दूत बन कर ही गए थे। जब रावण ने कहा कि मारो इसे तब माल्यवान तुरन्त खड़े हो गए-

नीति बिरोध न मारिअ दूता।

दूत को मार नहीं सकते हैं। आजकल भी राजदूतों को मार नहीं सकते हैं।

4. सही समय का चुनाव:-

हर समय बोलना अच्छा नहीं होता है। कुछ बातों का तुरन्त उत्तर देना अच्छा होता है, कुछ बातों का उत्तर रुक कर देना चाहिए। जो लोग सही समय का विचार नहीं करते वो प्रायः परेशानी में आ जाते है। बिना माँगे सलाह देने वाले इसमें बहुत फँसते हैं।

5. सही मात्रा का चुनाव:-

कितना बोलना आवश्यक है। कई बार एक पंक्ति के उत्तर में काम चल जाता है और हम पूरा भाषण ही दे देते हैं। सभी बड़े ज्ञानी जनों के बीच में यदि हमसे कोई बात पूछी जाए और हम संक्षिप्त में उत्तर न देकर अपना ज्ञान बताने लगते हैं तो यह वाणी का दोष बन जाता है। हमें कितना बोलना चाहिए इसका बड़ा विचार करना चाहिए।

6. सबको सम्मान देने का भाव:-

कई बार किसी की बात काटनी भी होती है। जैसे आपने न्यायपालिका में देखा होगा वकीलों को तो दूसरे की बात काटनी ही होती है लेकिन वो कितने अच्छे तरीके से बात काटते हैं- मेरे काबिल दोस्त भूल गए अभी आपने जो बात कही वो इस प्रकार से है। दूसरे वकील की बात काट भी रहे हैं तो उसे सम्मान देकर। अपनी वाणी से किसी के सम्मान को चोट नहीं पहुँचनी चाहिए। यदि किसी की बात काटनी भी है, उसे मना भी करना है तो उसके सम्मान को रखते हुए। छोटा हो यत् बड़ा उसके सम्मान को रखते हुए ही उसकी बात काटनी चाहिए। जितना अधिक हम दूसरे को सम्मान देते हुए बात करते हैं उतना ही अधिक मेरी वाणी का गौरव बढ़ता है।

7. सही तथ्यों के साथ बोलें:-

सही तथ्यों के साथ बात करें। इधर-उधर से पढ़कर सही तथ्यों को जाने बिना अन्दाजे से बात नहीं करनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति सदैव धोखा ही खाता है। "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमति ने कुनबा जोड़ा" इस प्रकार का काम करके बात करना उचित नहीं है। जिसे तथ्यों के बिना बोलने की आदत हो जाती है, समाज में उसकी सही बात की भी उपेक्षा होती है, उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करता है।

8. अधिकार होने पर ही बोलें:-

अधिकार, योग्यता अथवा पात्रता होने पर ही बोलना चाहिए। कार्यकर्ता रूप में इसका उदाहरण देखते हैं। यदि आप तकनीकी विभाग में सेवा दे रहे हैं और प्रशिक्षक विभाग के लिए सुझाव भेज रहे हैं या प्रशिक्षक विभाग में सेवा दे रहे हैं और तकनीकी विभाग के लिए सुझाव भेज रहे हैं, ऐसी स्थिति में उन्हें बताना पड़ता है कि यह कार्य पूर्व से ही किया जा रहा है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि क्या यहाँ पर बोलना मेरे अधिकार क्षेत्र में है अथवा नहीं। हमारा ज्ञान, पद, योग्यता आदि का ध्यान रख कर विषय विशेष और परिस्थिति विशेष में बोलना चाहिए। बिना

ज्ञान के ही हमें विभिन्न विषयों का विशेषज्ञ नहीं बनना चाहिए और न ही बोलना चाहिए।

2- निषेध (Don'ts)



· निषेध:-

बोलने में निषेध भी आठ बताए गए हैं-

1. अवाच्यवादांश्च का निषेध:-

अवाच्यवादांश्च अर्थात् नहीं बोलने वाले शब्द अथवा अपशब्द मुख से नहीं निकालने चाहिए। कठोर बात कहने के लिए भी सुन्दर शब्दों का चयन कीजिए।

2. आलोचना का निषेध :-

आलोचना से बचें। जहाँ तक हो सके किसी की आलोचना न करें। भगवान को निन्दा बिल्कुल भी प्रिय नहीं है। अर्जुन को भगवान ने कई स्थानों पर अनसूय कहा है अर्थात् जो किसी की कभी निन्दा नहीं करता हो। अपैशुनम् को भगवान ने दैवीय गुण कहा है। अपैशुनम् अर्थात् जो कभी किसी की



आलोचना अथवा चुगली न करे।

3. पूर्वाग्रह का निषेध :-

पूर्वाग्रहों से बचें। कई बार हमारे किसी के प्रति पूर्वाग्रह होते हैं तो हम उसकी बात अवश्य काटेंगे, इस बात से हमें कोई मतलब नहीं कि वह सही है या गलत। जैसे आजकल हमारे देश में विपक्ष है, मोदी जी अच्छा भी करें तो भी उसे विरोध ही करना है। किसी को उसके पूर्व में किए गए व्यवहार के आधार पर आंकलित मत कीजिए।

4. किसी को भी अपमानित करने का निषेध :-

किसी को भी अपमानित न करें। कोई भी परिस्थिति हो किसी के मान का हरण नहीं करना चाहिए।

5. विषयांतर करने का निषेध :-

विषयांतर नहीं करना चाहिए। बैठक किसी अन्य विषय के लिए बुलाई गई है और आप किसी अन्य विषय को लेकर बोलने लगें, यह उचित नहीं है। यह वाणी के तेज को घटाता है इसलिए विषयांतर करने से बचना चाहिए।

6. किसी की बात का खण्डन करने का निषेध :-

किसी बात का खण्डन करने से बचें। यदि आप बात से सहमत नहीं हैं तो आप मंडन मत कीजिए लेकिन उस बात का खण्डन भी करना आवश्यक नहीं है, ऐसी स्थिति में मौन भी रहा जा सकता है।

7. आग्रह का निषेध :-

आग्रह करने से बचें कि मेरी ही बात मानी जाए। दस लोग जो बैठक में आए हैं और हम आग्रह करें कि अन्य नौ लोग मेरी ही बात मान जाएँ, यह उचित नहीं है। परम श्रद्धेय ब्रह्मलीन स्वामी रामसुखदास जी महाराज का बड़ा सुन्दर सूत्र है - जीवन में यह हो जाए और यह न हो, इसका जो आग्रह छोड़ देता है, वह परम सुखी हो जाता है। समस्त सुखों के नाश का

कारण हमारा यह आग्रह ही होता है कि यह तो ऐसे हो और यह ऐसे न हो। लोग हमारी तो सुनते नहीं हैं, वे अपने अनुसार कार्य करते हैं और हम अपने आग्रह के कारण दुःखी रहते हैं। इस प्रकार आग्रह करने वाले लोगों को बैठकों में बुलाना भी छोड़ दिया जाता है क्योंकि सभी को यह लगता है कि वह आकर किसी की सुनेगा नहीं और अपनी-अपनी ही सुनाएगा। आग्रह करने वाले लोगों की सब उपेक्षा करते हैं, उन्हें कोई अपने पास बैठाना भी पसन्द नहीं करता है। लोग उन्हें पसन्द करते हैं जो अपनी राय बताकर निर्णय सामने वाले की इच्छा पर छोड़ देता है। जैसा भगवान ने अर्जुन से कहा कि मैंने तुम्हें सम्पूर्ण भगवद्गीता बता दी, सारा ज्ञान दे दिया। अब जैसे तुम्हें ठीक लगे वैसा करो। अट्ठारहवें अध्याय के अन्तिम भाग में भगवान कहते हैं-

यथेच्छसि तथा कुरु

(जैसा तुम चाहो, वैसा करो)

भगवान ने यह नहीं कहा कि ऐसा ही करो।

8. सीधा किसी को गलत कहने का निषेध :-

किसी को सीधा गलत कहने से बचें, इससे आपके सम्बन्ध प्रगाढ़ होते हैं। आपको दिख रहा है कि वह व्यक्ति गलत है किन्तु उसे सीधे गलत कहने से बचें। सीधे गलत कहने से परिवार और समाज में सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं।

कर्म व्यवहार का पुनः अवलोकन करते हैं-

1.मनसा

2. वाचा

3.कर्मणा

ये तीन प्रकार से कर्म होते हैं।

आज वाणी का विचार किया। ये दो प्रकार की होती है-

1. अन्तः करण :-

इसके चार भाग होते हैं- अहम्, चित्त, बुद्धि और मन।

2. बहिर्करण:-

इसके दो भाग होते हैं- विधि और निषेध।

आज हमने ये चिन्तन किया कि किस प्रकार हमारी वाणी प्रभावशाली बने, वाणी का अलङ्कार किस प्रकार बढ़े। यह चिन्तन हमें स्वयं के लिए करना है, किसी अन्य के लिए नहीं, यह बात हमें ध्यान रखनी है।

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥



Linguistic Kaleidoscope



ഭഗവദ് ഗീതയിൽ നിന്നുള്ള ജീവിതപാഠങ്ങൾ



ഭഗവദ് ഗീത മനുഷ്യ അസ്തിത്വത്തിന്റെ മുഴുവൻ ശ്രേണിയും നൽകുന്നു. ഇത് സമനിലയും സമചിത്തതയും ഒരാളുടെ നിയുക്ത കടമ നിർവഹിക്കുന്നതിനെയും സൂചിപ്പിക്കുന്നു. ഭഗവദ് ഗീതയിൽ ഭഗവാൻ കൃഷ്ണൻ നൽകിയ ഏഴ് പ്രധാന പാഠങ്ങളുണ്ടെന്ന് നാമെല്ലാവരും ഓർക്കണം.

അസ്തിത്വത്തെ ബഹുമാനിക്കുക: ഭൂമി, ജലം, അഗ്നി, ഈഥർ (സ്പേസ്), മനസ്സ്, ബുദ്ധി, ബോധം എന്നീ എട്ട് ഘടകങ്ങൾ ചേർന്നതാണ് പ്രപഞ്ചം എന്ന് ഭഗവദ്ഗീത പറയുന്നു. പരിസ്ഥിതി, ഭൗതിക ശരീരം, പ്രാണൻ അല്ലെങ്കിൽ ഊർജ്ജം, മനസ്സ്, ബോധം എന്നിവയാണ് മനുഷ്യന്റെ നിലനിൽപ്പിനുള്ള അഞ്ച് കവചങ്ങൾ. അതിനാൽ പ്രപഞ്ചം മുഴുവൻ ഒരു വ്യക്തിഗത ഭാഗമാണ്, നമ്മൾ പ്രപഞ്ചത്തിന്റെ ഭാഗവുമാണ് സമാധാനപരമായ പോരാട്ടം: കൃഷ്ണൻ അർജ്ജുനനോട് യുദ്ധം ചെയ്യാൻ പറയുന്നു, എന്നാൽ അതേ സമയം സമാധാനമായിരിക്കുക. ഭഗവാൻ പറയുന്നു, “ആദ്യം അകത്തേക്ക് പോയി സ്വയം ശുദ്ധീകരിക്കുക. വിദ്വേഷത്തോടെ പോരാടരുത്, നീതിക്കുവേണ്ടി പോരാടുക; സമചിത്തതയോടെ പോരാടുക."

നിങ്ങളുടെ മനസ്സ് ശ്രദ്ധിക്കുക: ഗീത പറയുന്നു, " നിങ്ങളുടെ

അടിമത്തത്തിനും നിങ്ങളുടെ വിമോചനത്തിനും നിങ്ങളുടെ സ്വന്തം മനസ്സാണ് ഉത്തരവാദി." നിങ്ങളുടെ മനസ്സ് എപ്പോഴും മാറിക്കൊണ്ടിരിക്കും.

സാധനയിലൂടെ (ആത്മീയ സമ്പ്രദായങ്ങൾ) നിങ്ങളുടെ മനസ്സ് നന്നായി പരിശീലിപ്പിക്കപ്പെടുന്നുവെങ്കിൽ, അത് നിങ്ങളെ ചങ്ങാത്തം കൂടുകയും സഹായിക്കുകയും ചെയ്യുന്നു. അല്ലെങ്കിൽ, നിങ്ങളുടെ സ്വന്തം മനസ്സ് ഒരു ശത്രുവിനെപ്പോലെയാണ് പെരുമാറുന്നത്.

കർമ്മയോഗം: നിഷ്കാമ-കർമ്മത്താൽ മുക്തി നേടുന്നു. ജ്വരമോ കർമ്മഫലങ്ങളോടുള്ള ആസക്തിയോ ഇല്ലാതെ ചെയ്യുന്ന കർമ്മം. കർമ്മയോഗം പൂർണ്ണ ഉത്തരവാദിത്തത്തോടെ ചെയ്യുന്ന ജോലിയാണ്.

വേദന നിർത്തുക: ഭഗവാൻ കൃഷ്ണൻ ആദ്യം അർജ്ജുനനെ വേദനിപ്പിക്കുന്നു, "എന്തൊരു ഭീരുവാണ് നിങ്ങൾ യുദ്ധക്കളത്തിൽ നിന്ന് ഓടിപ്പോകാൻ ആഗ്രഹിക്കുന്നത്? " എന്നാൽ അർജുനൻ തർക്കിക്കുന്നില്ല. നിങ്ങൾക്ക് വേദന അനുഭവപ്പെടുമ്പോൾ, അടച്ചുപൂട്ടരുത്. സാഹചര്യം നോക്കുക. ജ്ഞാനിയായ ഒരു വ്യക്തിയുടെ അല്ലെങ്കിൽ നിങ്ങൾ വളരെയധികം ബഹുമാനിക്കുന്ന ഒരാളുടെ പ്രവൃത്തികൾ നിങ്ങളെ വേദനിപ്പിക്കുന്നുവെങ്കിൽ, അത് എന്തെങ്കിലും നല്ല കാരണത്താലാണെന്ന് അറിയുക. ഒരു സുഹൃത്ത് നിങ്ങളെ ഉപദ്രവിക്കുകയാണെങ്കിൽ, ചില കർമ്മങ്ങൾ മോചിപ്പിക്കപ്പെടുന്നുവെന്ന് അറിയുക. അറിവില്ലാത്ത ഒരു വ്യക്തിയിൽ നിന്നാണ് വേദന വരുന്നതെങ്കിൽ, കരുണ കാണിക്കുക. ഈ മൂന്ന് മനോഭാവങ്ങൾക്ക് നിങ്ങളുടെ മുഴുവൻ വ്യക്തിത്വവും തിളങ്ങാൻ കഴിയും.

നീ സുഖമാണ്: താൽക്കാലികമായത് ദുഃഖകരമാണെന്ന് ഓർക്കുക. സുഖം നിന്റെ ഉള്ളിലുണ്ട്. താൽകാലികവും ക്ഷണികവും മാറുന്നതുമായതിൽ

സന്തോഷം തേടരുത്. മാറ്റമില്ലാത്തതിൽ മാത്രമാണ് സന്തോഷം.

കാലത്തിന്റെ ഒഴുക്കിന് സാക്ഷ്യം വഹിക്കുക: നിങ്ങളുടെ ജീവിതത്തിലെ സംഭവങ്ങളുടെ ഒഴുക്ക് നിരീക്ഷിക്കുന്നതിലാണ് ഗീതയുടെ പ്രസക്തി. അതാണ് 'സാക്ഷി'! നിങ്ങളുടെ ഭൂതകാലത്തിലേക്ക് നോക്കൂ - ഇത് ഒരു സ്വപ്നമല്ലേ? അതുപോലെ 20 വർഷം കൂടി കടന്നുപോകും. അത് ഓർത്തുകൊണ്ട്,

" അനിഷ്ടമായാലും സുഖമുള്ള കാര്യമായാലും ഞാൻ അതിന് സാക്ഷിയാണ്. എന്റെ മനസ്സ് അതിൽ കുടുങ്ങിപ്പോയതും സംഭവത്തിന്റെ ഭാഗമാണ്; അതിനും ഞാൻ സാക്ഷിയാണ്. " ഏത് സാഹചര്യത്തിലും നിങ്ങൾ ഉയരുന്നത് ഇങ്ങനെയാണ്.

വായു എങ്ങനെ വന്ന് എല്ലാത്തിനെയും പറത്തിവിടുന്നുവോ അതുപോലെ തന്നെ ജീവിതത്തിലെ എല്ലാ സംഭവങ്ങളും വന്നു പോകും. എന്നാൽ അത്യാവശ്യമായത് നിങ്ങൾ എവിടെയും കുടുങ്ങിപ്പോകരുത്, മുന്നോട്ട് പോകുക, നിങ്ങളുടെ പരിശ്രമത്തിൽ ഏർപ്പെടുക എന്നതാണ്. നിങ്ങളുടേത് എന്താണോ അത് തീർച്ചയായും നിങ്ങളിലേക്ക് വരും.

- Mrs. Sudha Anil Kumar Pillai, Thane



గీతా - మాతా

అమ్మ -స్వచ్ఛమైన ప్రేమకు మారు పేరు అమ్మ - పవిత్ర ప్రేమకు ప్రతీక, అమ్మ- స్వేచ్ఛా స్వతం త్యాలను ప్రసాదించేది. ఆలంబనకు, ఆప్యాయతకు అమ్మే ఆధారం. ప్రమాదంలోను ప్రమోదం లోను అమ్మే సాక్ష్యం. అమ్మ అంటే ప్రకృతి. ఒకసారి కల్లోలం, మరోసారి నిశ్శబ్ధం. "అతి సర్వతా వర్జయేత్" అన్నట్లుగా ఏదైనా పరిమితిని దాటితే హానికరం. నియంత్రణ, నివారణ అమ్మ యొక్క సహజ స్వభావం.

స్వామి వివేకానందుడు చెప్పినట్లు నీ చేత గీతలను నీవే మార్చుకో దానంతట అదే నీ రాత మారుతుంది. అదెలాగో అగమ్య గోచరంలో ఉన్నపుడు నాకు కనపడిన ఒకే ఒక మార్గం జ్ఞానం. అమ్మ లోని దార్శికత ధార్మికతలా, నాలోని అజ్ఞానానికి కాగడలా గీతాచార్యుడు బోధించిన గీతా మకరందం ఆర్తిని తీర్చింది. పరమపవిత్రమైన గీతను పరిచయం చేసిన గురువులందరికీ నమస్సుమాంజలులు.

అమ్మ, చేయి పట్టుకుని నడక ఎలా నేర్పించిందో అలాగే వైతరణిని దాటించగలిగే రహస్యం బోధించే మాత పూజనీయ గీత "భగవద్గీత":

కొన్ని సార్లు ఏం చేయాకూడదో తెలిస్తే మార్గం, ప్రయాణం సుగమం అవుతుంది. స్థిరత్వం, చంచలత్వం; ప్రేమ, ద్వేషం; దయ, క్రూరత్వం ద్వంద్వాలు మానవులకు సహజ సిద్ధమైన అనుభవాలు, భావాలు. వీటినియంత్రణకు దిక్సూచి, సరళతనూ, స్థిరత్వాన్ని, నిస్వార్థాన్ని, స్వేచ్ఛనూ

ముక్తే పరమగమ్యం అని బోధించే గీతా - మాత అనటంలో ఎలాంటి సందేహం లేదు. ఈ గీతను -

చదువు,చదివించు, అన్వయించు అనే నినాదంతో సులభమైన,

సరళమైన రీతిలో నేర్పిస్తున్న "గీతా పరివార్" వారికి

- Smt. Uma Rani Tavva, Telangana

ઘાસની ગંજીમાં સોયની શોધ

દિવસ રાત વધતા ભૌતિકવાદની નીચે દબાયેલા જીવનમાં જીવંત જીવન જાણે કે ઘાસની ગંજી બની ગયું હોય એવું નથી લાગતું? જાતને સંતુષ્ટ કરવા માટે પળે પળે ઉપસ્થિત થતા રહેતા અગણિત વિકલ્પોમાંથી કોઈ એક વિકલ્પની પસંદગી કરવી, પોતાના આત્મસંતોષ અને જીવનના ઉદ્ધાર માટે, એ કપરું ને કપરું નથી બનતું જતું? અનેક વિકલ્પો અજમાવતા-અજમાવતાં, "નેતિ નેતિ" કહેતાં-કહેતાં, ક્યાં ને ક્યાં પહોંચી જવાય, પણ દરેક વખતે એવું જ લાગતું હોય કે ના, આ તો નહીં જ.

તો આવી જીવનયાત્રા કેવી હોય? એક ઉદ્દેશ્ય, એક હેતુની શોધ માટે કેટકેટલી મથામણ ને ગૂંગળામણ? આવી અકળાવતી, મૂંઝવતી પરિસ્થિતિ રણ બનીને સમગ્ર અસ્તિત્વને દઝાડતી હોય ત્યારે એ ગંજીમાંથી સોય મળી જાય, એ તો ઈશ્વરની અસીમ કૃપા, વડીલોના આશીર્વાદ અને સંચિત સત્કર્મોનું ફળ જ ને?

વર્ષોથી લેખન અને અનુવાદનું કાર્ય કરતા રહ્યા પછી અચાનક એક વિચાર દિવસ-રાત મન-મસ્તિષ્કને હચમચાવતો રહ્યો, ઘમરોળતો રહ્યો. શ્રી ગીતાજી પ્રતિ સમજાય નહીં એવું, શબ્દાતીત અદમ્ય ખેંચાણ. ગીતાજી વિશે લખી શકવા જેટલી યોગ્યતા તો નથી જણાતી, પણ હા, અનુવાદ કરવો યોક્કસ યોક્કસ ગમે! તો ... ક્યાંથી, કેવી રીતે, કયા લેખનનો અનુવાદ કરવો? ક્યાંય કોઈ માર્ગ દેખાતો નહોતો. એવામાં જાણે કે ગીતાજીએ મને શોધી કાઢી...

જાણવા મળ્યું કે ગીતા પરિવારમાં લેખન-અનુવાદના કાર્યની સેવા આપી શકાય છે!! તરત જોડાઈ ગઈ અને પ્રથમ સ્તર પૂરું થતાંમાં તો જાણે કાર્ય માટેની એક દિશા નહીં, અનેક દિશાઓ મળી ગઈ! ઘાસની ગંજીમાંથી સોય મળી ગઈ!

ઇચ્છા હતી, લેખન-અનુવાદની પણ પહેલી સેવા આપી સમૂહ સંચાલક તરીકે! પછી વિવેચન અને મેસેજ ટ્રાન્સ્લેશન ટીમમાં અને પછી પ્રચાર વિભાગમાં સેવા આપવાનું સૌભાગ્ય પ્રાપ્ત થતું રહ્યું અને ઓહો, ગીતા પરિવારની પ્રવૃત્તિમાં સેવા આપવા રૂપી સોય વડે કેટકેટલું સંધાતું રહ્યું!

ગીતા પરિવારની જે લાક્ષણિકતાઓ સૌથી વધુ ઊડીને આંખે વળગે છે તેમાંની પહેલી છે, **વ્યાવસાયિક સંસ્થા ન હોવા છતાં, તેની વિશ્વ સ્તરીય કાર્યશૈલી.** અદ્‌ભુત, અપ્રતિમ!! દરેક વિભાગ એવો કે તેમાં કાર્ય કરવાની અદમ્ય ઇચ્છા થઇ આવે. શ્રી ગીતાજીના અમૂલ્ય સંદેશને જીવનમાં ઉતારવા જેવી અત્યંત અઘરી લાગતી વાતને સાવ જ સરળ શબ્દોમાં, આબાલ-વૃદ્ધ સૌને એકાત્મતા લાગે તેવા ઉદાહરણો દ્વારા પ્રસ્તુત થતી જોઈ! સામાન્ય રીતે આ બધા ઉપદેશો હંમેશાં સાધુ-સંતો-સ્વામી-મહારાજ તરફથી આપવામાં આવતા હોય છે, પણ અહીં વાત ગીતાજીની જ છે, ઉપદેશ સ્વામીજીના જ છે, પણ પ્રસ્તુત કરનાર જાણે કે એક પરિવારજન જ છે, જેની સાથે આ પરિવારના સભ્યો પોતપોતાની રીતે આત્મીયતાથી બંધાય છે.

ગીતા પરિવારના રાષ્ટ્રીય કાર્યાધ્યક્ષ પરમ આદરણીય શ્રી સંજયભાઇ માલપાણીજીનું વર્ષોની આદત બદલી નાખનાર ભોજન સંબંધિત અર્થ-વિવેચન સત્ર હોય કે **ગીતા પરિવારના આંતરરાષ્ટ્રીય કાર્યાધ્યક્ષ અભૂતપૂર્વ લોકપ્રિયતાના સ્વામી અને લાખો લોકોના હૃદયસ્થ શ્રી આશૂભાઇ ગોયલજી**નું શબરી વિશેનું, સૌ શ્રોતાઓના હૃદયના ભાવોને અશ્રુધારાથી

વહેવડાવતું અવિસ્મરણીય વક્તવ્ય હોય કે મનોમંથન કરવાની બળજબરી કરે તેવું પુરંજન આખ્યાનવાળું અર્થ- વિવેચન સત્ર હોય કે પરમ શ્રદ્ધેય વિદૂષી વંદના વર્ણેકરજીનું લેખન સંબંધિત હૃદયમાં કોતરાઈ જાય એવું વ્યાખ્યાન હોય, દરેકે દરેક અર્થ-વિવેચન સત્ર તેમાં ઉપસ્થિત સર્વને આ વિશ્વમાં પોતાનું એક વિશ્વ બનાવ્યાની અનેરી અનુભૂતિ ચોક્કસ કરાવે. આ છે બીજી લાક્ષણિકતા. **સરળતાથી સર્વોત્કૃષ્ટતાનું સિંચન અને પ્રસાર.** આ વ્યક્તિગત માનસિક આત્મીયતા



જ છે જેના કારણે સેંકડો વિષાદયુક્ત, હતાશ, દિશાહીન માનવોને ઈશ કૃપાનું અમૃત પ્રાપ્ત થયું છે, થઈ રહ્યું છે અને થતું રહેશે.

23 જૂન 2020થી **ઑનલાઇન વર્ગો** શરૂ થયા તે **પહેલી રચનાત્મકતા**. દેશના અસ્તિત્વમાં નિહિત આધ્યાત્મિકતાના બળે કોરોના જેવી વૈશ્વિક મહામારીનો સામનો કરવાનો વિચાર કદાચ માત્ર ભારતમાં જ ઉદ્‌ભવી શકે! અને એ વિચારને પ્રેરણાદાયી સ્વરૂપે અમલમાં પણ કદાચ ભારત જ મૂકી શકે!

ત્યાર પછી અત્યાર સુધીમાં 13 ભાષાઓ અને 19 સમય સત્રો સાથે 185થી વધુ દેશોમાં વિસ્તાર પામેલો **ગીતા પરિવાર રચનાત્મકતામાં મોખરે** છે. વાર્તામાંની રાજકુંવરીની જેમ દિવસે નહીં એટલી રાત્રે અને રાત્રે નહીં એટલી દિવસે પ્રગતિ કરીને તે સાધકો અને સેવીઓના જીવનમાં અદકેરું સ્થાન ધરાવે છે તેના મૂળમાં છે નવીનતાઓનો અવિરત આવિર્ભાવ. ચાર વર્ષ કરતાં ઓછા સમયગાળામાં વિશ્વભરમાંથી જોડાયેલા લગભગ 10,000 સેવીઓ દિવસ-રાત જોયા વિના, દરેકેદરેક સૂચનાનું અને નિયમનું શ્રદ્ધાપૂર્વક પાલન કરીને જે ધન્યતા અનુભવે છે તે ખરે જ ગીતાજીની સમગ્ર બ્રહ્માંડમાં વ્યાપક સર્વોચ્ચતાનું અને સાધકોના સંચિત સત્કર્મોનું પરિણામ હોય એવું પ્રતીત થાય છે.

ખૂબ જ ઓછા સમયમાં અકલ્પનીય રૂપે વિકસેલા ગીતા પરિવારમાં જોડાયા પછીનો દરેક દિવસ કોઈક ને કોઈક રીતે વિશિષ્ટ બની રહે છે. વ્યક્તિઓના જીવનમાં વ્યક્તિગત રૂપે અને સામૂહિક રીતે પ્રત્યક્ષ અને પરોક્ષ રૂપે આવતાં પરિવર્તનો ગંભીર અભ્યાસનો વિષય છે.

ઑનલાઇન વર્ગો કે જેમાં પ્રશિક્ષક અને સાધક એકબીજાને માત્ર ડિજિટલ સ્વરૂપે જ 'મળે છે', છતાં દરેક પ્રશિક્ષકની અદમ્ય ધીરજ અને નિષ્ઠા તથા સાધકની હિમાલય સમાન પ્રતિબદ્ધતા, નવું શીખવાનું તથા શીખતા રહેવાનું ગંભીર વલણ, પ્રશિક્ષકનો આબાલ- વૃદ્ધ સૌની સાથે સ્નેહાળ એકસમાન વ્યવહાર અને સાધકોનો પ્રશિક્ષક પ્રત્યે હૃદયના ઊંડાણમાંથી અનેક રીતે વ્યક્ત થતો આભાર... આ ગીતા પરિવારના એવા પાસા છે જેના વિશે મોકળા મને મનન-ચિંતન કરીએ તો **સૃષ્ટિમાં દરેક જગ્યાએ, અણુએ અણુમાં ઈશ્વરની કૃપા વરસતી હોવાનો અનુભવ** થાય. શ્રી ગીતાજીના ઉપદેશ સમજવાની સાધના કરવાની સાથે તેને જીવનમાં ઉતારવાની પ્રવૃત્તિ જાણે કે આપમેળે જ જોડાઈ જાય છે અને તે માનસિક ચેતનામાં સ્વયંભૂ શિવની

જેમ પ્રગટી જાય છે; અને તેમાં વધુ ઊંડા ઉતરતા જઈએ તેમ તેમ સેવા રૂપી સાધના કરવાની લગન પણ જાણે કે સિક્કાની બીજી બાજુ હોય! દરેક સેવી જ્યારે "શ્રીકૃષ્ણાર્પણમસ્તુ" કહે ત્યારે એ હૃદયના કેટલા ઊંડાણથી, કેટલી સત્યતાથી ઉચ્ચારાય છે તે સાચા અર્થમાં શબ્દાતીત છે.

સાંસારિક અગ્નિથી અનેક રૂપે દાઝેલા અગણિત માનવોને શ્રી ગીતાજીમાં સમાવિષ્ટ આધ્યાત્મિકતાના ઔષધથી શીતળ લેપ કરી નવજીવન પ્રદાન કરનાર ગીતા પરિવારની (બાળ સંસ્કાર કેન્દ્રોનો પ્રારંભ, ગીતાજીના અધ્યાયોનું પારાયણ વગેરે જેવી) પ્રવૃત્તિઓનો જે ઑફલાઇન પ્રચાર-પ્રસાર અને અમલ થઇ રહ્યો છે, તેને જોતાં આગામી થોડાંક જ વર્ષોમાં વધુ જોશથી, વધુ તીવ્રતાથી સાંસ્કૃતિક ક્રાંતિ થશે તે વિચાર અસ્થાને નથી.

જનસામાન્યને પશ્ચિમી સંસ્કૃતિના આક્રમણ સામે સંપૂર્ણ આત્મ-વિશ્વાસથી ઊભા રહેવાનું શીખવવામાં અને તેના અનુકરણથી અટકાવવામાં અકલ્પનીય રૂપે વિજયી થયેલા ગીતા પરિવારના પાયાના પાંચ સૂત્રો સદાકાળ વિસ્તરતા વટવૃક્ષની જેમ અગણિત માનવો માટે આત્મિક આશ્રયસ્થાન બનતા રહેશે.

એક સાચા સંતના હૃદયમાં કોઇક દૈવી ક્ષણે જનકલ્યાણ માટે, 'સર્વ જન હિતાય' ઉદ્ભવેલી તીવ્ર ઇચ્છા જ્યારે દૃઢ સંકલ્પ-શક્તિથી અમલમાં મુકાય છે ત્યારે કઇ રીતે ઈશ્વર ડગલે ને પગલે સાથ આપે છે તેનું તાદૃશ ઉદાહરણ છે, **ગીતા પરિવારના સંસ્થાપક અધ્યક્ષ પરમ પૂજ્ય સ્વામીજી શ્રીગોવિન્દદેવ ગિરિજી દ્વારા વર્ષ 1986માં સ્થાપિત ગીતા પરિવાર** અને તેની અનેકવિધ પ્રવૃત્તિઓ. ગીતા પરિવારના માધ્યમથી જીવનમાં જીવંતતા ઉમેરવા બદલ, ઈશ્વર હોવાના અનુભવો બળવત્તર બનાવવા બદલ, સાધના અને સેવા થકી અમૂલ્ય અનુભવોના ધારા- પ્રવાહો વહેવડાવવા બદલ, નિત્ય-નવીન દૃષ્ટિકોણ પ્રસ્તુત કરવા બદલ અને સમગ્ર વિશ્વમાં ભારતીય સંસ્કૃતિની એક અનેરી ચેતના પ્રસરાવવા બદલ **સ્વામીજીના ચરણકમળમાં કોટિ કોટિ વંદન સહ અનન્ત આભાર.** સૌહાર્દપૂર્ણ સહકાર થકી સેવાકાર્યમાં ધન્યતાના અનુભવો કરાવતા સૌ ગીતા પરિવારજનોનો હૃદયના ઊંડાણથી આભાર.

ગીતા પરિવાર, સૌ પરિવારજનો અને પરિવારની પ્રવૃત્તિઓ નિરંતર વિકસતી રહે અને સમગ્ર વિશ્વ કલ્યાણ માર્ગે પ્રગતિ કરે તેવી શુભેચ્છાઓ સાથે, જય ભોલે, જય શ્રીકૃષ્ણ.

- Jagruti Trivedi, Varodada



कधी गीता साधक, कधी सेवी

अशी मी एक गीता प्रवासी.



माझी पहिली गीता मला गीता परिवाराकडून मिळाली. माझा गीतेशी परिचयच गीता परिवाराने घडवून आणला.

माझ्या आईच्या सांगण्यावरुन मे 2021 मध्ये मी साधक म्हणून गीता परिवारात सामील झाले. चार धाम यात्रेतील पहिला टप्पा सुरु झाला. मन थोडे साशंक होते पण अजित दादांनी आम्हाला खूप सुंदर शिकवले. वर्गाची गोडी निर्माण झाली. शाळेपासूनच उच्चार स्पष्ट होते त्यामुळे पहिल्या दिवसापासूनच श्लोक जमू लागले. दादांकडून कौतुकाची थाप मिळू लागली आणि पुन्हा शाळेत गेल्यासारखे वाटले. पुढचा श्लोक शिकायची उत्सुकता, श्लोक म्हणायची आपली पाळी जवळ आली की होणारी धाकधूक, शनिवारी/रविवारी होणारे अर्थ विवेचन या सगळ्याची गोडी लागली आणि माझी यात्रा सुरु झाली.

आम्हाला L3 आणि L4 दोन्ही स्तरांत वंदना काकी विवेचक म्हणून लाभल्या. त्या नेहमी ज्ञानेश्वरीतले दाखले द्यायच्या. त्यांच्या विवेचनाला मराठी मातीचा गंध असायचा आणि मग ते आणखीनच आपलेसे वाटायचे. पण इथल्या सगळ्याच विवेचकांना ऐकणे म्हणजे मोरोपंतांच्या केकावलीची प्रचिती घेणे आहे- 'सुसंगती सदा घडो, सुजनवाक्य कानी पडो.'

L1 सुरु असतानाच Tech Assistant होण्यासाठी ग्रुपमध्ये सामील व्हा असा संदेश आला आणि मी लगेच उत्साहाने त्यात सहभागी झाले. गीतासेवी कार्यक्रमाआधीच Tech Assistant चा ग्रुप जॉईन केला. आणि माझ्यातल्या गीता सेवीचा प्रवास सुरु झाला. L2 शिकता शिकता L1 ची Tech झाले. माझ्या L2 च्या Tech ना अडचणीमुळे काही दिवस Class घेता आला नाही तेव्हा आमचा L2 वर्ग Tech म्हणून सांभाळला. आत्मविश्वास अजून बळावला. L1 ते L4 च्या सेवेत जे साधक भेटले त्यातले काही अजूनही आठवण काढतात, मेसेज करतात. हीच खरी पुंजी. Tech ची सेवा देता देता Adding, Super Tech, Exam Tech, Content Forwarding विभागात सेवा द्यायला लागले. तशातच एक दिवस स्वामिनाथन भैय्यांनी मराठी MTT (Msg Translation Team) जॉईन करायला प्रोत्साहन दिले. सद्धया मी Content Forwarding Department आणि मराठी MTT चे नेतृत्व करत आहे.

हैदराबाद मैत्री मिलनच्या निमित्ताने काही सेवींना प्रत्यक्ष भेटता आले. त्यात श्रद्धा ताईंसारखी गोड मैत्रीण मिळाली. या सर्व प्रवासात मी काय पाहीले, काय शिकले, काय मिळविले? लोकांच्या स्वभावातले निरनिराळे कंगोरे पाहीले. निःस्वार्थ भावनेने सेवा देणारे कार्यकर्ते बघितले. एकाचवेळी साधक आणि सेवी यांची सांगड घालणारा Learngeeta हा अद्वितीय उपक्रम जवळून अनुभवला. शाळेत शिकणाऱ्या, 14 वर्षांच्या प्रिया दीदीला संपूर्ण एक

विभाग सांभाळताना बघितला. सेवेचा एवढा उत्साह वयाने मोठ्या आमच्या सारख्यांकडेही नसेल. ही वयाने लहान तर प. पू. स्वामीजी चिरतरुण! हिंदू समाजाला जागृत करण्यासाठी, एकत्र आणण्यासाठी अखंड परिश्रम आणि त्यासाठी सतत फिरतीवर. वयाची सत्तरी उलटल्यावरही एका तरुणाला लाजवणाऱ्या उत्साहाने स्वतःहून पायाला चक्र लावून त्या चक्रधारी श्रीकृष्णाला जनामनात वसविण्यासाठी झटणारे. त्यांची ही ऊर्जा स्वराज्य निर्मितीसाठी सज्ज झालेल्या शिवाजी महाराजांची आठवण करुन देते. आदरणीय आशू भैय्यांनीही श्रद्धेने स्वामीजींचे ध्येय हेच आपल्या जीवनाचे ध्येय बनविले आहे. आपला व्यवसाय आणि गीता परिवाराचा कारभार ते आपल्या सक्षम खांद्यांवर लीलया पेलत आहेत. एवढंच नाही तर गीता परिवार सतत प्रगतीशील असावा याची ते दक्षता घेतात. गीता परिवारातील सगळ्याच वरिष्ठ सन्माननीय सदस्यांचा व्यासंग, अभ्यास, गीतेविषयीची तळमळ पाहून मन थक्क होतं. आपणही गीतेचा अभ्यास वाढवावा, सुरात गीता गाता यावी ही इच्छा प्रबळ होत जाते. चारही स्तर पूर्ण झाल्यावरही सेवी आणि साधक ही दोन्ही रुपे हातात हात घालून चालतात.

रात्रीचा दिवस करणाऱ्या या दिग्गजांमध्ये आपली सेवा ही फूल ना फुलाची पाकळी आहे. पण या रामसेतूत आपलाही खारीचा वाटा आहे हा विचारही आनंद देऊन जातो. विधात्याने आपल्याला ही संधी दिली हेही नसे थोडके.

सदा सर्वदा योग तुझा घडावा,
तुझे कारणी देह माझा पडावा।
उपेक्षू नको गुणवंता अनंता,
रघूनायका मागणे हेची आता॥



- सौ. रिया राजेश खानविलकर, हैदराबाद

THE PATH LESS TRAVELED : A SOFTWARE DEVELOPER'S JOURNEY WITH GEETA PARIWAR



The year was 2021, and the world was in the grip of a pandemic. Fear was palpable in the air, every cough was a potential threat, and the outside world seemed like a battlefield.

In the past few years, my family had been shattered by grief. We were still recovering from the loss of my father when, within a six months period this year, I lost my mother and younger sister as well. It was a triple blow that left us all Shattered. At my house, we often had health emergencies, and my own health wasn't doing so well either.

One day, while engrossed in my work, I heard my wife reciting Geeta shlokas. She was attending an online class. While I wouldn't label myself as naturally skeptical, the recent surge of self-proclaimed gurus promising instant enlightenment had certainly made me cautious.

Cyberspace had been overflowed with dubious promises: instant Kundalini awakening, remote chakra cleansings, and one-click solutions to life's problems - all at a premium price. So, when I heard my wife chanting the Bhagavad Gita from her computer one afternoon, skepticism was my first reaction. Imagine my surprise - an online platform dedicated to teaching the Bhagavad Gita, with hundreds of teachers reaching out to lakhs of students!

Recitation of sacred texts, including the Bhagavad Gita, had always been a part of my upbringing, so I wasn't much interested in most of these online classes. But this class was different. Now, I'm no expert, but the teacher's voice immediately struck a chord. Calm, composed, and radiating a quiet understanding, she explained the shlokas in a way that resonated. Unlike the online gurus promising quick fixes, this teacher focused on clear pronunciation and ensuring everyone grasped the meaning.

The teacher was composed, calm, understanding, patient, and was reciting in

perfect way. she was also repeating the shlokas as many times as needed for student's understanding.

She wasn't selling; she was sharing. Maybe it was the genuine care in the teacher's voice, or the patient repetition for those needing a little extra help. Maybe it was the way the class fostered a sense of community, even through the screen. Whatever it was, I found myself captivated.

Intrigued, I confessed to my wife, "This teacher seems genuine. Maybe you should continue with this class - it's a brilliant way to perfect pronunciation."



While I encouraged her, the idea of joining myself hadn't quite taken root yet.

One day, while my wife was engrossed in watching "आओ गीता सेवी बनें" (Come, let's become Geeta Volunteers), I overheard that the speakers were inviting individuals with programming experience to offer their seva in Geeta Pariwar.

As someone with decades of experience in the software field, I saw this as a golden opportunity to combine my skills with my devotion. There was just one catch - I had to join the L1 level to learn the Geeta first. And so, with a mix of curiosity and excitement, I signed up for the beginner level.

Little did I know, joining LearnGeeta online training classes would be a turning point.

The moment I joined the LearnGeeta classes, I was struck by the divine atmosphere that enveloped the virtual space.

The virtual classroom buzzed with a unique energy. There were people from all walks of life, united by their devotion. The trainers were sincere and knowledgeable, the atmosphere was electric, with a sense of discipline and respect that was evident even through the computer screen.

I was amazed by the diversity of the people I met. One of the most heartwarming aspects of Geeta Pariwar has been witnessing the sheer joy on the faces of older learners. Many, in their twilight years, were finally fulfilling a lifelong wish to delve into the wisdom of the Gita. Others, who had never been formally exposed to Sanskrit, were now confidently

grappling with its ancient verses. Their enthusiasm was infectious, a testament to the timeless quality of the Gita's message. It served as a stark reminder that the pursuit of knowledge and spiritual growth has no age limit.

Discipline in the online classroom and WhatsApp group ensured everyone's focus remained sharp. We addressed each other as "Bhaiya" and "Didi," fostering a sense of respectful family.

The weekly Vivechan Satras, led by esteemed scholars like resp. Shri Sanjay Malpani Bhaiya and resp. Shri Ashu Goyal Bhaiya, were a highlight. Their insightful explanations illuminated the Gita's profound wisdom, making even complex concepts clear and relatable. The insightful Q&A sessions following the Vivechan Satras enriched attendees by clearing doubts and offering solace through the Gita's wisdom. LearnGeeta's digital platform bridged the gap between distance and devotion, fostering spiritual development for a global audience.

The platform also proved to be a solace for those coping with loss. The global pandemic, with its devastating toll, left many families reeling from the sudden absence of loved ones. The Gita's profound teachings on the impermanence of the physical world and the eternal nature of the soul offered comfort and a sense of perspective during these



challenging times.

Despite my initial reservations, I found myself growing more and more interested in the Geeta as the weeks went by. Even though I couldn't attend every Vivechan satra due to time constraints, I always made sure to tune in whenever I could. And when I did, I was never disappointed. The discussions were always thought-provoking, and the question and answer sessions were a treasure trove of knowledge and insight.

Due to my busy schedule, committing to a fixed daily seva schedule with LearnGeeta was simply out of the question. So, I waited, hopeful, for an opportunity to utilize my software development skills, a chance to offer seva in a way that fit my circumstances.

Thankfully, Geeta Pariwar soon threw open its doors. I had the privilege of working on several projects here, each

one like a stepping stone on my path of learning and growth. But the one that truly tested the limits of my abilities was the automatic message generation in nine languages! It was complex, demanding, and ultimately, incredibly rewarding. The initial setup of the Learning Management System (LMS) was another challenge I relished. In addition to these projects, I actively developed several Google Apps to address specific needs.

The true culmination of my efforts was creating the first version of http://vivechan.learngeeta.com. I vividly remember the day Shri Ashu Bhaiya ji announced its launch. It felt like a divine acceptance of my service by Bhagvan Shri Krishna himself.

These projects became my refuge during the pandemic's darkest days. As loneliness threatened to consume us all, they were a fortress, shielding me from despair. They shielded me from loneliness and fear, providing a sense of purpose and connection when the world felt like it was falling apart. It kept me afloat, my mind occupied in a divine cause, a welcome distraction from the storm raging outside - and sometimes, even within. Family losses - my parents and sister - had left a void, and health anxieties loomed constantly. But focusing on these projects kept me grounded, my mind occupied with a purpose that transcended my personal struggles.



During online classes, I observed that Geeta Pariwar's students were remarkably diverse. Some, like me, sought solace, while others pursued different goals. Many elderly participants, beaming with joy, learned the Gita for the first time. Young adults explored the ancient scripture with curiosity.

What further cemented my association with Geeta Pariwar were the stories I encountered. There were those who had weathered the storm of personal tragedies, losing loved ones to the cruel grip of the pandemic. Witnessing their resilience, their unwavering faith in the face of adversity, was a humbling experience.

In today's digital landscape, children are often confined to their phones, consumed by the relentless scroll of

social media. Here at Geeta Pariwar, I witnessed a heartwarming counter-narrative. many parents expressed immense gratitude for the platform. The Gita, they explained, offered their children a much-needed escape from the virtual world.

One of the most inspiring aspects of Geeta Pariwar is the prominent role of women in leadership positions. From WhatsApp group admins and pracharaks to coordinators, translators, and social media influencers, women of all ages are at the forefront of this digital gurukul (Online classes). Their contributions extend beyond administrative roles, with a majority of trainers also being women. This nurturing environment reflects the Gita's message of empowerment for all.

Geeta Pariwar's strength lies in its leadership. A team of accomplished doctors, Managers, Business Owners and successful Entrepreneurs guides the organization, ensuring well-informed decisions and a platform that effectively reaches its dispersed student base.

But Geeta Pariwar isn't just about strong leadership. Knowledge is power, and Geeta Pariwar takes this notion seriously. The organization boasts a significant number of highly educated individuals - Doctors, PhDs, and other scholars - who occupy key positions in Geeta Pariwar. Their expertise ensures the highest literary quality in all learning materials and discourses (vivechans). The depth of knowledge readily available was truly inspiring.

This journey with LearnGeeta has been an eye-opener. It's shown me that genuine spiritual learning exists online, and that sometimes, the most profound experiences come from the most unexpected places. In a world often consumed by the transient and the trivial, Geeta Pariwar reminds us of the enduring power of knowledge, faith, and the timeless wisdom of the Bhagavad Gita. So, if you're looking to deepen your understanding of the Bhagavad Gita, or simply seeking a community of like-minded individuals, I highly recommend checking out LearnGeeta. You might just be surprised at what you discover.

-Sunil Kapdi , Mumbai



श्रीमद्भगवद्गीताको सामान्य विवेचना



के हो श्रीमद्भगवद्गीता?

"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः" सत्यमा असतको र असत्यमा सतको भाव हुँदैन। अर्थात ज्ञानमा अज्ञानको र अज्ञानमा ज्ञानको भाव हुँदैन। श्रीमद्भगवद्गीता वास्तवमा सत्यज्ञानको पुँज हो। गीता- सामान्य अर्थमा भगवद्गीता भनेको सत्यपुँज हो। मानव जीवनलाई सफल बनाउने सुत्र हो। वरत्र र परत्र दुवै अवस्थाको कल्याणकारी दर्शन हो। महाभारतको युद्ध-मैदान, कुरुक्षेत्रको मध्यभागमा बसेर भगवान श्रीकृष्णले अर्जुनलाई देखाउनु भएको जीवन दर्शन नै भगवद्गीता हो। यसमा १८ अध्याय तथा ७०० श्लोक रहेका छन्। यो पुस्तक हरेकदिन २ घण्टा बुझेर पाठ गर्ने गरेमा जीवनका हरेक सफलता प्राप्त गर्न सकिन्छ। सोचेको कुरा पुग्छ। दिनको दुई घण्टा परम सत्ताको ध्यानयोग, भक्तियोग र ज्ञानयोगमा जीवन समर्पण गर्न सक्नु भयो भने प्रकृतिले सबै दिन्छिन। कुनै चिन्ता गर्नुपर्ने कारण नै बाँकी रहँदैन। त्यसैले गीता पढ्नेहरु गरिव, असहाय, वा दीनदुखी हुँदैनन्। जीवन सफलपार्ने, मस्त र खुशीपार्ने, भगवानको नजिक पुर्याउने अर्थात् ज्ञान, धर्म, कर्म, र सत्यकोमार्ग देखाउने निर्देशक सिद्धान्त नै श्रीमद्भगवद्गीता हो।



किन पढ्ने श्रीमद्भगवद्गीता?

"योग: कर्मसु कौशलम्" योगपूर्ण कर्मसन्यासयोग प्राप्तगर्न अर्थात् कर्ममा कौशलता हासिलगर्न श्रीमद्भगवद्गीता पढ्नुपर्छ। जीवन मायाले भरिएको छ। सम्बन्ध, तेरोमेरो, परिवार, धनसम्पत्ति, अध्ययन, व्यवसाय, नोकरी आदि इत्यादिमा नै हाम्रो जीवन जेलिएको छ। यो जेलिएको-बाँधिएको बन्धक जस्तो जीवनले स्वतन्त्रता खोजिरहेको हुन्छ। जीवनदेखि हारेर कति मान्छेहरु जोगी-सन्यासी भएका हुन्छन। घरपरिवार त्यागेका हुन्छन। संसार एउटा हिलो हो। यहि हिलोमा सुन्दर कमलको फूल फुलेको हुन्छ। हो यो मायावी संसार मै बसेर अर्थात यहि सामाजिक परिवेशमै बसेर सुख, शान्ति, समृद्धि, र शिद्धी प्राप्त गर्न श्रीमद्भगवद्गीता पढ्ने गरिन्छ। सजिलै यो भवसागर पारगर्ने नाउ नै भगवद्गीता हो। केहि आशा नै गर्नु पर्दैन चाहिने जति सबै प्राप्तगर्न गीता अध्ययन गर्नुपर्छ। संकराचार्य, माधवाचार्य, तथा रामानुजाचार्यको

विचमा भाष्यमा केहि मतभेद भए पनि परमतत्वमा कुनै भेद छैन। द्वेत-अद्वेत चेतना भन्दा धेरै माथिको वेदान्त दर्शन नै श्रीमद्भगवद्गीता हो।

कसले पढ्ने श्रीमद्भगवद्गीता ?

"न कर्मणामनाराम्भान्नैष्कम्यं पुरुषोअश्नुते" – कुनै कर्म छोड्नु पर्दैन केवल नकारात्मक सोच त्यागे पुग्छ। त्यसैले सफल, खुसि, र समृद्ध हुन चाहाने सबैले पढ्ने हो। जीवनका हरेक प्रश्नको उत्तर भगवद्गीतामा पाइन्छ। त्यसैले भगवद्गीता ज्ञानको सागर–ज्ञानेश्वरी हो। दु:खको कारण नै अज्ञानता हो। दु:ख दुष्कर्मको परिणाम हो। सत्कर्म गर्नुस कहिले पनि दु:ख आउँदैन।ज्ञान, ध्यान, कर्मसन्यास र भक्तिमा पूर्ण आनन्द छ। त्यसैले गीता कर्मवीरहरुले पढ्नु पर्छ। शिक्षक, प्राध्यापक, लेखक, डाक्टर, इन्जिनियर, व्यापारी, किसान, राजनीतिज्ञ, प्रशाशक, आदि जो आफ्नो कर्ममा शिद्धि चाहन्छन – सुख, शान्ति, समृद्धि चाहन्छन सबैले गीता पढ्नुपर्छ। भगवद्गीतामा कुनै जात, धर्म, वर्ग, उच, निच, विभेद केहि छैन। भगवानको नजरमा को ठुलो को सानो ? को धनि को गरिव ? को छूत को अछूत? दलित, जनजाति, महिला तथा सिमान्तिकृत समूहले झन गीता अध्ययन गर्नु जरुरि छ। सबै सांसारिक तुतुमेमे भन्दा माथि उठेर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष्य प्राप्तगर्न श्रीमद्भगवद्गीता सहि मार्ग हो।

कहिले पढ्ने श्रीमद्भगवद्गीता ?

"ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्" ज्ञान प्राप्तिको लागी अथवा कर्म कौशलताकोलागी योगी स्वरूप सफलता प्राप्तगर्नु सबैको धर्म हो। त्यसैले हरवक्त, हरपल भगवान श्री कृष्णको गीत गाइरहने हो। गीता भनेकै भगवानको गीत हो। हरपल कर्म गर्ने, अर्पण गर्ने, हरपल हरेक चिजलाई प्रेम गर्ने, अर्पण गर्ने, हरपल भक्ति गर्ने अर्पण गर्ने, भक्तिपूर्ण त्याग नै श्रीमद्भगवाद्गीताको सार हो। गीताले देखाएको बाटो हिंड्नु नै गीता पढ्नु हो। सत्यको मार्ग हिंड्नु हो। सामान्यतया बिहान ब्रह्ममुहुर्तमा (४:३०मा) उठेर, नित्यकर्म, ध्यान-योग सकेर, बिहान ५ बजेदेखि ७ बजेसम्म गीता अध्ययन गर्नुभयो भने दिनभरीलाई उन्नत उर्जा प्राप्त हुन्छ। संस्कृत, नेपाली, हिन्दी, अंग्रेजी भाषामा गीता पढ्ने गरियो भने सबै भाषा, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, भूगोल, दर्शन, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र सबै विषयको भरपर्दो ज्ञान प्राप्त हुन्छ। केवल समयमा सुत्ने (९:३०) र समयमा उठ्ने (४:३०) बानी लगाउनु अनिवार्य हुन्छ। धेरै मान्छेमा यो समस्या हुन्छ र समयमा आफ्नो लक्ष प्राप्तगर्न सक्दैनन्। त्यसैले दुखी हुन्छन। पुजा-पाठ, श्राद्ध-हवन, विबाह-ब्रतबन्ध, अन्तिम संस्कार आदि जुनसुकै कर्मगर्दा गीतापाठ गर्नुपर्दछ।



कसरी पढ्ने श्रीमद्भगवद्गीता?

प्रकृतिको इच्छा विना केहि सम्भव छैन। आफूभित्रको परमात्माको अनुभूतिले आत्मालाई जागृत गराउनु पर्दछ। जागृत(आत्मा)पुरुषले प्रकृति(शरीर)लाई जगाउनु पर्दछ। पूर्णरुपले भगवद्गीतामा भक्तिभाव जगाउनु पर्दछ। सफा, शान्त, उज्यालो, पवित्र स्थानमा आसन स्थापना गरेर, स्नान गरेर, सुद्ध-सफा बस्त्र लगाएर, ध्यानमुद्रामा, सिधा बसेर, एक स्वासमा एक श्लोक भन्दै प्राणायाम शैलीमा, पूर्ण श्रद्धाले, मन मस्तिस्कलाई विश्वरूप भगवान नारायणमा समर्पित गरेर पढ्नु पर्दछ। सर्वधर्मान परित्याज्य मामेकम शरणं ब्रज – सबै आस्था विचार त्यागेर भगवानको शरणागती भएर, शब्द-शब्द केलाएर, बुझेर, सुद्धसंग निरन्तर अध्ययन गर्योभने, पढेको सबै सम्झिन्छ। गीता परिवारको अनुभव तथा विधिको आधारमा अध्याय १२ भक्तियोगबाट सुरुगर्दै अध्याय १५ पुरुषोत्तम योगहुँदै , र अध्याय १६ दैवाशुरसम्पदविभागयोग अध्ययन गर्दै अरु अध्याय अध्ययन गर्न सजिलो हुन्छ। दिनको दुईवटा श्लोक यादगर्ने वानी गरियोभने एकवर्षमा आरामले सबै अध्याय कण्ठस्थ हुन्छ।

कुन श्रीमद्भगवद्गीता पढ्ने?

विभिन्न प्रकाशनका आधारमा अहिलेसम्म लगभग एकअरव भगवद्गीताका पुस्तकहरु विक्री भैसकेका छन्। गीताप्रेस गोरखपुरले मात्रै लगभग ४० करोड गीताका पुस्तक प्रकाशन गरेर विक्रि गरिसकेको छ। विश्वभरि धेरै प्रकारका गीताका पुस्तक पाइन्छन। श्रीमद्भगवद्गीता यति सामान्य विषय होइन जो सुकैले वर्णन गर्न सकोस। भगवानको गीतकोअर्थ बुझ्न खुद नै भगवानको प्रियपात्र हुनुपर्छ। कसैको पनि तत्वविवेचना यथार्थको गहिराईमा पुग्न सकेको हुँदैन। सत्य लेख्न पहिले सत्य बुझ्नुपर्छ। सत्यको भक्तिमा पूर्णरुपले समाहित नभएसम्म श्रीमद्भगवद्गीताको छेउमासम्म पनि पुग्न सकिंदैन। त्यसैले १९२३मा झन्डै १०१ वर्ष अघि स्थापित गीताप्रेस गोरखपुरद्वारा प्रकाशित गीताका पुस्तक अरु लेखक तथा प्रकाशककाभन्दा उत्कृष्ट छन्। सफल-सिद्ध जीवनको मार्गदर्शन नै श्रीमद्भगवद्गीता हो। परमपुज्यगुरु गोविन्ददेव महाराजजीको छत्रछायामा गीता परिवारले अनलाइन पद्धतिमा निशुल्क विश्वका १५ भाषामा (नेपाली सहित) श्रीमद्भगवद्गीता सिकाइ रहेको छ । डा. आशु गोयल, तथा डा. संजय मालपाणी दाजुहरुको प्रतक्ष्य निगरानीमा विश्वभरीका सातलाख गीताअनुरागीहरुले अध्ययन गरिरहेका छन् । सारिका अग्रवाल दिदीको नेतृत्वमा “गीता परिवार नेपाल”ले विश्वभरी रहेका नेपालीभाषीहरुलाई गीता परिवारमा जोड्दै लागिरहेको छ। गीता परिवारले प्रकाशन गरेको “सरल पठनीय श्रीमद्भगवद्गीता” शुद्ध उच्चारण सिक्नको लागी अत्यन्तै उपयोगी छ। गीता परिवारका साधकहरुको सहयोगले यो पुस्तक विश्वभरी सजिलै उपलब्ध हुन्छ।

जय श्रीकृष्ण

जय श्रीपशुपतिनाथ

-डा. बिपी बडाल, नेपाल



என் வாழ்க்கையை மாற்றிய ஸ்ரீமத் பகவத் கீதா



நான் கடந்த 24 வருடங்களாக "ஸகஜ மார்க்கம் (HEARTFULNESS) என்னும் த்யான முறையை பின்பற்றி வருகிறேன் இது பதஞ்லிசயின் 'ராஜ யோகத்தின்" எளிதாக்கப் பட்ட முறை. இதன் தலைமை ஆஸ்ரமம் தெலுங்கானாவில் உள்ள ரங்கா ரெட்டி பகுதியில் கான்ஹா சாந்திவனம் என்பதாகும். கான்ஹா என்றால் அனைவரும் அறிந்ததே- சாக்ஷாத் ஸ்ரீ கிருஷ்ணர் தான்.

கடந்த வருடம் அங்கு சென்றிருந்தபோது "கீதோபதேசம்" என்றுமொரு நிகழ்ச்சி நடந்தது. அதன் பிறகு கீதையை கற்றுக்கொள்ள வேண்டும் என்ற ஆர்வம் வந்தது. மனதார ஸ்ரீ கிருஷ்ணரை எண்ணிப் பிரார்த்தித்தேன்.

பக்தனை ஒருபோதும் கைவிடாத

பகவான் என்னுடைய பிரார்த்தனையைக் கேட்டு விட்டார் போலும்.

ஒருநாள் வாட்ஸ்அப்பில் ஒரு செய்தி வந்தது. ஓர் இணைப்பை அனுப்பி அதில் சேருமாறு குறிப்பிடப்பட்டிருந்தது. எனக்கு அனுப்பியவர் யாரேன்று தெரியவில்லை.

பின்னர் தான் தெரிந்தது, அவர் எனக்கு அனுப்பவில்லை. வேறு ஒருவருக்கு அனுப்ப எண்ணி நம்பர் தவறாக பதிவு செய்துள்ளர். அதுதான் எனக்கு வந்தது. அதற்குள் நான் குரூப்பில் இணைந்து விட்டேன் கீதா என்னும் யாத்திரையில் ஆழ்ந்த பயணம் தொடங்கிவிட்டேன். அதன் பிறகு என்னுள் நிறைய மாற்றங்கள் ஏற்படுவதை உணர்ந்தேன். முக்கியமாக, எதுவாக இருந்தாலும், அதை அப்படியே ஏற்றுக்கொள்ளும் பக்குவம், மனதில் எப்போதும் ஒரு நிறைவை உணர ஆரம்பித்தேன், சில நேரங்களில் ஒரு இனம் புரியாத சந்தோஷம்,



ஆரோக்கியத்தில் B . P . யின் அளவு கூட நிதானமாவதை அறிந்தேன்.

சமீபத்தில் என் குடும்பத்தில் ஒரு முக்கிய நபரை [சகோதரர்] இழந்து தவித்த போது, கீதையின் நீதியுரை உதவியது.

"எல்லாம் காலத்தால் தீர்மானிக்கப்படுகிறது." அஹம் காலோஸ்மி" என்கிறார் ஸ்ரீ க்ருஷ்ணபகவான்.

ஆஸ்பத்திரியில் என் சகோதரருக்கு சிகிச்சை அளித்த மருத்துவர் பெயர் திரு. முரளி. செவிலியரின் பெயர் திரு. அருள்.

சகோதரர் அனுமதிக்கப்பட்டிருந்த வார்டின் பெயர் "யசோதா" .

காரியங்கள் அனைத்தும் செய்த புரோகிதரின் பெயர் திரு.கிருஷ்ண மூர்த்தி.

இப்படி எல்லா விதத்திலும் கிருஷ்ணரின் வியாபகம் தெரிந்தது.

ஆரம்பத்தில் நான் குறிப்பிட்டிருந்த எனக்கு தவறுதலாக செய்தி அனுப்பிய நபர் திருமதி மீரா கண்ணன்.

வயது முதிர்ந்த என் தகப்பனார் தினமும் சொல்கிறார் - "என்னால் எப்படி நிதானமாக இருக்கமுடிகிறது" என்று.

ஒன்று புரிகிறது நிச்சயமாக கீதை உரைத்த திருஷ்ணரின் அருளும்,பலமும் தான் என்பதிலய் எந்த விதமான ஐயமுமில்லை.

- ப்ருந்தா

ಗೀತಾಪರಿವಾರವೆಂಬ ಚೈತನ್ಯದ ಚಿಲುಮೆ



ಕಂಡ ಕಂಡವರೇನು ಬಲ್ಲರಿದನು ಉಂಡವನು ಕಂಡಿಹನು ಇದರ ಹದನು ಎಂಬ ಕವಿ ಚೆನ್ನವೀರ ಕಣವಿ ಅವರ ನುಡಿಯಂತೆ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಒಡನಾಟದಲ್ಲಿರುವವರಿಗಷ್ಟೇ ಗೊತ್ತು ಚೈತನ್ಯದ ಚಿಲುಮೆಯಂತಿರುವ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಅನುಪಮ ಸೌಂದರ್ಯ ಚೆಲುವು. ಮಂದಿರದಂತಿರುವ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಹಂದರದಲ್ಲಿ ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ ಆನ್ಲೈನ್ ತರಗತಿಗಳು ಗೀತೋಪದೇಶದ ಬಂಧುರವಾಗಿದೆ. ಗೀತೆಕಲಿಕೆಯ ಕ್ರಮವಂತು ಅತ್ಯಂತ ಸುಂದರವಾಗಿದೆ. ಪಂಚಮವೇದದ ಚೆಲುವಿನೊಡನೆ ಗೀತಾ ಸಾಧಕರ ಒಲವು ಹಾಗೂ ನಿಸ್ವಾರ್ಥ ಸೇವಿಗಳ ಬಲವು ಕೂಡಿ

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಗೆಲುವಿಗೆ ಪೂರಕವಾಗಿವೆ. ಸನಾತನ ಧರ್ಮದ ಸಾರಸರ್ವಸ್ವವೇ ಆಗಿರುವ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯಕಲಿಕೆಯು ವಿಶ್ವದಾದ್ಯಂತ ಪಸರಿಸುತ್ತಿದೆ. ಒಂದು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯದ ಸಾಧನೆಗೂ ಮೀರಿದ ಸಾಧನೆಯನ್ನು ಆನ್ಲೈನ್ ಮತ್ತು ಆಫ್ಲೈನ್ ತರಗತಿಗಳ ಮೂಲಕ ಗೀತಾ ಪರಿವಾರವು ಸಾಧಿಸಿ ತೋರಿಸುತ್ತಿದೆ. ಕೂತಲ್ಲೇ ತಮಗೆ ಸರಿಹೊಂದುವ ಸಮಯದಲ್ಲೇ ಆಬಾಲವೃದ್ಧರೆಲ್ಲರೂ ಇದರ ಲಾಭವನ್ನು ಪಡೆಯುವಂತಾಗಿದೆ. ಬಾಲಸಂಸ್ಕಾರ ತರಗತಿಗಳಂತೂ ಮುಂದಿನ ಪೀಳಿಗೆಗೆ ಉತ್ತಮ ಸಂಸ್ಕಾರವನ್ನು ನೀಡುತ್ತಿವೆ.

ಗೀತಾಪರಿವಾರದಲ್ಲಿ ವಿಶ್ವಾಸ, ನಂಬಿಕೆ, ಗೌರವ, ಮಮತೆ, ಮಾತೃವಾತ್ಸಲ್ಯ, ಸಹಕಾರ, ಸೌಜನ್ಯ, ಸಂಭ್ರಮ, ಮನದ ಮಾತುಗಳು ಎಲ್ಲವೂ ಅಡಕವಾಗಿವೆ.

ನಕಾರಾತ್ಮಕ ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ಲಯಗೊಳಿಸಿ ಸಕಾರಾತ್ಮಕ ಆಲೋಚನಾ ಪಥದಲ್ಲಿ ಮುನ್ನಡೆಸುವ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಅದರದ್ದಾಗಿದೆ. ಮಾನಸಿಕ ಆರೋಗ್ಯ, ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ ವಿಕಸನಕ್ಕೆ ಪೂರಕವಾಗಿದೆ.

ನಾನು ಮನಸ್ಸಿಲ್ಲದ ಮನಸ್ಸಿನಿಂದಲೇ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಸಂಪರ್ಕಕ್ಕೆ ಬಂದೆ. ನನಗಾದ ಅದರ ವಿರಾಟ್ ಸ್ವರೂಪ ದರ್ಶನ ನನ್ನನ್ನು ಮೂಕವಿಸ್ಮಯವನ್ನಾಗಿಸಿತು.

ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಕರೆ ಮಾಡುವ ವಿಭಾಗದಲ್ಲಿ ಸೇವಾನಿರತಳಾಗಿದ್ದ ನನ್ನ ಸೋದರಿ ಕುಸುಮ ಅಕ್ಕ ನನ್ನನ್ನು ಬಲವಂತವಾಗಿ ಗೀತಾ ಕಲಿಕೆಗೆ ಎಳೆದು ಕರೆತಂದು ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಆಸ್ವಾದಿಸಲು ಅನುವಾದಳು. ಸೀಮಾ ಅಕ್ಕ, ರಾಧಿಕಾರಾವ್ ಅಕ್ಕ, ರೂಪ ವಿ ಪೈ ಅಕ್ಕ ಈ ಮೂವರ ಕಾರ್ಯ ವೈಖರಿ, ಬದ್ಧತೆ, ಸಮಯ ಪ್ರಜ್ಞೆ, ತಾಳ್ಮೆಯನ್ನು ಕಂಡು ಬೆರಗಾದೆ. ನಾನು ಗೀತಾಪರಿವಾರದೊಡನಾಟವನ್ನು ಹೊಂದಬೇಕೆಂಬ ನಿರ್ಧಾರಕ್ಕೆ ಬಂದೆ. ನಿರಂತರವಾಗಿ ಸೇವಾನಿರತಳಾಗಬೇಕೆಂಬ ಉತ್ಕಟ ಆಕಾಂಕ್ಷೆಗೆ ಒಳಗಾದೆ. ಕೃಷ್ಣನ ಕೃಪೆಯಿಂದ ಒಂದೇ ವಾರದೊಳಗೆ ಟೆಕ್ ತರಬೇತಿಯನ್ನು ಪಡೆದೆ. ಮೊದಲ ಬ್ಯಾಚ್ ನಲ್ಲೇ ಪೂಜಾ ಅಕ್ಕನೊಡನೆ ಸೇವೆಕೊಡುವ ಸೌಭಾಗ್ಯ ನನ್ನದಾಯಿತು. ಯಾವ ಜನ್ಮದ ಸುಕೃತವೋ, ಯಾವ ಪುಣ್ಯದ ಫಲವೋ,

ಕೃಷ್ಣ ಪರಮಾತ್ಮನ ಒಲವೋ,

ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಒಡನಾಟದಿಂದ ನಿರ್ದಿಷ್ಟ ಸಮಯಕ್ಕೆ ನಿತ್ಯ ಗೀತಾಪಾಠ, ಉತ್ಸಾಹಿ ಗೀತಾ ಸಾಧಕರ ಕೂಟದ ದರ್ಶನ,

ಸುಂದರ ಅನುಪಠಣದ ನೋಟದ ಸೌಭಾಗ್ಯ ನನಗೆ ದೊರಕಿತು. ಸ್ವರಾಘಾತ, ಅಲ್ಪಪ್ರಾಣ, ಮಹಾಪ್ರಾಣದೆಡೆಗೆ ಒತ್ತು ನೀಡುತ್ತಾ, ಪರಿಶುದ್ಧ ಸ್ಪಷ್ಟ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯ ತರಬೇತಿಯೊಡನೆ ಸಾಮೂಹಿಕ ಪಠಣದ ಅನುರಣಗೊಳ್ಳುವ ಪರಿ ಬೆರಗಾಗುವಂತೆ ಮಾಡಿತು. ಪ್ರತಿಸ್ತರದಲ್ಲೂ ಪ್ರಾರಂಭೋತ್ಸವ,

ಪರಿಚಯ ಸತ್ರದೊಂದಿಗೆ ಸಹಪಾಠಿಗಳ ಸ್ನೇಹ ಬೆಸುಗೆಯ ಸಿಂಚನ, ವಿವೇಚನ ಸತ್ರಗಳಿಂದ ಜ್ಞಾನ ಸಂಚಯ, ಆನಂದೋತ್ಸವದಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಭೆಗಳ ಅನಾವರಣ
ಅ



ಚ್ಚರಿಯನ್ನುಂಟುಮಾಡಿತು. ನಿತ್ಯ ಗೀತಾಮೃತ ಪಾನದೊಂದಿಗೆ ಗೀತಾಕಲಿಕೆಯ ಈ ಯಾನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ ವಿಕಸನದ ತಾಣದಂತೆ ಕಂಡಿತು. ಪ್ರತಿ ನಿತ್ಯವೂ ಸಜ್ಜನರೊಡನಾಟದ ಸೌಭಾಗ್ಯ ನನಗೆ ದೊರಕಿತು.

ಕಿಂಮಧುನಾ ಕಿಂ ವಿಧಯನಾ ಕಿಂ ಸುಧಾಯಾ ಕಿಂ ಚವಸುಧಯಾಖಿಲಯಾ। ಯದಿ ಹೃದಯಹಾರಿಚರಿತಃ

ಇದಕ್ಕಿಂತ ಅತಿಶಯವಾದುದು ಯಾವುದು?

ಸಜ್ಜನರ ಸಾಮೀಪ್ಯವೇ ನಮಗೆ ಹೆಚ್ಚಿನ ಸುಖವನ್ನೂ ನೆಮ್ಮದಿಯನ್ನೂ ತೃಪ್ತಿಯನ್ನೂ ಆಹ್ಲಾದವನ್ನೂ ನೀಡುವಂಥದ್ದು. ಸರ್ವಜ್ಞ ಹೇಳುವಂತೆ ಸಜ್ಜನರ ಸಂಗವದು ಹೆಜ್ಜೇನ ಸವಿದಂತೆ, ದುರ್ಜನರ ಸಂಗ ಬಚ್ಚಲ ಕೊಚ್ಚೆಯಂತಿಹದು ಸರ್ವಜ್ಞ॥

ಪ್ರತಿ ನಿತ್ಯ ತೆರೆಯ ಮೇಲೆ ನೋಡುತ್ತಿದ್ದ ಪ್ರಶಿಕ್ಷರು ತೆರೆಯ ಹಿಂದೆ ಸಂಪರ್ಕಿಸುತ್ತಿದ್ದ ತಾಂತ್ರಿಕ ಸಹಾಯಕರು, ಗುಂಪು ಸಂಯೋಜಕರು, ಸಮೂಹ ಸಂಯೋಜಕರುಗಳನ್ನು ನೇರವಾಗಿ ನೋಡುವ ಹಂಬಲ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರಲ್ಲೂ ಮನೆ ಮಾಡಿತ್ತು.

ಬೆಂಗಳೂರು ನಿವಾಸಿಯಾದ ನಾನು ಮುಂಬೈಗೆ ಬರುವ ವಿಚಾರ ತಿಳಿದೊಡನೆಯೇ ಹಲವರು ತಮ್ಮ ಮನೆಗೆ ನನ್ನನ್ನು ಆಹ್ವಾನಿಸಿದರು. ಆಗ ತಟ್ಟನೆ ನನ್ನ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ಬಂದದ್ದು ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರದಲ್ಲಿ ನೆಲೆಸಿರುವ ಕನ್ನಡ ಗೀತಾಪರಿವಾರದವರೆಲ್ಲಾ ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಪ್ರದೇಶ ಒಂದರಲ್ಲಿ ಸೇರಿ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣವನ್ನು ಮಾಡುವುದರಿಂದ ಪರಸ್ಪರ ಭೇಟಿ ಮಾಡುವುದರೊಂದಿಗೆ ಗೀತಾಪರಿವಾರದವರು ನಡೆಸುತ್ತಿರುವ ಆನ್ಲೈನ್ ಆಫ್ಲೈನ್ ತರಗತಿಗಳ ಪ್ರಚಾರವೂ ಆದಂತೆ ಆಗುತ್ತದೆ ಎಂಬ ಆಲೋಚನೆ. ಶ್ರುತಿ ನಾಯಕ್ ಅಕ್ಕನೊಂದಿಗೆ ಈ ಆಲೋಚನೆಯನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಂಡಾಗ ಮೇಲಿನವರ ಒಪ್ಪಿಗೆಯನ್ನು ಪಡೆದು ಸಂತಸದಿಂದ

ಸಮ್ಮತಿಸಿದರು. ಉಮಾ ರಾಮರಾವ್ ಅಕ್ಕ ಪೂರ್ಣ ಸಹಕಾರ ನೀಡಿದರು. ವಾಟ್ಸಪ್ ಗುಂಪಿನ ಸಹಕಾರದೊಂದಿಗೆ ಅಧಿಕ ಶ್ರಾವಣಮಾಸ ಶನಿವಾರದ ದಿನ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಗಳನ್ನು ಆಯೋಜಿಸಲಾಯಿತು. ಎಲ್ಲರ ಸಮಯೋಚಿತ ಸಲಹೆಗಳೊಂದಿಗೆ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣ ಮತ್ತು ಹನುಮಾನ ಚಾಲೀಸ ಪಠಣವು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ನೆರವೇರಿತು. ಗೀತಾವ್ರತಿಗಳಾದ ಸುರೇಖಾ ಕಾಮತ್ ಅಕ್ಕ ಮತ್ತು ಶ್ರುತಿ ನಾಯಕ್ ಅಕ್ಕ ಅವರಿಗೆ ಶಾಲು ಹೊದಿಸಿ ಸನ್ಮಾನಿಸಲಾಯಿತು. ಇಬ್ಬರೂ ತಮ್ಮ ತಮ್ಮ ಅನುಭವವನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಂಡರು. ಅವರ ಮಾತುಗಳು ಉಳಿದವರಿಗೆ ಸ್ಫೂರ್ತಿಯನ್ನು ನೀಡಿತು. ಅಂದು ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಭಾಗವಹಿಸಿದ 85 ವರ್ಷ ಹರಯದ ಅತ್ಯುತ್ಸಾಹಿ ರಾಮಚಂದ್ರ ಕುಲಕರ್ಣಿ ಅಣ್ಣ ಇಂದು ಗೀತಾವ್ರತಿಯಾಗಿರುವುದು ಹರ್ಷದಾಯಕ ಸಂಗತಿಯಾಗಿದೆ. ಗೀತಾಪರಿವಾದದ ಸಂಪರ್ಕದಲ್ಲಿರುವ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರೂ ಗೀತಾವ್ರತಿಗಳಾಗಬೇಕೆಂಬುದೇ ಪರಮ ಪೂಜ್ಯ ಸ್ವಾಮೀಜಿಯವರ ಇಂಗಿತವಾಗಿದೆ.

ಬೆಂಗಳೂರಿಗೆ ಮರಳಿದ ಬಳಿಕ ಅನುಭವಿ ಪ್ರಶಿಕ್ಷಕರ ಸಲಹೆ ಮತ್ತು ಸಹಕಾರದೊಂದಿಗೆ ಅಜ ಏಕಾದಶಿಯೊಂದು ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಮಲ್ಲೇಶ್ವರಂನಲ್ಲಿರುವ ಶಿರಡಿ ಸಾಯಿಬಾಬಾ ಮಂದಿರದಲ್ಲಿ ಗೀತಾಪಾರಾಯಣವನ್ನು ಏರ್ಪಡಿಸಲಾಗಿತ್ತು. 82 ಜನ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳು ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾದರು. ಸಾಯಿಮಂದಿರದವರ ಸಹಕಾರದಿಂದ ಹೋಳಿಗೆ ಪಾಯಿಸದ ಭೋಜನ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನೂ ಮಾಡಲಾಗಿತ್ತು. ಅದೊಂದು ಅವಿಸ್ಮರಣೀಯ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮವಾಗಿತ್ತು.



ಭಗವಂತನ ಕೃಪೆಯಿಂದ ಬೆಂಗಳೂರು ಸಮೀಪದ ಬಾಗೇಪಲ್ಲಿಯ ಸತ್ಯ ಸಾಯಿ ಸ್ಕೂಲ್ ಮಕ್ಕಳಿಗೆ ಸಂಜೆ 3:50ಕ್ಕೆ ಭಗವದ್ಗೀತೆ L 2 ಕ್ಲಾಸ್ ಹೋಸ್ಟ್ ಮಾಡುವ ಸೌಭಾಗ್ಯ ನನ್ನದಾಯಿತು. ನಮ್ಮ ದೇಶದ ಪ್ರತಿ ಶಾಲೆಯು ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಈ ಸೌಲಭ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಳ್ಳುವಂತಾದರೆ ಭಾರತೀಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿ, ಸಂಸ್ಕಾರ ಚಿರಸ್ಥಾಯಿ ಆಗುವುದರಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಸಂದೇಹವೂ ಇಲ್ಲ. ಭಾರತೀಯರಾಗಿ ಜನ್ಮತಾಳಿದ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರೂ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿಯಲೇ ಬೇಕು. ಭಗವಂತನ ನುಡಿಗಳೇ ಆಗಿರುವ ಭಗವದ್ಗೀತೆ ಅತಿಮಧುರ ಮಾತ್ರವಲ್ಲ

ಆತ್ಮೋದ್ಧಾರದ ಪರಮತತ್ತ್ವದ ವಿಚಾರ.

ಅಷ್ಟಾದಶಯೋಗದ ಚಲ್ವಿನ ಹಂದರವಾದ ಗೀತೆಯನ್ನು ಶುದ್ಧ ಹಾಗೂ ಸ್ಪಷ್ಟ ಉಚ್ಚಾರಣೆಯೊಂದಿಗೆ ವಿಶ್ವದಾದ್ಯಂತ ಗೀತಾಪರಿವಾರ ಪ್ರಚಾರ ಮಾಡುತ್ತಿದೆ.

ಶ್ರೀಮದ್ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಪ್ರತಿ ನುಡಿಯೂ ಸತ್ಯ

ಬಿಡದೆ ಎಲ್ಲರೂ ಪಠಿಸಲೇ ಬೇಕು ನಿತ್ಯ. ದಿಟದಿ ಅಧಿಕವಾಗುವುದಾಗ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ. ಮುಕ್ತಿಪಥಕಿದು ಹೆದ್ದಾರಿಯೆಂಬುದೇ ತಥ್ಯ. ಈ ಸಲುವಾಗಿಯೇ ಗೀತಾಪರಿವಾರವೂ ನಿತ್ಯ ಗೀತಾಪಠಣ, ವಾರಕ್ಕೊಮ್ಮೆ ಸಂಪೂರ್ಣ ಗೀತಾ ಪಾರಾಯಣ, ಗೀತಾ ಚಿಂತನಿಕ,

ಪ್ರತಿ ತಿಂಗಳೂ ಏಕಾದಶಿಯ ದಿನದಂದು ದೇಶದ ಎಲ್ಲೆಡೆಯೂ ಆಫ್ಲೈನ್ ಮತ್ತು ಆನ್ಲೈನ್ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯ ಸಂಪೂರ್ಣ ಪಾರಾಯಣ, ವಿವಿಧ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಗೀತಾಕಂಠಸ್ಪೀಕರಣದ ಪರೀಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ಆಯೋಜಿಸಿದೆ. ಭಗವದ್ಗೀತಾ ಕಲಿಕೆಗೆ ಪೂರಕವಾಗಿ ಪ್ರತಿ ಸ್ತರದಲ್ಲೂ ಏರ್ಪಡಿಸಿರುವ ವಿಶೇಷ ವ್ಯಾಕರಣ ಉಪನ್ಯಾಸವಂತೂ ಸಾಧಕರ ಜ್ಞಾನವನ್ನೂ ಭಾಷಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವನನ್ನೂ ಹೆಚ್ಚಿಸಲು ಪೂರಕವಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀವತ್ಸ ಜೋಶಿ ಅಣ್ಣ ಮತ್ತು ಶ್ರುತಿನಾಯಕ್ ಅಕ್ಕನೊಂದಿಗೆ ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮದಲ್ಲಿ ಸಕ್ರಿಯವಾಗಿ ಭಾಗಿಯಾಗುವ ಸದವಕಾಶವನ್ನು ಕೃಷ್ಣ ಪರಮಾತ್ಮ ನನಗೆ ಒದಗಿಸಿರುವುದು ಅತ್ಯಂತ ಸಂತಸವನ್ನು ನೀಡಿದೆ.

ವಿಶೇಷ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ವತಿಯಿಂದ ಆಯೋಜಿಸುವ ಸ್ನೇಹ ಮಿಲನ, ಗೀತಾಭಕ್ತಿ ಅಮೃತ ಮಹೋತ್ಸವದ





ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಗಳ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯಂತೂ ಗೀತಾಸೇವಿಗಳ ಕಾರ್ಯನಿಷ್ಠೆ, ಬದ್ಧತೆ, ಸಾಮರ್ಥ್ಯಕ್ಕೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿವೆ.

ಶ್ರುತಿ ನಾಯಕ್ ಅಕ್ಕನ ದೆಸೆಯಿಂದ ಪುಣೆಯ ಸಮೀಪದಲ್ಲಿರುವ ಆಳಂದಿಯಲ್ಲಿ ಏರ್ಪಡಿಸಲಾಗಿದ್ದ ಗೀತಾಭಕ್ತಿ ಅಮೃತ ಮಹೋತ್ಸವ ಸಿದ್ಧತೆಗೆ ನಾನು ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿದ್ದೆ. ಅಲ್ಲಿ ನನಗಾದ ಅನುಭವವನ್ನು ನಿಮ್ಮೊಂದಿಗೆ ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳಲು ಇಚ್ಛಿಸುತ್ತೇನೆ.

ಗೀತಾಭಕ್ತಿ ಅಮೃತ ಮಹೋತ್ಸವ ಸಿದ್ಧತೆ ಭರದಿಂದ ಸಾಗಿತ್ತು.

ಸ್ವಚ್ಛತೆ, ಸ್ಪಷ್ಟತೆ ಉತ್ಸಾಹಗಳನು ಪ್ರತಿನಿಧಿಸಿತ್ತು.

ನಿಸ್ವಾರ್ಥ ಸೇವಿಗಳ ಶಕ್ತಿ ಸಾಮರ್ಥ್ಯ ಪ್ರತಿಫಲಿಸಿತ್ತು.

ಪಾವಿತ್ರತೆಯ ದರ್ಶನ ಭಾಗ್ಯ ಗೀತಾ ಸೇವಿಗಳಿಗೆ ದೊರಕಿತ್ತು.

ಇಂದ್ರಾಣಿಯಂಗಳಕೆ ಇಂದ್ರಲೋಕ ಬಂದಿಳಿದಿತ್ತು.

ಬೃಹತ್ ಭವ್ಯಮಂಟಪವು ನಿರ್ಮಾಣವಾಗಿತ್ತು.

ಪಟ್ಟಾಭಿಸೀತಾರಾಮರ ಸುಂದರ ಮಂಟಪ ಮುಂದಿತ್ತು.

ಅಂಗಳದ ತುಂಬೆಲ್ಲ ರಂಗೋಲಿ ಕಂಗೊಳಿಸಿತ್ತು.

ಋಷಿಮಹರ್ಷಿಗಳಾಶ್ರಮಗಳೇ ಧರೆಗೆ

ಇಳಿದಿತ್ತು

ತರುಪುಷ್ಪಾಲಂಕೃತದ ದಿವ್ಯ ಮಂಟಪ ಮನಸೆಳೆದಿತ್ತು

ನವಯಜ್ಞಕುಂಡದ ನವಕುಟೀರ ದಿವ್ಯವಾಗಿತ್ತು

ವೇದಮಂತ್ರಗಳ ಪಠಣ ನಿರಂತರ ಮಾರ್ದನಿಸುತ್ತಿತ್ತು

ಬಾಲಛಾತ್ರರಿಂದ ಪಾರಾಯಣ ನಡೆದಿತ್ತು

ಭಕ್ತಸ್ತೋಮ ಅಳಂದಿಗೆ ಹರಿದು ಬಂದಿತ್ತು

ಆಳಂದಿಯ ಧರ್ಮಶಾಲೆಗಳೆಲ್ಲ ತುಂಬಿ ತುಳುಕಿತ್ತು

ಪ್ರವಾಸಿ ತಂಗುದಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ಥಳವಿಲ್ಲವಾಗಿತ್ತು

ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಗಳ ತಾಲೀಮು ಚಂದದಿ ನಡೆದಿತ್ತು

ಊಟೋಪಚಾರಗಳು ಸುವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿತ್ತು

ದೇಶ ವಿದೇಶಗಳಿಂದ ಸೇವಿಗಳ ಪಡೆಯೇ ಬಂದಿತ್ತು

ಗೀತಾಪರಿವಾರದ ಶಿಸ್ತು ಸಂಯಮ ಎಲ್ಲೆಡೆಯು ನೆಲೆಸಿತ್ತು.

ಜ್ಞಾನೇಶ್ವರ ಸಾನಿಧ್ಯದಲಿ ಸಾರ್ಥ ಜ್ಞಾನೇಶ್ವರೀ ಅನುಗ್ರಹ ನಮಗಾಯ್ತು

ಸಿದ್ಧಪುರುಷರ ಸಿದ್ಧೇಶ್ವರ ಪೀಠದರ್ಶನ ಸೌಭಾಗ್ಯ ನಮಗಿತ್ತು

ವೇದಶ್ರೀ ತಪೋವನದ ಪ್ರಶಾಂತ ಪರಿಸರದಿ ಮನಪುಳಕಗೊಂಡಿತ್ತು

ಗುರುಗೋವಿಂದ ಜೀ ಮಹಾರಾಜರ ಆಶೀರ್ವಾದ ಭಾಗ್ಯ ನಮಗಿತ್ತು

ಭೋಜನ ವಿತರಿಸುವ ಸೌಭಾಗ್ಯ ನಮಗೆಲ್ಲ ದೊರಕಿತ್ತು

ಗೀತಾಪರಿವಾರದವರ ಆತ್ಮೀಯತೆಯ ಪ್ರೇಮ ಸಿಂಚನವಾಗಿತ್ತು

ನಿಸ್ವಾರ್ಥಸೇವೆಯ ಪ್ರತಿಫಲದ ಅನುಭವ ಎಲ್ಲರಿಗೂ ಆಗಿತ್ತು

ಸವಿನೆನಪುಗಳ ಬುತ್ತಿಯನೇ ಹೊತ್ತು ಮನೆಯೆಡೆಗೆ ಪ್ರಯಾಣ ಬೆಳೆದಿತ್ತು.

ಪರಮ ಪೂಜ್ಯ ಸಂತ ಸ್ವಾಮಿ ಶ್ರೀ ಗೋವಿಂದ ದೇವ ಗಿರಿಜೀ ಮಹಾರಾಜ್ ಅವರ ನುಡಿಯಂತೆ ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿಯೋಣ, ಕಲಿಸೋಣ, ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳೋಣ. ಮನೆ ಮನೆಯಲ್ಲೂ ಗೀತೆ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರ ಕರದಲ್ಲೂ ಮನದಲ್ಲೂ ಗೀತೆ ನೆಲೆಸುವಂತೆ ಮಾಡೋಣ.

- ಪದ್ಮ ಶ್ರೀಧರ, ಬೆಂಗಳೂರು



ଗୀତା ଏକ ସୁଖଦ ଅନୁଭୂତି

୨୦୨୦ ମସିହା, ଡିସେମ୍ବର ମାସ, କରୋନା ର ଭୟାବହତା ସାରା ବିଶ୍ୱକୁ ଗ୍ରାସ କରିଥାଏ । କରୋନା ର କରାଳ ଦୃଶ୍ୟ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗ ରେ ଦୃଶ୍ୟମାନ ହେଉଥାଏ । ଏପରି ଏକ ଘଡ଼ି ସନ୍ଧି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଆବାଳବୃଦ୍ଧବନିତା ଗୃହ ବନ୍ଦୀ ହୋଇ ଏକ ପ୍ରକାର ମାନସିକ ଅବସାଦ ର ଶିକାର ହୋଇଥାନ୍ତି। ଏପରି ସମୟରେ ଅନ୍ଲାଇନ୍ ସତ୍ ସଙ୍ଗ ର ଅବସର ସନ୍ଧାନ କରୁକରୁ ହଠାତ୍ ହ୍ୱାଟ୍‌ସ୍‌ଆପ୍ ରେ ଆସିଥିବା ଏକ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଗ୍ରୁପ୍ ରୁ ଗୀତା ପରିବାର ଦ୍ୱାରା ଆୟୋଜିତ ହେଉଥିବା ଏକ ଅନ୍ଲାଇନ୍ ଗୀତା ର ଶୁଦ୍ଧ ଉଚ୍ଚାରଣ କକ୍ଷା ସମ୍ପର୍କିତ ଏକ ଆଡଭର୍ଟାଇଜମେଣ୍ଟ ଟିଏ ମୋର ଦୃଷ୍ଟିଗୋଚର ହୁଏ । ବାରମ୍ବାର ମେସେଜ୍ ଟିକୁ ମୁଁ ଅଣଦେଖା କରୁଥାଏ । ହଠାତ୍ ଦିନେ ଭଲଭାବରେ ମେସେଜ୍ ଟିକୁ ପଢେ ଓ ସେଥିରେ ଥିବା ସ୍ୱାମୀ ବିବେକାନନ୍ଦ ଙ୍କ ଫଟୋ ଟି ମୋତେ ଆକୃଷ୍ଟ କରେ । ଆଉ କିଛି ନ ଭାବି ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଲିଙ୍କ୍ ଟିକୁ ଖୋଲି ନିଜ ନାମ ପଞ୍ଜିକରଣ କରାଇନିଏ। ତତ୍ ପରେ ସ୍ତର ଅନୁଯାୟୀ ପ୍ରଥମ(L1) କକ୍ଷା ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୁଏ । ପିଲାଟି ଦିନରୁ ପ୍ରତି ଦିନ ଅଭ୍ୟାସ କରିଆସୁଥିବା ଗୀତା ର ଶ୍ଲୋକ ଗୁଡ଼ିକର ଶୁଦ୍ଧ ଉଚ୍ଚାରଣ ଶିଖିବାର ଏହି ସୁବର୍ଣ୍ଣ ସୁଯୋଗ ଟିକୁ ହାତଛଡ଼ା କରିବାର ଇଚ୍ଛା ହୁଏନି। ତେଣୁ ପ୍ରତିଦିନ କକ୍ଷା ରେ ଯୋଗ ଦେଇ ମନଯୋଗ ସହକାରେ ଶିକ୍ଷା କରେ ।

ଅତ୍ୟନ୍ତ ହୃଦୟସ୍ପର୍ଶୀ, ଉତ୍ସାହପ୍ରଦ ଓ ଚମତ୍କାର ଶୈକ୍ଷିକ ବାତାବରଣ ମଧ୍ୟରେ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସ୍ତରରେ ଯୋଗ ଦିଏ । ଟ୍ରେନର୍ ଦିଦି ଓ ଭାଇଙ୍କର ଶିଖାଇବାର ଚମତ୍କାର ଶୈଳୀ ମୋତେ ମନ୍ତ୍ରମୁଗ୍ଧ କରୁଥାଏ । ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ତର(L2) ର ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ଥିବା ସମୟରେ ଗ୍ରୁପ୍ ର ଟ୍ରେନର୍ ଶ୍ରୀମତୀ ମିନଲ୍ ଶାରଦା ଓ TA ଦିଦି ଙ୍କର କେଇପଦ ଉତ୍ସାହପ୍ରଦ ଓ ପ୍ରେରଣାପ୍ରଦ କଥା ମୋତେ ଏକ ଟ୍ରେନର୍ ରୂପେ ଗଢିତୋଳିବାରେ ସହାୟକ ହୁଏ । ଏପରି ଭାବେ ଜଣେ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ ତଥା ଟ୍ରେନର୍ ରୂପେ ଗୀତା ଯାତ୍ରା ଅତୀବ ମନୋରମ ଓ ଅନୁଭୂତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ବାତାବରଣ ସୃଷ୍ଟି କରେ । ପରମପୂଜ୍ୟ ଗୁରୁଦେବ ଓ ଭଗବାନ ଙ୍କ ଅପାର କରୁଣା ରୁ ଏହି ଯାତ୍ରା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଦାନ

କରୁଛି । ବର୍ତ୍ତମାନ ଅନେକ ଶିକ୍ଷାର୍ଥୀ, ଅନୁଭୂତି ସମ୍ପନ୍ନ ଟ୍ରେନର ତଥା ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ସେବୀ ମାନଙ୍କୁ ନେଇ ଓଡ଼ିଶା ଗୀତା ପରିବାର ର କଳେବର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଛି। ଓଡ଼ିଶା ଗୀତା ମୈତ୍ରୀ ମିଳନ ଉତ୍ସବରେ ପରିବାରର ଅନେକ ସିନିୟର୍ କାର୍ଯ୍ୟକର୍ତ୍ତା ଙ୍କୁ ସାକ୍ଷାତ କରିବା ତଥା ଅମୂଲ୍ୟ ଗୀତା ଉପଦେଶ ସାଉଁଟି ବାର ନିଆରା ଅନୁଭୂତି ଚିରସ୍ମରଣୀୟ ହୋଇ ରହିଥିବ।

- Sonali Pati, Odisa



অন্ধকার থেকে আলোর পথে যাত্রা - আমার জীবনে ভগবদ্গীতার গভীর প্রভাব

আমরা ছয় বন্ধু প্রায় পঞ্চাশ বছর আগে কলকাতার একটি স্কুলে একসাথে পড়াশুনা করেছিলাম।

এর পর জীবনের দায়িত্ব আর কর্তব্যপূরণ করার দৌড়ে আমরা পরস্পর থেকে অনেক দূরে চলে গিয়েছিলাম। কিন্তু এখন জীবনের অপরাহ্নে এসে, ঈশ্বরের আশীর্বাদে আর সোশ্যাল মিডিয়ার ইতিবাচক প্রভাবে, আমরা আবার একত্রিত হতে পেরেছি।

আমরা মাসে অন্তত একবার একটি জুম কল করি। এবং সেই আড্ডায় আমরা আমাদের জীবনের ছোট্ট আনন্দ, বড় হতাশা, বিশাল দুঃখ এবং অপূর্ণ ইচ্ছার দীর্ঘ তালিকা একে ওপরের সাথে শেয়ার করি।

এমনই এক আড্ডায়, যখন আমরা বিভিন্ন বিষয়ে আলোচনা করছিলাম, তখন এক বন্ধু বলল যে এখন যখন ওর হাতে কিছু সময়ে আছে তখন ও ওর এক অপূর্ণ ইচ্ছা, সংস্কৃত ভাষা শিখতে চায়। আমাদের আরেক বন্ধু, যার আধ্যাতিক বিষয়ে আগ্রহ আছে, বললো গত পঁয়ত্রিশ বছর মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রে বসবাস করা সত্ত্বেও সনাতন হিন্দু ধর্মের দর্শন বোঝার জন্য ও গীতা পরিবারের ক্লাসে ভর্তি হয়েছে। তৎক্ষণাৎ ও আমাদের হোয়াটসঅ্যাপে রেজিস্ট্রেশন লিঙ্কটি পাঠায়ে হাসতে হাসতে বললো, 'দেখ নাস্তিকের দল, তোদের কোনো কাজে আসে কি না'।

আমি যেই হেতু তথ্যপ্রযুক্তির দুনিয়ার সাথে যুক্ত, আমি অবিলম্বে গীতা পরিবারের অ্যাপটি ডাউনলোড করি এবং গীতা শেখার কোনো ইচ্ছার না থাকা সত্ত্বেও কৌতূহল বসত নভেম্বর-২৩ এর L-1 ব্যাচে রেজিস্টার করি। কৌতূহলই আমাকে উদ্ঘাটন সমারোহে টেনে নিয়ে গিয়েছিলো। এখন ভাবি সেটা কৌতূহল ছিল না কৌতূহলের রূপে ঈশ্বর ছিলেন।

যে সুচারু এবং মর্যাদাপূর্ণ ভাবে অনুষ্ঠানটি পরিচালিত হয়েছিল তা আমাকে অবাক করেছিল। আমি ভেবেছিলাম এটি একধরনের ধর্মীয় অনুষ্ঠান হবে। কিন্তু স্বামী গোবিন্দ দেব গিরি জি মহারাজ জীবনযাত্রার মান উন্নত করার বিষয়ে বললেন। আশু গোয়ালজি দাদা আমাদের অবগত করালেন কিভাবে তেরোটি ভাষায় প্রায় চব্বিশ ঘন্টা ধরে গীতা শিক্ষা বিস্তারের এই বিশাল কর্মযজ্ঞ শুধুমাত্র উৎসাহী স্বেচ্ছাসেবকদের প্রচেষ্টার মাধ্যমে পরিচালিত হয়। এটা শুনে আমি তাজ্জব হয়েছিলাম বললেও কম হবে।

দেরীতে ঘুমানো আর দেরিতে ওঠার অভ্যাস এর কারণে, পরের দিন আমি সকাল সাতটায় পরিকিমরি করে ঘুম থেকে উঠে ক্লাসে লগিন করলাম। এখন নিজেই অবাক হয়ে যাই যখন আমি আমার গ্রুপ কোঅর্ডিনেটর সেবা প্রদানের জন্য অতি উৎফুল্ল ভাবে সকাল পাঁচটায় উঠে পড়ি।

যাইহোক, আমি নিশ্চিত নই কেন বা কিভাবে, ক্লাস শুরু হওয়ার প্রথম কয়েক মিনিটের মধ্যে, প্রশিক্ষক দাদা যখন প্রারম্ভিক প্রার্থনা শুরু করলেন, আমি হঠাৎ একটি অপূর্ব ইতিবাচক অনুভূতিতে পরিপূর্ণ হয়ে উঠেছিলাম। সে আরেক ব্যাপার যে 'কাউসাচাণূর'

মূর্ধন্য উচ্চারণ করতে আমার প্রায় এক মাস লেগে গিয়েছিলো।

আমার সেই ক্লাসে দশ এগারো বছরের একটি ছোট্ট মেয়ে ছিল। আমি খুব অবাক হয়ে ছিলাম

যখন আমাদের প্রশিক্ষক দাদা ক্লাস চলাকালীন তাকে 'দিদি' বলে সম্বোধন করলেন। আমার কাছে সেই সময়ে তা খুব অদ্ভুত লেগেছিলো। পরে বুঝতে পেরেছিলাম যে এটি বয়স নির্বিশেষে ব্যক্তির প্রতি সম্মানের জন্য বলা হয়েছিল। খুব ভালো লেগেছিলো সেটা।

ইতিবাচকতার অনুভূতি ছাড়াও, আমার জীবনধারায় প্রায় আমার অজান্তেই ছোট্ট ছোট্ট পরিবর্তন ঘটছিল। যেমন আগে বললাম যে আমি ভোর বেলা উঠতে শুরু করি, একাদশীর উপবাস রাখা শুরু করি এবং আমার খাদ্যাভ্যাসেও পরিবর্তন লক্ষ্য করি।

এই সব ছোট ছোট ঘটনার দরুন আমি আমার ভেতরে এক ধরনের পরিবর্তন অনুভব করতে পারছিলাম।

কিন্তু আমার জীবনে সবচেয়ে বড় পরিবর্তন যেটা হলো, তা হলো, আমি ধীরে ধীরে আমার ক্ষোভ, হতাশা, জীবন যুদ্ধে এক পরাজিত সৈনিক হবার অনুভূতি এবং অজানা ভবিষ্যতের ভয় থেকে বেরোতে শুরু করলাম। আমার জীবনে যা মন্দ, যা দুঃখজনক, তার জন্য দায়ী অন্য কেউ, এমন এক চিন্তাধারা থেকে বেরিয়ে আমার ভাগ্যফলের দায়িত্ব নিতে শিখলাম এর ফলে আমার কাঁধ থেকে যেন এক পাহাড়প্রমাণ বিমর্ষতার বোঝা নেমে গেলো আর আমি নিরানন্দ থেকে আনন্দের পথে চলতে শুরু করলাম।

আমি বুঝতে শিখছিলাম আমার জীবন কতটা মূল্যবান এবং সুন্দর কিন্তু আমি কীভাবে তাকে এক বিমর্ষতা ঘূর্ণিপাকে ফেলে দিয়েছিলাম। এত দিন আমার জীবনের অসংখ্য আশীর্বাদ (ভাল শিক্ষা, স্নেহময় মা বাবা, সফল কর্মজীবন, প্রেমময় সন্তান) কে ভুলে আমি শুধু গুটিকতক মন্দ ঘটনাকে অযথা গুরুত্ব দিচ্ছিলাম।

সমস্ত বিবেচনের মাধ্যমে আমি উপলব্ধি করতে পেরেছিলাম যে আমার আজকের কারণ আমি গতকাল যা করেছি এবং আমি আজ যা করছি তা আমার আগামীকালকে প্রভাবিত করবে।

ভগবদ্গীতার দ্বিতীয় অধ্যায়ের সাতচল্লিশতম শ্লোকে বলা হয়েছে

কর্ম্মণ্য-ইবাদিকরাস তে মা ফলেশু কদাচন

মা কর্ম-ফল-হেতুর ভূর মা তে সংগো 'স্তবকর্মাণী

অর্থাৎ নির্ধারিত দায়িত্ব পালন করার অধিকার আমাদের আছে, কিন্তু আমরা সেই কর্মের ফল পাওয়ার অধিকারী নই। নিজেকে কখনই আমাদের কার্যকলাপের ফলাফলের কারণ মনে করবো না এবং নিষ্ক্রিয়তা সাথে যুক্ত হবো না।

আমি কীভাবে আমার ভবিষ্যতকে রূপ দিতে চাই তা আমার কাছে স্পষ্ট হয়ে উঠছিলো।

আগে আমি অনেক পয়সা খরচ করে



নানারকম হিলিং ওয়ার্কশপ (নিরাময় কর্মশালা)যোগ দিয়েছি, কিন্তু কিছু তাৎক্ষনিক উপকার পাওয়া ছাড়া জীবনে বিশেষ কোনো পরিবর্তন দেখতে পাইনি।

আর এখানে আমি কিছুই বিশেষ করিনি, এমনকি একটি কানাকড়িও খরচ করিনি। শুধু রোজ সকালে যতটা পারি, পবিত্র মন নিয়ে ভগবদ্গীতা পড়ার চেষ্টা করেছি।

আর তার ফলস্বরূপ, এক মাসের মধ্যেই নিজের মধ্যে কি আমূল পরিবর্তন দেখতে পেয়েছি। আমার মন শান্ত হয়ে গেছে, এবং আমি পূর্বের তুলনায় বাহ্যিক ঘটনার দ্বারা কম উত্তেজিত হই। পেশাগতভাবে, আমি আরও স্থিতিশীল এবং জাগতিক বিষয়ে কম আকৃষ্ট হয়েছি। আমি আগের চেয়ে আরও নম্র হয়েছি, এবং আমার রাগ, লোভ, অহংকার, হিংসা এবং অন্যান্য নেতিবাচক আবেগগুলি বেশ কিছু পরিমাণে হ্রাস পেয়েছে।

আমি এইটুকু বুঝেছি যে গীতা আমাদের একটি ভিন্ন দৃষ্টিকোণ দিয়ে বিশ্ব এবং জীবনকে দেখতে শেখায় -

আধ্যাতিক এবং সুস্থ জীবনযাপন করার পদ্ধতি। ফলের আশা দূরে রেখে নির্লিপ্ত ভাবে কর্ম করে যাওয়া।

ব্যর্থতাকে স্বীকার করে পরবর্তী জীবনের দিকে এগিয়ে যাওয়া।ব্যর্থতা থেকে ভয়শুন্য হওয়া।

আত্মবিশ্বাসী হওয়া।

অন্তরের শান্তির গুরুত্ব।

জনকল্যানমুলক কাজ করার ইচ্ছা।

ত্যাগের ও দানের ক্ষমতা।

আমার জীবনে আর একটি অভূতপূর্ব পরিবর্তন যেটা হলো তা আমার পরিচিত বৃত্ত যেন সৎ সঙ্গে ভোরে গেলো। যাদের সাথে যোগাযোগ হলো, তারা সবাই ভগবানের আশীর্বাদ ধন্য। কি নম্র, ইতিবাচক চিন্তা সম্পন্ন, সুন্দর তাদের ব্যবহার। হটাৎ মনে হলো যেন আমি কোনো এক সুন্দর গৃহিয়াশ্রমে চলে এসেছি।

ভগবদ্গীতা সম্পূর্ণরূপে প্রতীকী। এখানে কোনো সত্যিকারের যুদ্ধক্ষেত্র বা যুদ্ধ নেই; যা আছে তা আমাদের মনের মধ্যে যে যুদ্ধ চলছে তার একটি উপস্থাপনা মাত্র। আর গীতার বাণীর সাহায্যে যখন আমাদের মনের নেতিবাচকের ওপর ইতিবাচকের জয় হয়ে, তখনি আমরা খুঁজে পাই, আসল প্রশান্তি।

তবে আমি এটা উপলব্ধি করেছি যে ভগবান শ্রীকৃষ্ণের কাছে নিজের ইচ্ছায় পৌঁছনো যায় না, সময়ে হলে তিঁনি আমাদের তার কাছে টেনে নেন। এর ঝলক আমি নিজে অনুভব করেছি।

আমি নিজের জীবনের সাম্প্রতিক অভিজ্ঞতা থেকে এটা উপলব্ধি করতে পেরেছি যে জীবনকে একটি সুন্দর, শান্ত এবং আন্তরিক সুখের পথের পরিচালিত করার জন্য ভগবদ্গীতার প্রদত্ত্ব জ্ঞান কালজয়ী যা মহাভারতের সময়ে সত্য ছিল, আজও সত্য, ভবিষ্যতেও থাকবে।

- Smt. Ruby Lalla



My Journey

I began my L1 classes with a sceptic mind (by the insistence of one of my friends). But after a couple of classes my reluctance changed into enthusiasm and enjoyment. Urmiladidi was our teacher and I really used to look forward to the evenings which I still do. Now, after attending the Gita classes for all these months (not just chanting the slokas but reading the interpretations), I have come to understand that the Gita has the tremendous power to change one's mind— it has the potential to uplift the human mind. It upholds spirituality,in fact it is the epitome of spirituality. I wouldn't use the word 'religion' because in my belief religion divides people. But spirituality unites humanity— it is universal. The teachings of the Gita is applicable to everyone. It's a way of life to follow (which, of course, is extremely difficult to do, I feel). But if a few specks of it can be practiced, an individual will immensely benefit from it, I am sure. So what's the harm in giving it a good try?

I have got this golden opportunity from Gita Parivar at a much matured age of my life. But I am very happy for the four young minds in our class who are fortunate to have got the exposure to this vast storehouse of knowledge at such an early age. They read so well. Their fluency is amazing. I hope and feel that they will grow up to be very good and responsible citizens of the world in future.

Thank you Radha didi, Pranjali didi, Arunima didi for your help and guidance.

Bithi Chatterjee, Kolkata



LEARNGEETA & ME

It was in February 2022 that I had enrolled into a week long yoga retreat. On the first day of the stay, it was a cool evening with the sounds of hundreds of birds nesting for the night and a cool breeze wafted with the scent of the flowers in the retreat garden. A short distance away I heard a female voice reciting Sanskrit Shloks softly and melodiously. Just the ambiance and the sounds of the shlokas made that moment magical. I waited till she finished and approached her to express my delight in listening in on her. She explained to me about how she learnt to recite and memorize the Bhagavad Gita from Gītā Parivār, which teaches the Gītā online for free at convenient time slots and in 13 languages. She even sent me the link to join. As soon as I finished the week long retreat and returned home I enrolled and since then have never looked back. Learning Gītā has been the best decision in my adult life which has taken me from one strength to the next. I never knew that just by pursuing Gītā it could lead to such a positive transformation. It has busted all myths that one cannot memorise anything past their student life, or habits and behaviour is set by the time one becomes an adult.

The most important life lessons that Gītā Parivār has taught me are:

* It is never too late to learn, unlearn and relearn. It's certainly a myth that we stop learning after a certain age. I've met amazing people well into their 90s who came into contact and memorized all 18 chapters or 700 shlokas of Bhagavad Gita.

* Learning never ends. I've seen children as little as 6 to 12 years old who have memorized the complete Bhagavad Gita. If they haven't done their diligence in some past life then how do we explain it? Gītā Parivār gave a platform for such budding scholars.



* Time management skills. Becoming a trainer myself has been the most rewarding experience. It taught me how to make the best use of every second in the 40 minute teaching session to impart Gītā to the participants.

* Interpersonal skills. All activities are designed to see that all seekers of Bhagavad Gita return with their hearts full of love for God and a sense of service to mankind. It is no surprise that many seekers return to Gītā Parivār as

volunteers just like me with an intent to give back what they received.

* Team work. Gītā Parivār is a divine conglomeration run solely by amazing sefless volunteers who give a good part of their daily time in service. Every interaction with each other, be it seeker or fellow volunteer, is with utmost respect. When in need of help all members of different groups join together to seek collective solutions to every evolving issue.

* Leadership skills. Every aspect of Gītā Parivār has a strong base in life lessons. The amazing fact is that the more voluntary service that we put in the more rejuvenated we feel. It teaches us how to excel in the chosen path of Gītā and also lead other like minded seekers along too.

Gītā has now become part of my daily routine and all unnecessary activities have been edged out.

I'm ever grateful to His Holiness Swami Gurudev Gobindadev Giriji Maharaj for creating this platform which has given me and the other hundreds of thousands of people a divine direction and purpose in life.

- Bindu Vidyadhar, Sullia



Soulful Stanzas



భగవానుడి భగవద్గీత..

బాగుంది బాగుంది భగవద్గీత పఠనం

భగవానుడి స్వరం నుండి

వెలువడిన ఈ భగవద్గీత..

నాలుకేమొ తిరగకున్నా

నానా తంటాలు పడుతు

కృష్ణుల వారు చెప్పిన(ట్టి)

కష్టమైన శ్లోకాలు

ఇష్టంగా మేమంతా కంఠస్థం చేశాము

కృష్ణుడి దయవల్ల మమ్ము

కలిపురుషుడు వదిలిపెట్టి

కష్టాలు కడగండ్లు కరిగిపోనీ కాలంలో..

నంది నందనుడు మమ్ము నడిపించే దారిలో

కంటకాలన్ని తొలగి కనిపించును స్వర్గము..

వందనాలు వందనాలు

గురు దేవుళ్లకు వందనాలు...

- Shri Ramchander Rao (Hyderabad)

अति सुमंगल पावन गीता, जीवन मार्ग दिखाए गीता।
जो प्रतिदिन पढता है गीता, उसका भाग्य जगाती गीता॥1॥

बच्चे बूढ़े एक समान,करती है सबका कल्याण।
मन का बोझ सभी हर लेती, हम सबकी माता है गीता॥2॥

जो गीता से करते प्यार, उसके मिटते कष्ट अपार।
अद्भुत शक्ति की है ये खान, भारत का अभिमान है गीता॥3॥

कृष्णनेअर्जुनकारथहांका,करनसकाकोईबालभीबांका।
सबको बांटा कृष्ण ने ज्ञान, ग्रन्थ महान बना कर गीता॥4॥

गीता का सब जानो मर्म, करते चलो सदा सत्कर्म।
सदा सत्य के मार्ग पे चलकर, लक्ष्य तक पहुँचती गीता॥5॥

गीता जी मे श्रद्धा रखना, मन मे संशय न कोई करना।
सब बंधन से होंगे दूर, उत्तम मार्ग दिखाए गीता॥6॥

पूरी करती है सब आस, गीता पर करना विश्वास।
सब प्रश्नों के उत्तर इसमें, प्रेमामृत बरसाती गीता॥7॥

ये जीवन कितना अनमोल, तोल तोल के बोलो बोल।
क्रोध लोभ और झूठ को त्यागो, कभी ना पाप कराये गीता॥8॥

गीता का पाओ वरदान, सकल गुणों की है ये खान।
स्वयं पढ़ो औरो को पढ़ाओ, हर घर मे पहुचाओ गीता॥9॥

- चारु लता अग्रवाल (नई दिल्ली)



गीता ज्ञान

जीवन में गर होना चाहते हो सफल,
तो गीता ज्ञान पर कर लो अमल।
लगा गीता सीखना बडा हैं कठिन
पर अत्यंत है सरल,
गर है आत्मानुशासन।
गीता का मुख्य उद्देश्य, कर्म की दृढ़ हो सत्ता,
फल की इच्छा न कर,कर्म कर हर हाल में अच्छा-अच्छा।
इसलिए...
जीवन में गर होना चाहते हो सफल,
तो गीता ज्ञान पर कर लो अमल।
भक्तियोग तथा पुरुषोत्तम योग की
समझ आई महत्ता,
इसके मनन से आती आत्मा में पूर्णता,
अर्जुन ने हर क्षेत्र के अनेकों प्रश्न पूछे,
तब कृष्ण ने कहा...
कष्ट से घबराकर अपने कर्तव्यों से क्यों हो रूठे।
इसलिए...
जीवन में गर होना चाहते हो सफल,
तो गीता ज्ञान पर कर लो अमल।
ऊर्जावान बनाए जीवन अपना,
गीता-परिवार से जुड़कर,
उमंग,उत्साह,उल्लास का अनुभव करें जी भर-भरकर,
आओ गीता-ज्ञान बढ़ाए,गीता सेवी बनकर,
सत,चित,आनंद की अनुभूति करें,
इस महायज्ञ के सहभागी बनकर।
इसलिए...
जीवन में गर होना चाहते हो सफल,
तो गीता-ज्ञान पर कर लो अमल।

- संगीता कौशिक (गंगटोक)

हे, कृष्ण तुझे नमन..!

स्वर्णाच्छादित किरणों के रथ पर अग्रसर,
इस लोक के जन जन के अन्तर्मन पर..!
बिंब अपना जड़ने को तत्पर...
हे, कृष्ण तुझे नमन..!!

हर सुबह, ममता सी मुस्कान लेकर,
अंधकार में जीने को प्रेरित कर..!
बीज़ को जीवित करने को तत्पर...
हे, कृष्ण तुझे नमन..!!

भरी दोपहरी, ऊष्मा का संचार निरंतर,
खुशहाली का ताज सजाये, हर घर पर..!
जीवन ऊर्जा बिखेरने को तत्पर...
हे, कृष्ण तुझे नमन..!!

रक्त चन्दन का तिलक लगाये गोधुली पर,
पंछी पश्चिम को जाते कलरव कर..!
क्षुधा बुझाने को हरवक्त तत्पर...

हे, कृष्ण तुझे नमन...!!
हे, कृष्ण शत-शत नमन..!!!

- मनीष गोडे (नागपुर)



ಗೀತೆ ಪರಿವಾರ ಕವನ

ಬಂದೆ ನಾನಿಲ್ಲಿ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನು ಪಠಿಸೆ,
ಚೆಂದ ತಾಣವಿದು ಈ ಗೀತೆ ಪರಿವಾರ;
ಒಂದೊಂದು ದಿನಕು ಮೂರ್ಮೂರು ಶ್ಲೋಕದ ಕಲಿಕೆ
ಕುಂದು- ಕೊರತೆಗಳಿರದ ಸ್ಪಷ್ಟ ಉಚ್ಚಾರ.
ಕೊಂಚ ಶ್ರಮದೊಂದಿಗಿನ ಹ್ರಸ್ವ- ದೀರ್ಘದ ಶ್ವಾಸ
ಪಂಚೇಂದ್ರಿಯಕ್ಕಿದುವೆ ನಿಜದವ್ಯಾಯಾಮ;
ಪಾಂಚಜನ್ಯವನೂದಿದವನ ವಾಣಿಯ ಕೇಳೆ
ಸಂಚಯಿತ ಪಾಪ- ಕಷ್ಟಗಳು ನಿರ್ನಾಮ.
ಪಾರ್ಥಂಗೆ ಕೃಷ್ಣನರುಹಿದ ಮರ್ಮವನ್ನರಿತು
ಸಾರ್ಥಕದ ಜೀವನವ ನಡೆಸಿರೆನ್ನುತ್ತ;
ಗೀತೆ ಕಲಿಯುತ್ತ, ಕಲಿಸುತ್ತ, ಅಳವಡಿಸುತ್ತ
ನೀತಿಯಿಂದಲಿ ಬಾಳಿರೆನ್ನುವುದೆ ತತ್ವ

- REVATHI UM, (Vittal)

गीता वंदन

वंदितो तुज, वंदितो तुज, वंदितो तुज, माय गीता।
या जगाला उद्धराया, सिध्द केले भारता ॥ धृ॥

अमृतमय तव वाणी मधुनी, दिव्यत्वाची ये प्रचीती।

कृष्णार्जुन या संवादातुनी, पाझरते भक्तीची प्रीती।
तुझ्या कृपेने धन्य जाहलो, उणे न कांहीं उरले आता॥ १॥

सादर आम्ही तव संदेशा, 'योग: कर्मसु कौशलम'।

आचरिता तुज सार्थक होवो, जगत, सर्व हे मंगलम।
नच स्वर्गाची आंस आम्हाला, कुशीत तुझिया तृप्तता॥ २॥

भगवंतांच्या वाणी मधली, ऋजुता अन ही मार्दवता।

सदैव राहो आमुच्या स्मरणी, आचरणी अन् सात्विकता।
हेच मागणे तुझिया चरणी, तुजविण कोणी नाही त्राता॥ ३॥

- गोपालकृष्ण कुलकर्णी (पुणे)





Pondering pages for "CURIOUS MINDS"



सुंदरकाण्ड पहेली

1) जामवंत के वचन सुहाए।
सुनि ___हृदय अति भाए।। (सुग्रीव,हनुमंत, विभीषण)

2) सिंधु तीर एक ___सुंदर।
कौतुक कूदि चढेऊ ता ऊपर।।(भूधर, पर्वत, कुटिया)

3) ____एक सिंधु महु रहही।
करी माया नभ के खग गहही।।(निसिचरी, अमानुषी, सुरसा,)

4) ___समान रूप कपि धरी।
लंकहि चलेउ सुमिरी नरहरी।।(मसक,मर्कट, दंशक)

5) जब रावनहि ___बर दीन्हा ।
चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ।।(विष्णु, ब्रह्म, शिव)

6) प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि __ राजा॥(अयोध्या, कोसलपुर, जनकपुर)

7) अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु __ मिलहिं नही संता।।(शिव कृपा, हरि कृपा, विष्णु कृपा)

8) त्रिजटा नाम ___एका।
राम चरण रति निपुन विवेका।।(सेविका, देविका, राच्छसी)

9) तब देखी_____मनोहर।
रामनाम अंकित अति सुन्दर (मुंदरी, अंगूठी, मुद्रिका,)

10) सीता मन भरोस तब भयऊ।
पुनि लघु रूप ___ लयऊ ।।(अंगद, लक्ष्मण, पवनसुत)

11) राम नाम बिनु ___न सोहा।
देखु बिचारी त्यागि मद मोहा।।(रसना, जिह्वा,गिरा)

12) सुनु ___कहऊ पन रोपी।
बिमुख राम त्राता नहीं कोपी।।(दससीस, दसकंठ, दसमुख)

13) __ उतारि तब दयऊ।
हर्ष समेत पवनसुत लयऊ।।(शीश फूल , गुंजा, चूड़ामनि)

14) अब मैं कुसल मिटे भय भारे।
देखि राम पद ____तुम्हारे।।(कमल, पंकज,चरण)

15) देहु नाथ प्रभु कहुं___ ।
भजहु राम बिनु हेतु सनेही।।(वैदेही, जानकी, सीता)

16)___बान सरासन आनू।
सोषौ बारिधि बिसिख कृसानु।।(जामवंत, पवनसुत, लछिमन)

17) ____हृदय कर चिंता।
भयऊ कंत पर विधि विपरीता।।(कौशल्या, कैकेई, मंदोदरी)

18) कह सुग्रीव सुनहु सब वानर।
अंग भंग करि पठवहु ____ ।।(वानर, बंदर, निसिचर)

19) ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
सकल ____के अधिकारी।।(दंडन, सीखने, ताड़ना)

20) एहि विधि नाथ ___बँधाइअ।
जेहि यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ।।(सागर, समुंद्र, पयोधि)

(हल अगले पृष्ठ पर)



Pondering pages for "CURIOUS MINDS"



Answer Sheet

1) जामवंत के वचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।। (सुग्रीव, हनुमंत, विभीषण)

2) सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।
कौतुक कूदि चढेऊ ता ऊपर।।(भूधर, पर्वत, कुटिया)

3) निसिचरी एक सिंधु महुं रहही।
करी माया नभ के खग गहही।(निसिचरी, अमानुषी, सुरसा)

4) मसक समान रूप कपि धरी।
लंकहि चलेउ सुमिरी नरहरी।।(मसक, मर्कट, दंशक)

5) जब रावनहि ब्रह्म बर दीन्हा ।
चलत बिरंचि कहा मोहि चीन्हा ।।(विष्णु, ब्रह्म, शिव)

6) प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥(अयोध्या, कोसलपुर, जनकपुर)

7) अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरिकृपा मिलहिं नही संता।।(शिव कृपा, हरि कृपा, विष्णु कृपा)

8) त्रिजटा नाम राच्छसी एका।
राम चरण रति निपुन विवेका।। (सेविका, देविका, राच्छसी)

9) तब देखी मुद्रिका मनोहर।
रामनाम अंकित अति सुन्दर (मुंदरी, अंगूठी, मुद्रिका)

10) सीता मन भरोस तब भयऊ।
पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ।।(अंगद, लक्ष्मण, पवनसुत)

11) राम नाम बिनु गिरा न सोहा।
देखु बिचारी त्यागि मद मोहा।। (रसना, जिह्वा,गिरा)

12) सुनु दसकंठ कहऊ पन रोपी।
बिमुख राम त्राता नहीं कोपी।। (दससीस, दसकंठ, दसमुख)

13) चूणामनि उतारि तब दयऊ।
हर्ष समेत पवनसुत लयऊ।। (शीशफूल, गुंजा, चूड़ामनि)

14) अब मैं कुसल मिटे भय भारे।
देखि राम पद कमल तुम्हारे।। (कमल, पंकज, चरण)

15) देहु नाथ प्रभु कहुं वैदेही ।
भजहु राम बिनु हेतु सनेही।। (वैदेही, जानकी, सीता)

16) लछिमन बान सरासन आनू।
सोषौ बारिधि बिसिख कृसानु।। (जामवंत, पवनसुत, लछिमन)

17) मंदोदरी हृदय कर चिंता।
भयऊ कंत पर विधि विपरीता।।(कौशल्या, कैकेई, मंदोदरी)

18) कह सुग्रीव सुनहु सब वानर।
अंग भंग करि पठवहु निसिचर ।। (वानर, बंदर, निसिचर)

19) ढोल गंवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।। (दंडन, सीखने, ताड़ना)

20) एहि विधि नाथ पयोधि बँधाइअ।
जेहि यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ।।
(सागर, समुंद्र, पयोधि)



संवाद के वक्ता श्रोता पहचानें

Who said to Whom ?



1) काम एष क्रोध एष, रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा, विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥

2) व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान्, एतद्गुह्यमहं परम।
योगंयोगेश्वरात्कृष्णात्, साक्षात्कथयतःस्वयम्॥

3) अपरं भवतो जन्म, परं जन्म विवस्वतः।
कथमेतद्विजानीयां, त्वमादौ प्रोक्तवानिति॥

4) तमुवाच हृषीकेशः, प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये, विषीदन्तमिदं वचः॥

5) यदादित्यगतं तेजो, जगद्भासयते खिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ , तत्तेजो विद्धि मामकम्॥

6) क्रोधात भवति , सम्मोहः, सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणष्यति॥

7) परं ब्रह्म परंधाम, पवित्र परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यम्, आदिदेवमजं विभुम्॥

8) अश्वत्थःसर्ववृक्षाणां, देवर्षीणां च नारदः।
गन्धर्वाणां चित्ररथः, सिद्धानां कपिलो मुनिः॥

9) अहो बत महत्पापं, कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन, हन्तुं स्वजनमुद्यताः॥

10) यथा दीपो निवातस्थो , नेंगते सोपमा स्मृता।
योगिनो यतचित्तस्य, युंजतो योगमात्मनः॥



Who said to whom (Answers)

1) भगवान ने	अर्जुन से	6)भगवान् ने	अर्जुन से
2) संजय ने	धृतराष्ट्र से	7) अर्जुन ने	भगवान से
3) अर्जुन ने	भगवान् से	8) भगवान् ने	अर्जुन से
4) संजय ने	धृतराष्ट्र से	9)अर्जुन ने	भगवान से
5)भगवान् ने	अर्जुन से	10) भगवान् ने	अर्जुन से



Scrambled Shlokas

Words in following shlokas are misplaced.

Can you correct them?

1. निशाचरचमू रामं परायणं रामाय तस्मै सदा नमः भवतु राम विजयते, रामो भजे मे सदा रमेशं रामान्नास्ति रामे राजमणिः परतरं, दासोस्म्यहं रामेणाभिहता, चित्तलयः, मामुद्धर रामस्य भो

2 रामभद्राय नमः रघुनाथाय पतये नाथाय वेधसे सीतायाः रामचंद्राय रामाय

3 वानरयूथमुख्यं मारुततुल्यवेगं शरणं जितेन्द्रियं मनोजवं वरिष्ठम दूतं वातात्मजं श्रीराम बुद्धिमतां प्रपद्ये

4 रक्षितं व्योम शक्तास्ते चारिणश्छद्मचारिणः रामनामभिः न द्रष्टुमपि पातालभूतल

5 हरः यथा स्वप्ने प्रातः प्रबुद्धो लिखितवान् तथा रामरक्षामिमां आदिष्टवान् बुधकौशिकः

6 सुखसम्पदाम् भर्जनं यमदूतानां तर्जनं भवबीजानामर्जनं रामरामेति गर्जनम्

7 सकलापदाम् आरामः रामः प्रभुः श्रीमान स कल्पवृक्षाणां अभिरामस्त्रिलोकानां विरामः नः

8 वेदान्तवेद्यो पुराणपुरुषोत्तमः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः यज्ञेशः जानकीवल्लभः

9 जानकीलक्ष्मणोपेतं राजीवलोचनम् जटामुकुटमण्डितं रामं नीलोत्पलश्यामं ध्यात्वा

10 फलमूलाशिनौ ब्रह्मचारिणौ पुत्रौ दशरथस्यैतौ दान्तौ रामलक्ष्मणौ भ्रातरौ तापसौ

Scrambled Shlokas

Answer Sheet

1 रामो राजमणिः सदा विजयते, रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता, निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं, रामस्य दासोस्म्यहं
रामे चित्तलयः, सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

2 रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥

3 मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीराम दूतं शरणं प्रपद्ये॥

4 पातालभूतल व्योम चारिणश्छद्मचारिणः। न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥

5 आदिष्टवान् यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥

6 भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्। तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्॥

7 आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान स नः प्रभुः॥

8 वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः। जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः॥

9 ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितं॥

10 फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ। पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥

Word Puzzle

Ram Raksha Stotra

Following table contains 34 names mentioned in Ram Raksha Stotra. Can you find out all of them?

ल	रा	क	रा	र	घू	त्त	म	वा	र	ज	र	न	सी	रा
म्ब	बि	भी	ष	ण	श	ज	क	द	सौ	र	घु	च	ता	म
कौ	स	ल्या	व	य	र	द	स	श	मि	म	कु	घ	प	भ
जा	च	घू	र	ति	रा	श	व	र	त्रि	ख	ल	न	ति	द्र
श्री	क	न्त	घु	घु	ता	र	श	थ	व	त्रा	ति	वा	थ	मे
रा	वा	मे	ना	म	रा	थ	कौ	र	त्स	ता	ल	ता	ह	य
म	न	न्त	थ	र	म	त	स	र	ल	व	क	त्म	नु	मु
द्रू	र	घू	ख	घु	च	न	ल्ये	मे	भी	ल्ल	ति	ज	म	जा
त	यू	जा	जा	व	न्द्र	य	य	श	मा	रु	त	म	त्	न
रा	थ	म्ब	म	र	भ	की	म	त्स	रा	व	णा	रि	रा	की
रा	मु	व	द	व	स	म	घ	रा	रा	ज	ल	रि	व	व
घ	ख्य	त्	ग्र्य	र	रा	घ	व	श	म	न	क्ष्म	भी	सी	ल्ल
व	र	ग्रे	र	बु	ध	कौ	शि	क	र	क	ण	श	ता	भ
स	य	भ	ग्रे	श	का	र्मु	क	बि	त्रा	मु	ल	कौ	घू	भ
दा	श	र	थि	दा	द	श	मु	खा	न्त	क	ज	त	कौ	व

Word Puzzle

Ram Raksha Stotra

Answer Sheet

ल	रा	क	रा	र	घू	त्त	म	वा	र	ज	र	न	सी	रा
म्ब	बि	भी	ष	ण	श	ज	क	द	सौ	र	घु	च	ता	म
कौ	स	ल्या	व	य	र	द	स	श	मि	म	कु	घ	प	भ
जा	च	घू	र	ति	रा	श	व	र	त्रि	ख	ल	न	ति	द्र
श्री	क	न्त	घु	घु	ता	र	श	थ	व	त्रा	ति	वा	थ	मे
रा	वा	मे	ना	म	रा	थ	कौ	र	त्स	ता	ल	ता	ह	य
म	न	न्त	थ	र	म	त	स	र	ल	व	क	त्म	नु	मु
द्रू	र	घू	ख	घु	च	न	ल्ये	मे	भी	ल्ल	ति	ज	म	जा
त	यू	जा	जा	व	न्द्र	य	य	श	मा	रु	त	म	त्	न
रा	थ	म्ब	म	र	भ	की	म	त्स	रा	व	णा	रि	रा	की
रा	मु	व	द	व	स	म	घ	रा	रा	ज	ल	रि	व	व
घ	ख्य	त्	ग्र्य	र	रा	घ	व	श	म	न	क्ष्म	भी	सी	ल्ल
व	र	ग्ने	र	बु	ध	कौ	शि	क	र	क	ण	श	ता	भ
स	य	भ	ग्ने	श	का	र्मु	क	बि	त्रा	मु	ल	कौ	घू	भ
दा	श	र	थि	दा	द	श	मु	खा	न्त	क	ज	त	कौ	व



Bhagavadgītā Quiz



1. The Bhagavad Gita is a part of which epic Hindu scripture?



(a) Ramayana

(b) Mahabharata

(c) Upanishads

(d) Vedas

2. In which battlefield does the Bhagavad Gita take place?



a) Kurukshetra

b) Ayodhya

c) Mathura

d) Lanka

3. Who is Arjuna facing in the war?

a) His brothers, the Pandavas

b) His cousins, the Kauravas

c) Demons

d) Krishna

4. Why is Arjuna hesitant to fight?

a) He fears his army is weaker.

b) He doesn't want to kill his own kin.

c) He doubts his skills as a warrior.

d) He believes in peace at all costs.

5. How many chapters (Adhyayas) does the Bhagavad Gita contain?



a) 12

b) 18

c) 24

d) 10

6. Who is the charioteer of Arjuna in the Bhagavad Gita?



a) Shri Krishna Bhagvan

b) Shiva Bhagvan

c) Shri Rama Bhagvan

D) Shri Hanuman Bhagvan

7. What is the Bhagavad Gita's teaching on the nature of the Self (Atman)?

a) It is the same as the physical body.

b) It is the ever-changing mind.

c) It is the eternal and unchanging essence within us.

d) It is an illusion created by our desires.

8. What is the significance of the Bhagavad Gita's teachings on selfless

action (Nishkama Karma)?

a) It encourages performing actions without any reward.

b) It promotes acting only for personal gain.

c) It emphasizes avoiding all actions altogether.

d) It advo cates for performing rituals for specific outcomes.

9. In the Bhagavad Gita, Shri Krishna emphasizes the importance of performing one's duty with:

a) Anger and aggression

b) A sense of attachment to the outcome (results)

c) Detachment from the fruits of one's actions

d) Fear of punishment

10. The Bhagavad Gita describes three Gunas (qualities) that influence human nature. Which of the following is NOT one of them?

a) Sattva (purity, goodness)

b) Rajas (passion, activity)

c) Tamas (inertia, darkness)

d) Dharma (righteousness)



Correct Answers:

1 - B	2 - A	3 - B	4 - B	5 - B
6 - A	7 - C	8 - A	9 - C	10 - D

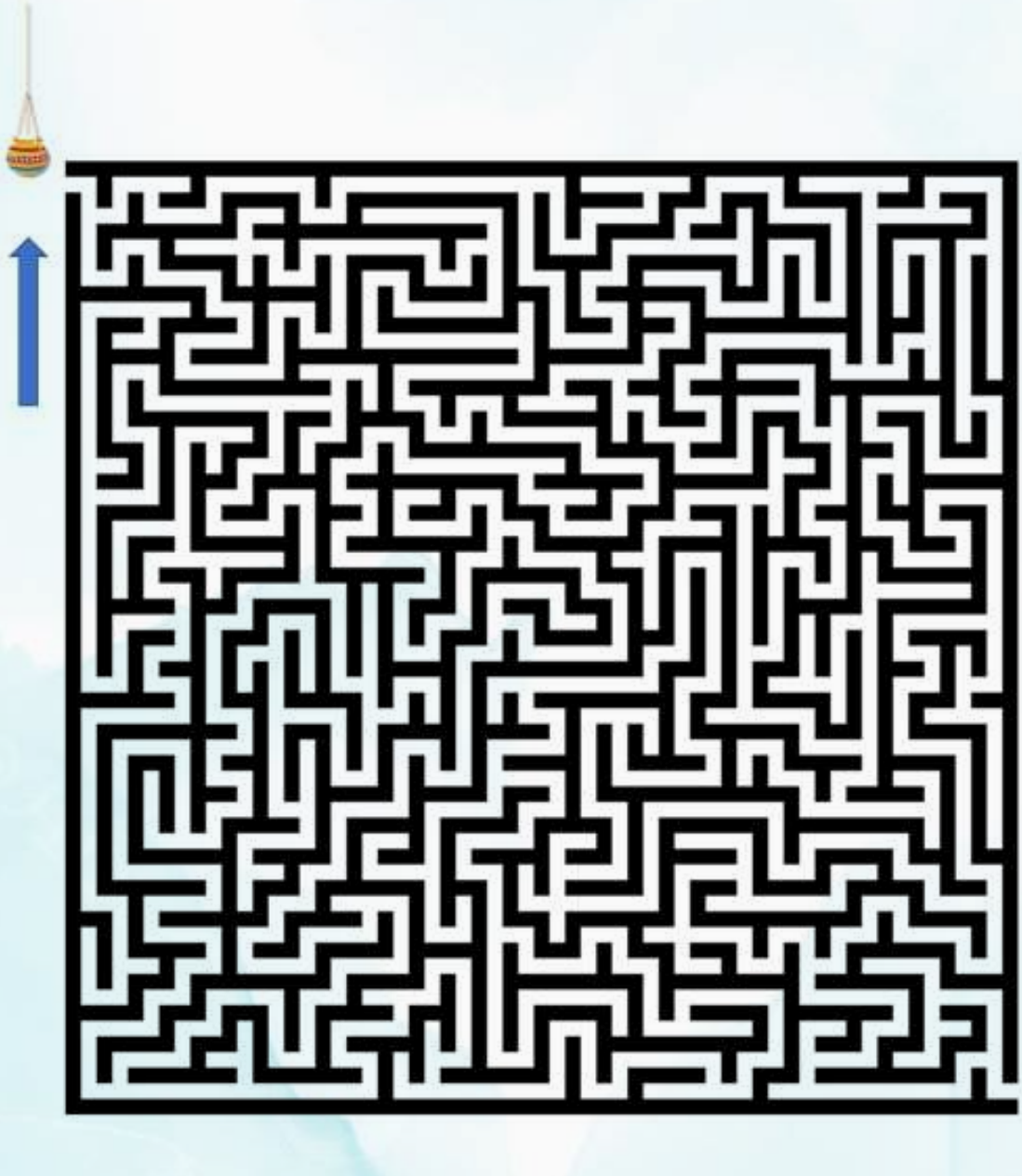


भूल भुलैया



किसी गोपी ने बाल कृष्ण से माखन की मटकी छिपा दी है।

क्या आप भगवन को माखन तक पहुँचने में मदद कर सकते हैं ?



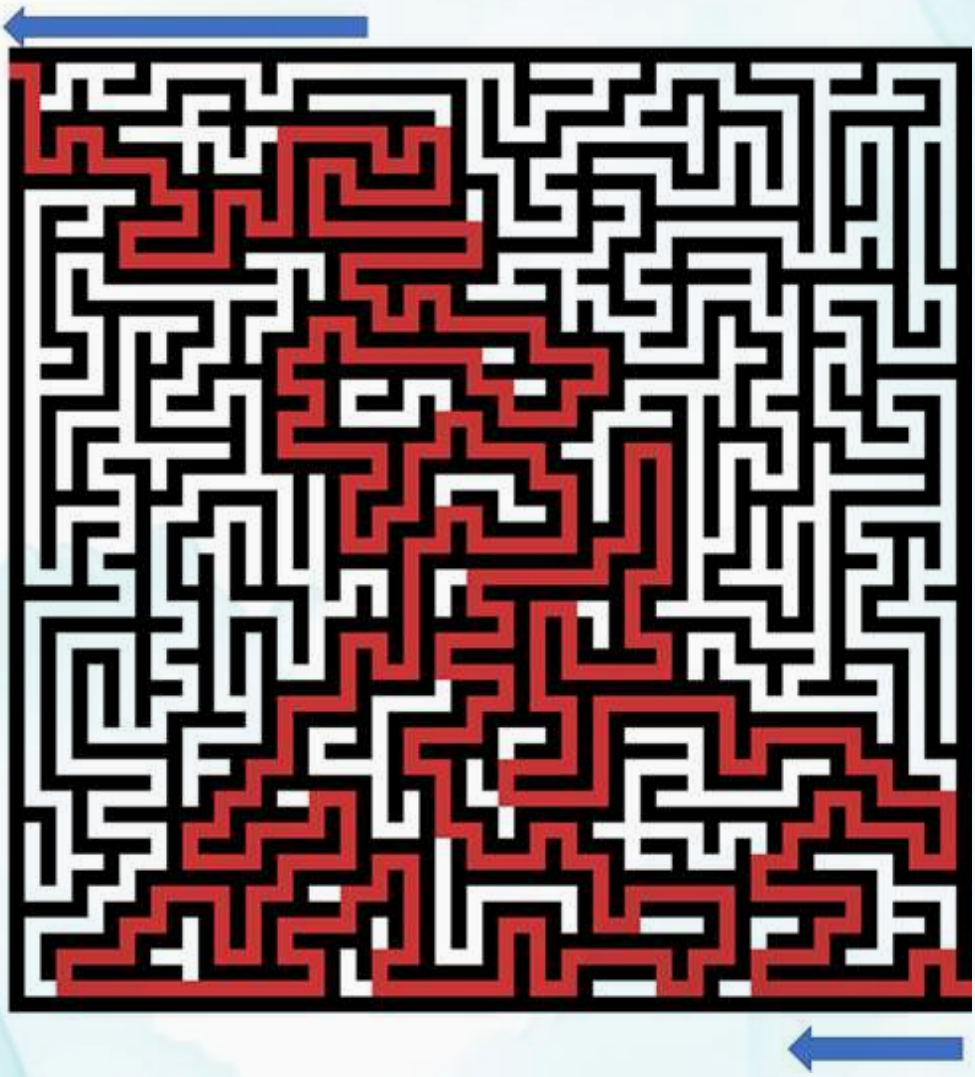




भूल भुलैया समाधान







Volunteer's Brigade

PATRON
P. P. SWAMI JI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

PROGRAM DIRECTOR
Dr.Ashu Goyal

PRINCIPAL TRAINER
Sau. Suvarna Malpani, Sangamner

PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. Kavita Verma

TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya

IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Pankaj Agarwal, Lucknow
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot
Shri Vednath Mathur, Delhi
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Vivek Sinha, USA
Shri Manish Tomar, Morana
Shri Suresh Shankar Ghag, Vadodara

TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Smt. Pooja Dongre, Banglore
Smt. Manisha Bardhan, Lucknow
Smt. Anita Ravishankar, Pune
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Anuja Lahoti, Dubai
Smt. Ruchika Chaugaonkar, Dharamshala
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara

CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Smt. Usha Prasad, Bangalore
Smt. Shradhha Mishra, Pune (Hindi)
Smt. Shruti Sud, Gurgaon (English)
Shri Mandar Barve, Pune (Marathi)
Smt. Mala Narayan, Bangalore (Malayalam)
Shri Valiveti Venkata Lakshmi Narayana Sharma, Hyderabad (Telugu)
Smt. Rachita Mishra, Bhubaneswar (Odia)
Smt. Akila Jayaraman, Kolkata, (Tamil)
Shri Manjunath Ji, Bangalore (Kannada)
Smt. Jigisha Shah, Nagpur (Gujarati)

TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Smt. Sneha Srinivas,Chennai
Shri Suraj Sharma, UAE
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Smt. Alaknanda Kulkarni, Pune
Smt. Manisha Bhardwaj, Abu Road
Smt.Abha Agarwal ,Mumbai
Smt Sheetal Bharadiya, Anjar, Gujarat
Shri Vidyanand Wagh, USA
Shri. Dharmesh Shah, Pune
Smt.Swati Kesarwani, Odisha

LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Smt. Pooja Goyal, Lucknow (Compilation)
Smt. Rashmi Shrikant Mate, Thane (Hindi)
Mr Ujjwala Prakash Dharma Hyderabad (Hindi)
Smt. Ramrakhyani Mamta Ashok, Thane (Sindhi)
Smt. SEEMA SAHANI UDAIPUR, (Sindhi)
Smt. Radha Madhyastha Miyazaki, Japan (English)
Smt. Bindu Vidyadhar, Kannada (English)
Smt. Poushali Ghosh, Bengaluru (Bangla)
Smt. Ramesh Kumar Rateria, Calcutta (Bangla)
Mr. Keshav Patro, Bhubaneswar (Odia)
Smt. Anuradha Sahu, Mumbai (odia)
Smt. Banusuja Ramakrishnan, Los Angeles (Tamil)
Smt. Bhagya S Coimbatore, Tamil Nadu (Tamil)
Smt Lathika Prasad, Ernakulam (Malayalam)
Smt. Akhila Ekkatiri, Bengaluru (Malayalam)
Smt. Vidyavati N.S, Bengaluru (Kannada)
Smt. Usha Pradeep, Pune (kannada)
Shri Sharad Godbole, Mumbai (Marathi)

Smt. M.V. Santhi Varma Hyderabad (Telugu)
Smt. Neha Tushar Joshi, Gujarat (Gujarati)
Shri Tarun Gogoi, Dibrugarh (Assamese)
Shri Gunaraj Pokhrel Nepal, (Nepali)

GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Smt. Smita Mundada, Mumbai
Shri. Hanuman Prasad Baheti, Pune
Shri Dinesh D Akhani, Palanpur
Dr. Rajani Venkatram, Raipur
Dr. Sindhushree S, Bangalore
Smt. Meenakshi Priyadarshini, New Delhi
Shri Jayesh Pandya, Jamnagar
Smt. Hemlata Kalani, Pune

EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri

NEWSLETTER DEPARTMENT
Smt. Vibha Deshmukh, Nagpur
Shri Sunil Kapdi, Mumbai
Ms Kashmira, Thane

SOCIAL MEDIA DEPARTMENT
Shri Abhishek Gupta, Asansol

GRAPHIC DEPARTMENT
Shri Varun Pathak, Pune
Shri Manish Satpute, Manwath
Smt. Dakshina Malladi, Mumbai
Smt. Harsha Dhiren Trivedi, Mumbai

LG DISCIPLINARY COMMITEE
Shri Vikas Vaidya, Pune
Smt. Priyanka Havelia, Delhi
Shri Devendra Pathak, Khanrgone

BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Drishti Yadav, Lucknow
Ms. Pratiksha Kashyap, Lucknow
Ms. Manvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Shaifali Rajput, Lucknow
Ms. Deepika Nigam, Lucknow
Ms. Simran Prajapati, Lucknow
Ms. Prachi Nigam, Lucknow
Ms. Prachi Chauhan, Lucknow
Ms. Manvi Nigam, Lucknow

TELE, CHAT & MAIL HELPLINE DEPT.
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi
Ms. Kajal Srivastava, Delhi
Ms. Kavita Rajput, Delhi
Ms. Yogyalakshmi, Delhi
Shri Aryan Gupta, Delhi

GROUP REG. DEPARTMENT
Smt. Anshu Garg, Delhi
Shri Munish Agarwal, Ambala

SCHOOL REG. DEPARTMENT
Shri Meennath Narayan Lakhote, Bhandara
Smt. Abha Agarwal ji, Mumbai

JAIL REG. DEPARTMENT
Shri Santosh Singh, Indore
Shri Rajeev Gupta, Jaipur
Shri Umesh Sharma, Mumbai

OFFLINE CLASS COORDINATION DEPARTMENT
Smt. Namita Mehra, Mumbai

CLASS MONITERING TEAM
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. VidyaPathrikar, Pune
Smt. Shashi Tripathi, Ujjain
Smt. Upasana Zanzote, Nagpur
Smt. Manisha Raghunath Inamdar, Vadodara

CHINTANIKA DEPARTMENT
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad
Smt. Kavita Mandhane, Parbhani
Smt. Nirmala Maru, Kota



GEETA PRACHARAK DEPARTMENT
Shri Geet Govind Sahu, Jagdalpur
Smt. Jagruti Trivedi, Vadodara
Smt. Yogshakti Sharma, Sriganganagar
Smt. Parul Bhargava, Prayagraj
Smt. Kiran Joshi, Raipur

ADMISSION DEPARTMENT
Smt. Vini Maheshwari, Mumbai
Shri Dinesh Pandita, Delhi
Smt. Minal Dani, Bangalore

CALLING & SUPPORT DEPARTMENT
Smt. Mrudula Asawa, Pune
Shri Rajaneesh Arora, Lucknow
Shri Abhijit Joshi, Vadodara
Shri Mahesh Shawale, Mumbai

KANTHASTHIKARAN CLASSES
Smt. Kavita Taparia, Mumbai
Smt. Bina Chauhan, Canada
Smt. Archana Agrawal, Rajahmundary

GEETA VICHAKSHAN DEPARTMENT
Smt. Rupa Zariye, Bangkok
Shri Rahul Gaur, Jodhpur
Ms. Khyati Gupta, Lucknow
Shri Kriti Bardhan, Lucknow

GEETA PARAYAN DEPARTMENT
Smt. Shruti Nayak, Mumbai
Shri Anshuman Saini, Bangalore

AAO GEETA SEWI BANE DEPARTMENT
Smt. Pooja Sharma, Mehsana
Shri Tejas A Poojary, Bangalore

EVENT MANAGEMENT DEPARTEMENT

Shri Gopal Singh Nathawat, Bikaner
Smt. Sia Deshpande, UK
Smt. Kamalvara Kaushal, Ajmer

MESSAGE TRANSLATION TEAM
Smt. Shraddha Mishra, Pune
Shri Bindu Vidyadhar, Sullia
Smt. Jigisha Shah, Nadiad
Shri Subrata Paul, Kolkata
Shri Sharad Phadke, Vadodara
Shri Krishnamohan Rao Terala, Hyderabad
Ms. Thanu Pradeep, Kochi
Smt. Uma Subramani, Ranipet
Shri Gunraj Pokhrayal, Nepal
Shri Tarun Gogoi, Naharkatia
Ms Harcharankaur Khalsa, Ulhasnagar





गीताव्रती साधक सूची

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

- A Sai Yeshin Reddy, Hyderabad
- A Varalaxmi, Hyderabad
- Aditya Ayachit, Nagpur
- Adwithi Rao, Belthangady
- Aishwarya Atul Sheth, Pune
- Alaka Surendra Karnik, Nashik
- Alka Chandrakant Aney, Wani
- Alka vinod Autkar, Amravati
- Anasuya Nayak, Bangalore
- Anil Prabhakar Bandishti, Thane
- Anila Patel, Dubai
- Anilesh Kumar Mishra, Mumbai
- Anita Neralkar, Nanded
- Anita kulkarni, Pune
- Anjali Pusalkar, Thane
- Anjana Ghungurde, Solapur
- Anupama Niranjan, Udupi
- Anuradha Joshi, Aurangabad
- Aparna kadam, Alhambra
- Archana Parsewar, Parbhani
- Arnav Wagh, Pune
- Arun Patrikar, Pune
- Arunchandra Andore, Thane
- Aryan Uskaikar, Mapusa
- Asawari joshi, Aurangabad
- Bandana Atal, Biratnagar
- Bhagavathi, Satyasai
- Bhakti Thakkar, Dumont
- Bharathi Reddy, Benguluru
- Bharti kushwaha, Shahdol
- Bhattiprolu Padmavathi, penamaluru
- Bhurkay Hemalata, Satara
- Ishaan harshad Bedarkar, Nashik
- Bollineni Padmaja, Visakhapatnam
- Chandrakala Joshi, Aurangabad
- Chandrakant Kawade, Barshi
- Chebolu Sobhana Subba Lakshmi, Rajavaram
- Chellaboina Sai Kashi Vishwanath Aarav, Hyderabad
- Chintamaneni Rama devi, Eluru
- Deep kamal Sharma, Meerut

गीताव्रती साधक सूची

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

- Devidas Paramwal, Nashik
- Dhara Girija, Guntur
- Dnyanada Sachin Kadam, Pune
- Dr Asha Malu, Jalgaon
- Dr Nirupama Dikshit, Vrindavan
- Dr pradipbhai Manvar, Pune
- G vijayasree, Tadipatri
- Ganesh Auti, Pune
- Gargi Kailas Ghungurde, Solapur
- Gaurang Pabani, Ahmedabad
- Gauri Devdatt Agxicar, Curtorim
- Gauriben Patel, Ahmedabad
- Gulab Mohta, Khamgaon
- Hema Laddha, Amravati
- Hema deshpande, Pune
- Hridaan Kulkarni Ji, Pune
- Indumathi S, Chennai
- Ishaan harshad Bedarkar, Nashik
- Jalinder Anna Raygude, Panvel
- Jayashree Tamhankar, Pune
- Jignasa S Nakum, Junagadh
- Jyotsna Tryambak Ingale, Nhavi
- Kailash Chandra Agrawal, Mathura
- Kala subramanian, Chennai
- Kamakshi Ellur, Ballari
- Karnakanti Laxmipathi, Karimnagar
- Karunasindhu De, Kolkata
- Kasturi Chiplunkar, Udupi
- Ketan Damle, Thane
- Kiran Puri, New Delhi
- Kirti Mujumdar, Hyderabad
- Kishore Marathe, Pune
- Kranti Adesh Nirhali, Pune
- Lakshmi Prabha Rao, Bangalore
- Madan Dinkar Kalwit, Nagpur
- Madhav Bhandari, Bhandardhik
- Madhavi latha, Ballari
- Madhura Mukund Amdekar, Ambernath
- Madhura Upendra Vaidya, Pune
- Madhuri Bhanudas Choudhary, Buldhana

गीताव्रती साधक सूची

गीता परिवार

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

- Malti liladhar Rathi, Amravati
- Mamta, New Delhi
- Manasi Kanitkar, Pune
- Mangala Gangadhar Vaidya, Ahmednagar
- Mangala Pandurang Chavan, Nashik
- Mangala Sudhir Bhangale, Malkapur
- Manika Periwal, Mumbai
- Manisha Deo, Panvel
- Manjusha Markale Ji, Raipur
- Maya Ram Sharma, Lucknow
- Medha Makarand Joshi, Nashik
- Medha Milind Inamdar, Pune
- Meera Mangesh Trifaley, Nagpur
- Meghana Uday Girdhari, Aurangabad
- Mehul M Anjaria, Vadodara
- Mrinalini Sachin Joshi, Ahmedabad
- Geetanjali Pachhade, Ahamadnagar
- Mukta Pokale, Sonpeth
- Nalini Muralidharan, Navi Mumbai
- Naman Sumit Nevaskar, Pune
- Neelima Mainkar, Mumbai
- Neeta Tolye, Ratnagiri
- Nilima Agashe, Pune
- Nisha Devi Tripathi, Udhampur
- Nisha kulshreshtha, Greater Noida
- Nisha Sonowal, Dibrugarh
- Pallavi Rokde, Parli vijanath
- Parvataneni Rao, Hyderabad
- Pendse Ramchandra, Pune
- Poonam Chadha, Bengaluru
- Potluri Prathima, Vishakhapatnam
- Prakash Rajadhyaksh, North Goa
- Prakash Katre, Navi Mumbai
- Pramila Deshmukh, Noida
- Pramila Saboo, Kozhikode
- Pranav Ghante, Bangalore
- Prasanna Lakshmi VC, Bangalore
- Pratibha Laxman Nankar, Dombivali
- Pratibha Prakash Bhat, Mumbai
- Pravina Dilip Bhuptani, Pune

गीताव्रती साधक सूची



॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

- Preetha Balasubramanian, Bangalore
- Prema Bhat, Bangalore
- Prerana Aparajit, Nashik
- Pritili Modak, Kolkata
- Priya Pimpalwadkar, Pune
- Puja Raut, Pune
- Pushpa Sonaje, Nashik
- Pushpa Chaudhari, Bhusawal
- Radha Chinchole, Beed
- Radha Maheshwari, Kekri
- Radha Sinha, Varanasi
- Radharamesh, Vijayanagara
- Rajani Biwalkar, Dombivali
- Rajani Saraf, Nashik
- Rajashri Dande, Yavatmal
- Mrinalini Joshi, Ahmedabad
- Rakesh Rani Kansal, Panipat
- Rakhi Kulkarni, Pune
- Ramachandra Kulkarni, Mumbai
- Rameshbhai Zala, Ahmedabad
- Ramineni Satyavathi Devi, Hyderabad
- Ramya G Nitte, Udupi
- Rani Gupta, Biaora
- Ranjanben chhaganbhai Patel, Surat
- Ratnamala Lowalekar, Pune
- Rekha Phalak, Nashik
- Rekha Prakash Patil, Thane
- Rekha Maniyar, Jintur
- Renuka Zanwar, Ambajogai
- Revathi Deepak Kulkarni, Belgaum
- Revati Vilas Khedkar, Nashik
- Ritu Anand Chandak, Akola
- Rohini Moreshwar Hepat, Yavatmal
- Rukmini Devi K, Sullia
- Rupa Zariye, Bangkok
- Rupali Giri, Navi Mumbai
- Rupali Bharambe, Jalgaon
- Sadhana Deshpande, Mumbai
- Sadhana Sharma Ji, Bhusawal
- Sanjay Lohia, Kathmandu

गीताव्रती साधक सूची



॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

- Sanjeev Pujar Ji, Navi Mumbai
- Sanjivani Kulkarni, Pune
- Santosh Verma, Delhi
- Sarika Vivek, Akot
- Saroj Surve, Mumbai
- Savita Lohia, Kathmandu
- Savita Mehare, Pune
- Sayalee Samudra, Kalyan
- Seema Kerhalkar, Pune
- Shanta Shah, Ahmedabad
- Sharvari Krishna Parab, Mumbai
- Shashi Gupta, Sabalgarh
- Shashikala N, Bengaluru
- Shatruhan Lal Sahu, Durg
- Shilpa Vishnoi, Pune
- Shivarani Gudiyella, Hanumakonda
- Shraddha Khaitan, Kolkata
- Shraddha Deshpande, Panvel
- Shriram Daptardar, Pune
- Shrirang Patil, Aurangabad
- Shruti Navale, Mumbai
- Sitaram Purohit, Vadodara
- Sivakumari Adusumilli, Krishna
- Sneha Bhatawadekar, Mumbai
- Sonali Desai, Ponda
- Sreedevi, Navi Mumbai
- Subha Senthilkumar, Chennai
- Subhash Bhirud, Pune
- Suchita Sawant, Mumbai
- Suchita Pingle, Pune
- Sudha Rajani, Chennai
- Sudhir Adhavalkar, Pandharpur
- Suhas S Suratkar, Vadodara
- Sujata Sawant, Pune
- Sujata Kulkarni, Thane
- Sujata Moharil, Chandrapur
- Sumana S Revankar, Kumta
- Sumit Barman, Ayodhya
- Suneela, Hyderabad
- Sunita Lalwani, Pune

गीताव्रती साधक सूची



॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

- Sunita P Golesar, Nashik
- Sunita Bhide, Pune
- Sunita Tiwari, Seoni
- Sunitha Mallya, Karkala
- Supekar Sunanda Ji, Ahmednagar
- Surekha Worlikar, Mumbai
- Surekha Amilkanthwar, Nanded
- Surendra Malik, Delhi
- Sushama Tanksale, Sangli
- Swati Kulkarni, Nanded
- Swati Kesarwani, Khopoli
- Swati Patil, Malkapur
- T Malathi, Kalahasti
- Ulhas Bhorkar, Bhopal
- Urmila Agarwal, Jalgaon
- Urvashi Patel, Danville
- Usha Gangatirkar, Nagpur
- Vaghani Narayani Rushikkumar, Surat
- Vaibhav Kumar Choudhary Ji
- Vaidehi Daptardar, Pune
- Vaishali Balduwa, Bhisi
- Vaishali kulkarni, Latur
- Vaishali Dixit, Nagpur
- Vaishnavi Joshi, Indore
- Vandana Patil, Mumbai
- Vandana Sabnis, Pune
- Varsha Sole, Pune
- Varsha Patil, Pune
- Veena Verma, New Delhi
- Veerendra Kumar Trivedi, Jaipur
- Veligotla Meenakshi, Nagpur
- Vibha Joshi, Pune
- Vidya Sharma, Prayagraj
- Vijaya Kabra, Mandsaur
- Vinaya Prabhu, Mumbai
- Vinita vaidya, Pune
- Vivaan Jawarkar, Vadodara
- Yashita Chandak, Akola
- Yashoda R Bhat, Karkala
- Zalak Dodiya, Ahmedabad

गीता विचक्षण साधक सूची





dalja Dharmisthaben Rameshbhai



Anandi Bhuyar



Anita Billaiya



Anju Agarwal



Anushree Kulkarni



Arati Joshi



Archana Jog



Archana Sharma



Archana Sharma



Archana Indani



Arobinda Pradhan



Arti Sood



Aruna Saoji



Asha Mittal



Ashok Kumar Sharma



Babita Mandhana



Bhagti Kapoor



Bharathi K



Bindu Somani



Chaitrali Kale



Chanchal Taori



Chandan Charchit



Chandralekha



Chhabi Mahanti

गीता विचक्षण साधक सूची





Dr Asha Malu



Dr Dayananda Pai



Dr Kiran Singh Chauhan



Dr Nirupama Vrindavan



Dr Prakash Kolhe



Dr Trupti Keny



Dr Vaishali Dalvi



Dr. Aparna Holkundkar



Dr. Archana Autade



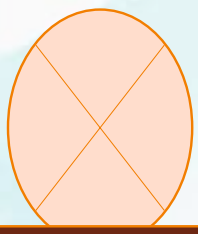
Daxa Karia



Ganga Kabra



Geeta Shah



Ghanshyam sharma



Gunjan Gupta



Guthula Jhansi Lakshmi



Haripriya Khandelwal



Hema deshpande



Hiranya Shukla



Indu Sharma



Jagruti Thaker



Jayaben Jani



Jayaben Dhudashia



Jayashree Bhat



Jayashree Bhosale

गीता विचक्षण साधक सूची





Jayshreeben Vaishnav



Jyoti Joshi



Jyoti Mahajan

Jyotsana Abhani



K Anuradha



Kailash Chandra Tailor



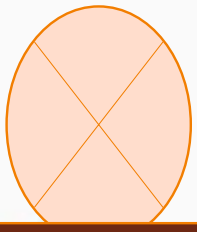
Kanchan kharloya



Kanchan Pathak



Karthyayini M D



Kavita Pakwanne



Kavita Singi



Khyati Gupta



Kiran D Mundra



Kiran Jain



Kriti Bardhan Gupta



Kumud Gupta



Kunjal Shah



Lakshmi Prasanna



Lakshmi vempati



Lata Singh



Leena Shah



Madhu Patwari

Mamta

Mamta Gupta

गीता विचक्षण साधक सूची





Mangala Shankar



Manisha gandhi



Manjari Belapurkar



Meeira Rangachary



Meena Padwal



Meera agarwal



Minakshi Gandhi



Minal M Dani



Mohan Patil



Anita Soni



Mrudula Deshpande



Neera Handa



Neeru Bhotika



Om Chidrawar



Omprakash vaishnav



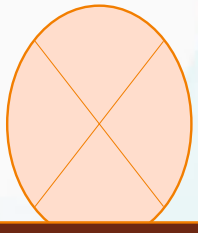
Padma Tapadia



Padma Sree Bachala



Padmavathi Uppuluri



Pandurang Jungare



Perala Prasuna



Poonam Gujarathi



Prabha Iyer



Prajakta Ambekar



Pranita Majmudar

गीता विचक्षण साधक सूची





Pratibha Sabnis



Rakhi Shrivastav

Ramesh Chaksota



Ramjibhai Patel



Ranjan Suratwala



Ravindra Sukthankar



Reecha Patel



Renu Agarwal



Rohan Borade



Ruchi Lokhande



Rupa Zariye



Rupal Joshi



Samarth Rathi



Sampreeta Hegde



Sanjay Kumar Rastogi



Satish Chandra



Satyavathi



Archana Patil

Savita Sethi



Savitri Devi



Seema Agarwal



Shachidevi Sannabhadti



Sharmila Deshmukh



Shashi Gupta

गीता विचक्षण साधक सूची





Shashi Goyal



Shilpa Kabra



Shilpa Rathi



Shubhangi Dixit



Smritikana Banerjee



Sonali mahawar



Soniya Vijay



Suchitra Bhattacharya



Sudhir Chati



Sujata Sawant



Sundarbai Ahire



Sunita Bhatter



Sunitha Somani



Suresh Borate



Sureshchandra Gandhi



Suryakumari Kotagiri



Susheel Kumar Thakur



Sushila Lahoti



Suvarna Khanwalkar



Swarup Halder



Sweta Atal



Thonongi Geetha



Uday Bhobe



Uddhav Jawale

गीता विचक्षण साधक सूची





Uma Singh



Urmila Agarwal



Usha Mahajan

Usha Bhagavatula



Usha Subramanian



V V Laxmi



Vaishali Potdar



Vandana Pawar



Varsha Polawar



Varsha Kasat



Vasudha Maroo



Vidya Bhalerao



Vidyalakshmi



Vijay Balsara



Vijaya Chavdhari



Vijayashri R



Vinod Agarwal



Vishnukanta Baheti



Yashoda R Bhat



आँकड़ों की नज़र में

Geeta Sewi Volunteers across the globe 12,000

Registered Participants from 181 Countries 1,019,560

Geeta Classes Conducted yet 618175

EXTRA CLASSES

Gīta Guñjan - 230
Gīta Jijñasu - 136
Gīta Pāthak - 239
Gīta Pathik - 206
Gīta Vratī - 150

TOTAL PASSED IN EXAMINATIONS

Gīta Jijñasu - 28399
Gīta Pāthak - 8975
Gīta Pathik - 2576
Gīta Vratī - 1372

GRAMMAR SESSIONS

204 Session in 10 languages

TOTAL VIVECHAN SESSIONS

Hindi - 1002
English – 519





LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

LearnGeeta
Now on APP

ANDROID APP
https://bitly/LGand1

IPHONE APP
https://bitly/LGiOs1

WEBSITE
https://app.learngeeta.com



https://www.learngeeta.com

https://youtube.com/@GeetaPariwar

https://facebook.com/geetaparivar

https://mobile.twitter.com/Learn_Geeta

https://instagram.com/geetaparivar/

www.geetapariwar.org
learngeeta.com

+91 2425 222299
+91 2425 225011

All rights reserved,
Geeta Pariwar, Sangamner
Maharashtra-433605